Ph.D THESIS

"महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का अनुशीलन"

MAHABHARAT PAR ADHARIT NARENDRA KOHLI KE UPANYASOM KA ANUSHEELAN

Thesis Submitted to

Cochin University of Science and Technology

For the award of the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

HINDI

under the Faculty of Humanities

By

HELEN MARY A. J

Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Kochi - 682 022

November 2017

"महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का अनुशीलन"

MAHABHARAT PAR ADHARIT NARENDRA KOHLI KE UPANYASOM KA ANUSHEELAN

Thesis Submitted to

Cochin University of Science and Technology

For the award of the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

HINDI

under the Faculty of Humanities

By

HELEN MARY A. J

Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Kochi - 682 022

November 2017

DECLARATION

I hereby declare that the thesis entitled **"MAHABHARAT PAR ADHARIT NARENDRA KOHLI KE UPANYASOM KA ANUSHEELAN"** is the outsome of the original work done by me under, and thw work did not form part of any dissertation submitted for the award of any degree, diploma, associateship, or any other title or recongnition from any university or institution.

Department of Hindi
Cochin University of
Science and Technology
Kochi - 682 022

HELEN MARY A. J
Research Scholar

Place: Cochin

Date : / /2017

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE & TECHNOLOGY

Certificate

This is to certify that the thesis entitled **"MAHABHARAT PAR ADHARIT NARENDRA KOHLI KE UPANYASOM KA ANUSHEELAN"** is a bonafide record of research work carried by **Mrs. Helen Mary A. J.** under my supervision for Ph.D (Doctor of Philosophy) Degree and no part of thesis has hitherto been submitted for a degree in any university. All the relevant corrections and modifications suggested by the audience during the pre-synopsis seminar and recommended by the Doctoral committee of the candidate has been incorporated in the thesis.

Department of Hindi
Cochin University of
Science & Technology
Kochi - 682 022

Dr. N.G. Devaki
Supervising Teacher

Place: Cochin

Date : / /2017

भूमिका

भूमिका

समकालीन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नरेन्द्र कोहली अपनी ही कोटि के विलक्षण लेखक हैं। समाज के सभी अत्याचारों, अंतर्विरोधों और कुरीतियों के खिलाफ वे अपनी तूलिका से प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं। उनके उपन्यासों की विशेषता यह है कि ज़्यादातर उपन्यास पौराणिक इतिवृत्तों पर आधारित है। आधुनिक जीवन में मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में और इन मूल्यों को लोगों के मन में बरकरार रखने केलिए उनकी रचनाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होती हैं।

'महासमर' की पृष्ठभूमि 'महाभारत' है। महाभारत कथाएँ सर्वथा बहुचर्चित एवं मूल्यवान रही है। मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में महाभारत कथाओं की अहम भूमिका है। संस्कृत काव्य होने के कारण आम जनता को अन मूल्यों को समझने में दिक्कत होना स्वाभाविक है। इस संदर्भ में एक ऐसे माध्यम की ज़रूरत है जिसके द्वारा आम जनता उन विचारों को समझ सके। इस दृष्टि से देखें तो उपन्यास ही ऐसी लोकप्रिय विधा है जिसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान आसानी से हो सकता है। कोहलीजी ने इस आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए महाभारत का सृजन नए संदर्भ में किया है। 'महासमर' में उन्होंने पौराणिक संदर्भों को

समकालीन समय के साथ जोडने की कोशिश भी की है। समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत विषय काफी प्रासंगिक है। **'महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का अनुशीलन'** इसी उद्देश्य से किया हुआ एक विनम्र प्रयास है। श्री नरेन्द्र कोहली जी के उपन्यासों के इस पहलू पर अबतक विशेष अध्ययन संपन्न नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध विषय की समग्रता को ध्यान में रखते हुए शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

पहला अध्याय **'नरेन्द्र कोहली: व्यक्तित्व एवं रचना संसार'** पर केन्द्रित है। इस अध्याय में नरेन्द्र कोहली के जन्म और जीवन संबंधी संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया गया है। नरेन्द्र कोहली की बहुमुखी प्रतिभा एवं प्रखर व्यक्तित्व संबंधी उपलब्ध तथ्यों का प्रतिपादन किया गया है। इसी अध्याय में कोहलीजी के अब तक प्रकासित साहित्य का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। उनके विराट एवं कर्मठ जीवन को उनकी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने की कोशिश की गई है। उनकी कृतियाँ आज के खोखले जीवनादर्श, व्यर्थता, एवं मिथ्या मान्यताओं को प्रदर्शित करती है। इस अध्याय में कोहलीजी के पौराणिक उपन्यासों का वस्तुगत परिचय प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पौराणिकता, मिथकीयता जैसी बातें पर कोहलीजी के विचारों पर प्रकाश डालते का प्रयास

भी किया गया है। किसी भी साहित्यकार की रचनाओं का अध्ययन करने से पूर्व उस साहित्यकार के व्यक्तित्व से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि साहित्यकार के व्यक्तित्व की छाया उनकी रचनाओं पर पडती है। उनके जीवन में आए उतार-चढाव तो उनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित है।

दूसरा अध्याय है **'महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य'।** इस अध्याय में 'महासमर' उपन्यास शृंखला की सामाजिक परिस्थितियाँ परखने की कोशिश है। महाभारतकालीन सामाजिक परिवेश में पारिवारिक विघटन, पिता-पुत्र के तनावग्रस्त संबंध, दो पीढ़ियों का वैचारिक संघर्ष, वृद्धों की समस्या, अनाथ परित्यक्त बालक, सामाजिक शोषण, गरीबी, वर्गभेद, बेरोज़गारी, प्रदूषण, हिंसा, नैतिक मूल्यों का पतन आदि समस्यामूलक तत्वों का चित्रण कोहलीजी ने समकालीन समाज को केन्द्र में रखकर किया है। सामाजिक परिवेश में समकालीन बोध इस अध्याय का केन्द्रबिंदु है। भारतीय समाज में अराजकता, अव्यवस्था, छल, पाखण्ड, अनैतिकता, अन्याय, शोषण, अत्याचार आदि अनेकानेक विसंगतियाँ पैदा होती है। सचेत और प्रतिभा संपन्न साहित्यकार नरेन्द्र कोहली के मन पर इसका गहरा प्रभाव पडा। उन्होंने पौराणिक कथ्यों और पात्रों को आधार बनाकर युगीन

समाज की अनेकानेक विद्रुपताओं को चित्रिच करने का सफल प्रयत्न किया है।

तीसरे अध्याय है **'महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य'**। इस अध्याय में 'महासमर' में अभिव्यक्त सांस्कृतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। साहित्यकार खासकर उपन्यासकार अपनी कथा-परिधि में किसी एक युग के प्रदेश-विशेष को या समाज विशेष को जीवंत करने की कोशिश करता है। उस समाज विशेष की सामाजिक या राजनीतिक समस्याओं का वर्णन करते समय उप्यासकार उसके सांस्कृतिक जीवन की उपेक्षा नहीं कर सकता है। वे उस समाज की विभिन्न जातियों एवं उनके रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, संगीत, कला, शिक्षा, साहित्य, धर्म आदि अनेकानेक पहलुओं का चित्रांकन करते हैं, उनसे संबंधित मान्यताओं और समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं। इस अध्याय के अंतर्गत 'महासमर' में चित्रित शिक्षा प्रणाली, लोगों का रहन-सहन, पर्व त्योहार आदि का विश्लेषण किया गया है। साथ ही संस्कृति के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की कलाएँ, वेशभूषा, खानपान, आचार-विचार, पर्व, त्योहार आदि से संबंधित तथ्यों का अन्वेषण किया गया है।

चौथे अध्याय है **'महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य'**। इस अध्यायम में 'महासमर' में चित्रित राजनीति के विभिन्न पहलुओं को विश्लेषित करने का विनम्र प्रयास किया गया है। साथ ही सत्तालोलुपता, सत्ता प्राप्ति के बाद सत्ता का मद, सत्ता एवं संपत्ति का दुरुपयोग, राजनीतिक संधियाँ एवं षड्यंत्र, जनकल्याण की विलुप्त भावना आदि संदर्भों पर विचार किया गया है।

पाँचवाँ अध्याय है **'महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का शैल्पिक विश्लेषण'**। इस अध्याय में 'महासमर' की भाषा और शिल्प संबंधी विशेषताओं का अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। पौराणिक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक घटनाओं के विश्लेषण करने में तथा उन्हें युगीन संदर्भों से जोडने में कोहलीजी की भाषा काफी महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। उनकी भाषा सरल, सहज और गतिशील तो है। साथ ही कवित्व, अलंकारिकता, व्यंगात्मकता, प्रतीकात्मकता जैसी विशेषताओं से भी युक्त है। उन्होंने अपने उपन्यासों में यथावसर वर्णनात्मक, विवरणात्मक एवं नाटकीय शैलियों का प्रयोग किया है। इस प्रकार कोहलीजी की भाषागत एवं शिल्पगत विशेषताओं का अनुशीलन इस अध्याय का प्रमुख प्रतिपाद्य है।

इसके बाद **'उपसंहार'** है। इसमें प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। नरेन्द्र कोहली की औपन्यासिक उपलब्धियों की चर्चा करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक पहलुओं का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया है।

परिशिष्ट में नरेन्द्र कोहली जी के साथ शोधार्थिनी का साक्षात्कार हुआ उसका संक्षिप्तरूप प्रस्तुत है। अंत में उन सभी ग्रंथों एवं पत्रिकाओं की सूची दी गई है जिनका पूरा उपयोग शोधार्थिनी ने शोधकार्य में किया है।

सविनय

हेलन मेरी ए.जे

शोध छात्रा,

हिन्दी विभाग

कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

कोच्चिन - 682 022

तारीख : / /2017

कृतज्ञता ज्ञापन

कोई भी कार्य स्वजनों के सहयोग एवं आशीर्वाद के बिना संपन्न नहीं हो सकता। प्रस्तुत शोध विषय पर अध्ययन करते समय विषय संबंधी सुझाव देने तथा सामग्री उपलब्ध कराने में गुरुजनों तथा मित्रों का महत्वपूर्म सहयोग मुझे पल पल पर प्राप्त हुआ, साथ ही परिवार के सदस्यों का स्नेह, आशीर्वाद तथा समय-समय पर किए जानेवाले उत्साहवर्द्धन उन सबका आभार व्यक्त किए बिना आगे बढ़ जाना संभव नहीं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध संबंधी कठिनाइयों का निवारण करने में निर्देशक महोदया डॉ. देवकी एन.जी ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। इन्होंने विषय चयन से लेकर कार्य की संपूर्णता तक पल पल में मेरी संशयों को दूर किया। इनके अमूल्य सहयोग को तहे दिल से मैं आभार प्रकट करती हूँ।

डॉक्टरल कमिटि के विशेषज्ञ डॉ. आर. शशिधरन के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। इन्होंने भी मेरे शोधकार्य की सफलता के लिए प्रयत्न किया है।

हिन्दी विभाग के सभी अध्यापकों के सलाह एवं सहयोग के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मैं उन समस्त ज्ञात-अज्ञात लेखकों के प्रति आभारी हूँ जिनकी पुस्तकों से मुझे शोध सामग्री मिली है।

विभाग के मेरे प्रिय मित्रों को भी मैं याद करती हूँ- उनके स्नेह, प्रोत्साहन एवं सुझाव केलिए मैं उन लोगों से विशेष आभारी हूँ।

शोध सामग्री एकत्रित करने में कोच्ची विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पुस्तकालय का योगदान महत्वपूर्ण है। मैं यहाँ के कर्मचारियों के सहयोगपूर्ण व्यवहार हेतु उनका आभारी हूँ।

मेरे परिवार के सभी सदस्यों के सामने नतमस्तक हूँ जिनकी कृपा से ही मैं यहाँ तक पहुँची हूँ। उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में सर्वोपरी मैं उस सर्वेश्वर के प्रति आभारी हुँ जिनकी कृपा से यह काम सही वक्त पर पूरा हुआ।

सविनय

हेलन मेरी ए.जे

शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोच्चिन - 682 022

तारीख :

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय एक 1-40

नरेन्द्र कोहलीः व्यक्तित्व एवं रचना संसार

1.1 नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्व

1.2 नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.3 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासेतर कृतित्वः संक्षिप्त परिचय

1.4 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासः एक विहंगावलोककन

1.5 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथकीय परिवेश

1.5.1 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का मिथक वैशिष्ट्य

1.5.2 'महासमर' में मिथक प्रयोगगों की मौलिकता

1.5.3 नरेन्द कोहली के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथक की युगीन चेतना

1.6 महाभारत कथा के संदर्भ में नरेन्द्र कोहली का समकालीन बोध

1.7 निष्कर्ष

अध्याय दो 41-89

महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

2.1 प्रस्तावना

2.2. 'महासमर' में चित्रित सामाजिक मूल्यों की स्थिति

2.3 सामाजिक वैषम्य, शोषण तथा अत्याचार

2.4 महाभारतकालीन वर्णव्यवस्था और 'महासमर'

2.5 'महासमर' में चित्रित न्याय विधान

2.6 सामाजिक प्रतिष्ठा और दंभ

2.7 नारी का सामाजिक शोषण एवं नारी दुर्दशा

2.8 नारी का शारीरिक शोषण और अत्याचार

2.9. नारी उपहार की वस्तु

2.10 दहेजप्रथा और विवाहप्रथा

2.11 नारी का विद्रोहपूर्ण स्वर

2.12 पारिवारिक विघटन

2.13 परिवारों में वृद्धों की समस्या

2.14 अनाथ परित्यक्त बालक

2.15 निरक्षरता

2.16 मदिरापन

2.17 बेरोज़गारी

2.18 पर्यावरण-प्रदूषण

2.19 निष्कर्ष

अध्याय तीन 90-127

महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

3.1 प्रस्तावना
3.2 संस्कृतिः स्वरूप एवं अवधारणा
3.3 'महासमर' में अभिव्यक्त सांस्कृतिक वैविध्य
3.3.1 सामाजिक संस्कृति
शिक्षा, रहन-सहन, वेशभूषा
खान-पान, आचार अनुष्ठान, पर्व - त्योहार
3.3.2 लोक संस्कृति
3.3.3 कला
वास्तुकला, चित्रकला, नृत्यकला, संगीत कला
3.3.4 गीता का उपदेश एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य
3.4 निष्कर्ष

अध्याय चार 128-172

महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य

4.1 प्रस्तावना
4.2 'महासमर' में राजनीति का स्वरूप

4.3 सत्ता का मद एवं सत्ता लोलुपता
4.4 कूटनीति
4.5 राजनीतिक अपराधीकरण
4.6 राजनीतिक दायित्वहीनता
4.7 राजनीतिक बदचलन
4.8 अवसरवादिता
4.9 ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिहिंसा
4.10 झूठा राजकीय अहंकार
4.11 अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का प्रभाव
4.12 युद्ध की विभीषिका
4.13 राजनीतिक संधियाँ एवं षड्यंत्र
4.14 जनकल्याण की विलुप्त भावना
4.15 राजनीति और नारी
4.16 कालाबाज़ारी
4.17 निष्कर्ष

अध्याय पाँच 173-203

महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का शैल्पिक विश्लेषण

5.1 प्रस्तावना
5.2 'महासमर' की भाषा का स्वरूप

5.2.1 'महासमर' में प्रयुक्त शब्दों की विशेषताएँ

5.2.2 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

5.2.3 'महासमर' में भाषा के कलात्मक प्रयोग

5.2.3.1 काव्यात्मक भाषा

5.2.3.2 'महासमर' में अलंकारों का प्रयोग

5.2.3.3 'महासमर' में शब्दशक्तियों-अभिधा, लक्षण एवं व्यंजना - का प्रयोग

5.2.3.4 'महासमर' में प्रतीकों का प्रयोग

5.2.3.5 'महासमर' में बिम्बों का प्रयोग

5.3 'महासमर' में प्रयुक्त शैलियाँ

5.4 निष्कर्ष

उपसंहार 204-210

परिशिष्ट 211-216

संदर्भ ग्रन्थ सूची 217-221

अध्याय एक

नरेन्द्र कोहली: व्यक्तित्व एवं रचना संसार

आधुनिक युग तो गद्य का युग है। उपन्यास वास्तव में आधुनिक युग का महाकाव्य है, जिसमें मानव - जीवन और मानव चरित्र प्रस्तुत किया जाता है। आज की युगचेतना इतनी संघर्षमय और असाधारण हो गई है जिसके फलस्वरूप उसकी अभिव्यक्ति केलिए उपन्यास ही उचित माध्यम है। उपन्यास में जीवन की व्यापक झाँकी देखने को मिलती है साथ ही उससे हमें शिक्षा भी मिलती है। उपन्यास संपूर्ण जीवन का यथार्थ चित्रण करता है।

नरेन्द्र कोहली आज के युग के जानेमाने कथाकार, नाटककार, निबंधकार, व्यग्यकार और साहित्य के गंभीर अध्येता हैं। समय के साथ-साथ उनका लेखन अपने आप में विशिष्ट बनता गया है। उनकी कृतियाँ आज का खोखला जीनवनादर्श, व्यर्थता और मिथ्या मान्यताओं को प्रदर्शित करती है।

1.1 नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्व

किसी भी साहित्यकार की रचनाओं का अध्ययन करने से पूर्व उस साहित्यकार के व्यक्तित्व से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि साहित्यकार के व्यक्तित्व की छाप उनकी रचनाओं पर पडती है। कोई भी साहित्यकार अपने परिवेश तथा युग के प्रभाव से नहीं बच सकता। उसके जीवन और व्यक्तित्व का विकास

समाज के भीतर रहकर ही होता है। उनके जीवन में आए उतार-चढाव उनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित होते है।

नरेन्द्र कोहली का जन्म 6 जनवरी सन् 1940 को स्यालकोट (पंजाव) में हुआ। स्यालकोट नगर अब पाकिस्तान में है। उनकी माता का नाम विद्यावती था और उनके पिता का नाम परमानंद कोहली था।

नरेन्द्र कोहली की शिक्षा का आरंभ पाँच-छह वर्ष की अवस्था में देवसमाज हाईस्कूल लाहौर में हुआ। उसके पश्चात कुछ महीने स्यालकोट के गंडसिंह हाईस्कूल में भी शिक्षा पायी। सन् 1947 में देश के विभाजन के पश्चात उनका परिवार जमशेदपुर (बिहार) चला आया। यहाँ तीसरी कक्षा से पढाई आरंभ हुई। चौथी से सातवीं कक्षा (1949-1953) तक की शिक्षा न्यू मिडिल इंग्लिश स्कूल में हुई। आठवीं से ग्यारहवीं कक्षा (1953-1957) की पढाई एम.पी.एम हाईस्कूल, जमशेदपुर में हुई। अब तक की सारी शिक्षा का माध्यम उर्दू भाषा ही था।

उच्च शिक्षा केलिए जमशेदपुर के ओपरेटिव कॉलेज में प्रवेश लिया। बी.ए में अंग्रेज़ी के साथ दर्शनशास्त्र और हिन्दी साहित्य को चुन लिया था। सन् 1961 में जमशेदपुर के ऑपरेटिव

कॉलेज से बी.ए कर एम. ए की शिक्षा केलिए दिल्ली चले आये। सन् 1963 में रामजस कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) से हिन्दी साहित्य में एम.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी विश्वविद्यालय से सन् 1970 में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की।

सन् 1965 में कोहलीजी का विवाह हुआ। पत्नी डॉ मधुरिमा कोहली दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए, पीएच.डी है। पहली पुत्री संचिता केवल चार महीने ही जीवित रही। सन् 1967 दिसंबर में जुडवाँ संतानों-कीर्तिकेय और सुरभी का जन्म हुआ। सुरभी केवल चौबीस दिनों की आयु लेकर आयी थी। कीर्तिकेय दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए, एम फिल कर रामलाल आनंद (सांध्य) कॉलेज, दिल्ली में अर्थशास्त्र पढा रहे हैं। पुत्रवधु वंदना चक्षुविशेषज्ञ हैं। छोटा पुत्र अगस्त्य का जन्म सन् 1975 में हुआ। वे दिल्ली के सरदार पटेल विध्यालय से उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर इलिनॉय इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी शिकागो में यांत्रिकी की शिक्षा केलिए चले गये। अब सियाटल (संयुक्त राज्य अमेरिका) में नेटवर्क अभियंता के रूप में कार्यरत है।

1.2 नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

नरेन्द्र कोहली हिन्दी साहित्य जगत् के अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी है। उनके व्यक्तित्व में गंभीर एवं मृदु स्वभाव का सम्मिश्रण है। कोहली स्वभाव से विनम्र पेशे से अध्यापक, कर्म से साहित्यकार, मिजाज से गंभीर और विचार से शोषितों के प्रति सहानुभूति रखते है। वे पाठकों के प्रति एक शिक्षक का नाता बराबर निभाता है।

कोहली पूर्ण रूप से समाज में घुल-मिलकर लिखने के स्वभाव के हैं। वे जीवन में प्राप्त अनेक प्रकार के अनुभवों की पूँजी को साहित्यिक सामग्री के रूप में प्रयोग करने की क्षमता रखते हैं। कोहली जी हर काम को यथासमय ठीक समय पर करने के इच्छुक हैं।

1.3 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासेतर कृतित्वः संक्षिप्त परिचय

उपन्यासेतर क्षेत्र में कहानी, नाटक, व्यंग्य रचनायें, संस्मरण, आलोचना जैसी विधावों में उन्होंने लेखनी चलाई है।

कहानी संग्रह

नरेन्द्र कोहली के नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। वे हैं 'परिणति', 'कहानी का अभाव', 'दृष्टि देश में एकाएक,' 'नामक का कैदी', निचले फ्लैट में', नरेन्द्र कोहली की कहानियाँ', 'संचित

भूख', 'मेरी तेरह कहानियाँ', 'समग्र कहानियाँ भाग 1, भाग 2' आदि।

नरेन्द्र कोहली के आरंभिक दस वर्षों की रचनाओं में से चुनी हुई कहानियों का पहला संग्रह है 'परिणति'। सन् 1969 में इसका प्रकाशन हुआ। जीवन के झूठ और रोमांस को तीखी कलम से छील-छीलकर यथार्थ जीवन को उकरनेवाली कहानियाँ इस कहानी संग्रह में संकलित है।

'कहानी का अभाव' लेखक की आरंभिक कहानियाँ है जिनमें किशोर मन के प्रति खुलता हुआ संसार बहुत रोचक ढंग से चित्रित हुआ है। 'दृष्टि देश में एकाएक का प्रकाशन सन् 1979 में हुआ। सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं के प्रति लेखक का आक्रोश इस कहानी में दृष्टिगोचर है।

सन् 1967-68 के दौरान लिखि गयी कुछ महत्वपूर्ण कहानियों का संकलन है 'नमक का कैदी'। इसका प्रकाशन सन् 1980 में हुआ। स्वार्थपरक एवं उपयोगितावादी दृष्टिकोण रखनेवाले वर्तमान युग में मूल्यों और सिद्धांतों का इच्छुक मनुष्य कैसे अव्यवहारिक और असहाय हो जाता है इसकी चित्रण इन कहानियों का उद्देश्य है।

निचले फ्लैट में' कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 1984 में हुआ। इसमें संकलित कहानियाँ समाज में बढती हुई अमानवीयता के चित्र प्रस्तुत करती है। शहरी संस्कृति की कृत्रिमता और दम तोडते हुए संबंधों के खोखलेपन को इन कहानियों में उजागर करने का प्रयास है।

छह लंबी और औपन्यासिक कहानियों का पठनीय और आकर्षक संकलन है 'नरेन्द्र कोहली की कहानियाँ' नामक कहानी संग्रह। इसका प्रकाशन सन् 1984 में हुआ है। विभिन्न सामाजिक एवं पारिवारिक विषयों को स्पर्श करती हुई कहानियों का यहाँ संग्रह अब उपलब्ध नहीं है। इसकी सामग्री 'समग्र कहानियाँ' श्रृंखला में सम्मिलित कर दी गई है।

'संचित भूख' सन् 1969-1975 की अवधि में लिखी गई कहानियाँ है। इसका प्रकाशन सन् 1985 में हुआ। इन कहानियों में जनसामान्य के मनोविज्ञान के साथ-साथ प्रशासन की क्रूरता तथा परिस्थितियों द्वारा प्रताड़ित लोगों की असहायता प्रमुख है। इस कहानी संग्रह की सामग्री 'समग्र कहानियाँ' श्रृंखला में सम्मिलित कर दी गई है। 'मेरी तेरह कहानियाँ' में विभिन्न समस्याओं और भावनाओं पर लेखक ने कलम चलायी है।

नरेन्द्र कोहली द्वारा लिखित सभी कहानियों 'समग्र कहानियाँ भाग 1, भाग 2', में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत कृति का प्रकाशन सन् 1992 में हुआ।

नाटक

नरेन्द्र कोहली के प्रमुख नाटक है - शंबूक की हत्या ', 'निर्णय रुका हुआ', 'हत्यारे', 'गारे की दीवार', 'किष्किंधा' आदि।

शंबूक की हत्या' नाटक उपन्यास के रूप में ही लिखा गया था, किंतु इसकी सामग्री नाटक विधा के अनुरूप होने के कारण इसे नाटक का रूप दिया गया है। नरेन्द्र कोहली द्वारा संपादित पत्रिका 'अतिमर्श' के फरवरी-अप्रैल सन् 1974 के अंक में यह पहली बार प्रकाशित हुआ।

'निर्णय रुका हुआ' एक साधारण परिवार की इच्छाओं आकांक्षाओं की कहानी है, किंतु जैसे-जैसे नाटक आगे बढता है परत दर परत इस देश की जडों में समाया हुआ भ्रष्टाचार उद्घाटित होता जाता है। सामान्य जन ईमानदारी से अपनी सीधी-सच्ची राह पर चलें या सुख सुविधा पाने केलिए भ्रष्टाचार की दलदलवाला सुगम मार्ग अपना लें यह द्वंद्व समाज में अभी भी चल रहा है।

इस नाटक में यही दर्शाया गया है कि सामान्य जन सीधी-

सच्ची राह का समर्थक है, किंतु अपने मार्ग में खडी विघ्न-बाधाओं से टकरा जाने का निश्चय अभी कर नहीं पा रहा है। इसलिए निर्णय अभी स्थगित है।

हत्या की एक घटना 'हत्यारे' नाटक में समाहित है। यह नाटक मानव-समाज के संदर्भ में अनेक मौलिक प्रश्नों का साक्षात्कार कराता चलता है। हत्याएँ केवल अस्त्रों से ही नहीं होती, बल्की हत्याओं के अनेक रूप है और हत्यारों के भी। 'हत्यारे' भारतीय समाज के अनेक आयामों को इतनी यथार्थता से उद्‌घाटित करता है कि दर्शन दंग रह जाते हैं।

'गारे की दीवार' नाटक का केन्द्रबिन्दु धन है। समाज में धन का महत्व बहुत बढा है। धन के महत्व के अनुपात में व्यक्ति में अहंकार भी बढा है। अहंकार ने प्रदर्शनप्रियता और ईर्ष्या-द्वेष को प्रोत्साहित किया है और क्रमशः यह खेल खतरनाक होता गया है। यह अपराधवृत्ति परिवार, समाज और देश तीनों को ही खोखला कर रही है। कोहलीजी ने इन तमाम समस्याओं को इस नाटक में दर्शाया है।

'किष्किंधा' कृति का घटनास्थल किष्किंधा नगरी है और दो एक साधारण काल्पनिक पात्रों के सिवाय सारे पात्र भी रामकथा के

परंपरागत और परिचित पात्र है। फिर भी यह नायक हमारे युग की गंभीर समसामयिक समस्याओं से परिपूर्ण विचारोत्तेजक नाटक है। 'अगस्त्य कथा' नाटक में ऋषि अगस्त्य की कथा है जिन्हंने समाजविरोधी अमानवीय तत्वों से स्वयं लडने तथा समाज निर्माण के कार्य केलिए किसी राजशक्ति का मुँह ताकने के स्थान पर स्वयं ही उन समस्याओं से जूझने की ठानी। इस नाटक की और एक विशेषता यह है कि इसमें रंगसज्जा की कोई अपेक्षा नहीं है। बिना किसी प्रकार की रंगसज्जा के भी पूर्ण सफलता से इसका मंचन किया जा सकता है।

व्यंग्य रचनाएँ

कोहली का उपन्यास लेखन जितना विशाल है, उतना ही उनका व्यंग्य लेखन भी विशाल है। वर्तमान जीवन की विकृतियों को कोहलीजी बडे तीखे और मार्मिक व्यंग्य टिप्पणियों के साथ व्यक्त करते हैं। कोहलीजी का व्यंग्य वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक परिस्थितियों पर संघर्ष करते हुए पाठक के दिल में एक प्रकार की चुभन छोड जाता है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में वर्तमान स्थितियों के प्रति कोहलीजी की जागरूकता और प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से दिखायी देती है।

कोहली जी की कुल 16 व्यंग्य रचनाएँ हैं । वे हैं - 1) 'एक और लाल तिकोन' 2) 'पाँच रचनाएँ' 6) 'आधुनिक लड़की की पीा 7) 'परेशानियाँ' 8) 'समग्र व्यंग्य'-1 9) 'आत्मा की पवित्रता 10) 'मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ 11) 'गणतंत्र का गणित' 12) 'समग्र व्यंग्य-2 देश के शुभ चिंतक' 13) 'समग्र व्यंग्य-3 त्राही त्राही' 14) 'समग्र व्यंग्य - 4 इशक एक शहर का' 15) 'समग्र व्यंग्य -5 रामलुभाया कहता है' 16) 'मेरे मुहल्ले के फूल'

संस्मरण

कोहलीजी अपने साहित्यिक यात्रा में 'संस्मरण' विधा में अपनी तूलिका चलायी है। इसमें प्रमुख है 'बाबा नागार्जुन' हिन्दी के जानेमाने सुप्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, समीक्षक, चिंतक, विचारक बाबा नागार्जुन के विषय में लिखित संस्मरणात्मक लंबा निबंध है। इस कृति का प्रकाशन सन् 1987 में हुआ है।

'स्मरामि' संस्मरण कुछ साहित्यिक और कुछ आत्मीय है। डॉ. नगेन्द्र. डॉ. सावित्री सिन्हा, जैनेन्द्र कुमार, नागार्जुन, शरद जोशी, लतीफ घोंगी, पांडेय बेचन शर्मा 'उग', अज्ञेय, आचार्य तुलसी के कुछ-कुछ रेखाचित्र तथा संस्मरण 'स्मरामि' में संकलित है। इस कृति का प्रकाशन सन् 2000 में हुआ है।

आलोचना

नरेन्द्र कोहली के प्रसिद्ध समीक्षात्मक ग्रंथ है 'प्रेमचन्द'। इसमें मुंशी प्रेमचंद को एक युग प्रवर्तक के रूप में चित्रित किया है। प्रेमचंद का साहित्यक परिवेश, उनके सिद्धांत, क्रांतिकारी विचारधारा आदि पर कोहली ने कलम चलायी है। इसमें संकलित निबंध हैं- (1) 'प्रेमचंद का महत्व, (2) 'प्रेमचंद और जनक्रांति', (3) 'प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धांत' आदि।

1.4 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासः एक विहंगावलोकन

नरेन्द्र कोहली अपने बचपन से कुछ कविताएँ लिखते रहे थे। आगे चलकर वे केवल कहानियाँ लिखने लगे और कविता पीछे छूट गई। इन्होंने एक कहानिकार के रूप में ख्याति प्राप्त की और वे उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त हुए। वे सन् 1972 से उपन्यास लिखते आ रहे हैं। उनके उपन्यासों हैं -'पुनरारंभ', 'आतंक', 'साथ सगा गया दुख', 'मेरा अपना संसार', 'दीक्षा', अवसर', संघर्ष की ओर', 'युद्ध' (दो भाग), 'जंगल की कहानी', अभिज्ञान' 'आत्मदान', न भूतो न भविष्यति', 'तोडो कारा तोडो', 'सैरंध्री', 'महासमर-5 (अंतराल), महासमर-6 (प्रच्छन्न), महासमर-7 (प्रत्यक्ष), महासमर-8 (निर्बंध)

'पुनरारंभ' नरेन्द्र कोहली का पहला उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1972 में हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में पंजाब के जनजीवन का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। उस पुरुष प्रधान समाज में भी तेजस्विनी और चरित्रवती नायिका अपने पति से बार-बार प्रताडित होकर उन कठोर परिस्थितियों में भी अपने संकल्प के आधार पर अपनी संतान के पालन-पोषण के सहारे अपने जीवन का पुनरारंभ करती है। इसकी कथा उनके पिता के जीवनानुभवों पर आधृत है।

आतंक' में कोहलीजी ने तीन परिवारों की कथा के माध्यम से परिवेश में फैले व्यापक आतंक का निर्भीक चित्रण किया है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1972 में हुआ है। संपूर्ण उपन्यास का सारांश यह है कि इस सारे आतंक के मूल में भ्रष्ट राजनीति तथा दुश्चरित्र सत्ताकर्मी ही है। यह अठाईस वर्ष पूर्व भारत के राजनीतिक और सामाजिक सत्य को प्रस्तुत करनेवाला सशक्त और साहसपूर्ण उपन्यास है यह।

सन् 1947 में लिखित 'साथ सहा गया दुख' में साधारण दांपत्य जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। सामाजिक और आर्थिक संघर्षों के बीच से गुज़रती कथा के माध्यम से लेखक पति-पत्नी के संबंधों को संघर्ष से उतार कर तदात्म्य के धरातल

पर लाते हैं। विवाह-विच्छेद की वकालत के इस युग में लेखक यहाँ स्थापित करते हैं कि एक साथ सहा गया दुख दंपती के जीवनभर के तादात्म्य का आधार बनाया जाता है। यह उपन्यास मध्यवर्गीय पति-पत्नी की सम व्यथा पर आधारित है।

'मेरा अपना संसार' का प्रकाशन सन् 1975 में हुआ। व्यक्तिगत और सामाजिक आर्थिक असफलताओं के बीच जीनेवाले दो नारी पात्रों की मार्मिक कहानियाँ जिनमें से एक क्रमशः भावात्मक आत्महत्या की ओर बढ रही है और दूसरी अपराध की ओर बढ रही है।

नरेन्द्र कोहली द्वारा लिखित रामकथा पर आधारित उपन्यास 'अभ्युदय' का पहला खंड है 'दीक्षा'। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1975 में हुआ है। रामकथा के विभिन्न प्रसंगों में से गुज़रते हुए लेखक विभिन्न राजनीतिक समस्याओं, जनसामान्य के शोषण, बुद्धिजीवियों के कर्तव्य, सामाज में नारी का स्थान, स्त्री-पुरुष संबंध, जाति और वर्ण की विभीषिकाओं, शासनाधिकारियों जैसे विषयों के संदर्भ में अत्यंत क्रांतिकारी विश्लेषण करता है और अपनी मान्यताओं के सहारे एक प्रख्यात कथा के पूर्णतः मौलिक और समकालीन बोध के साथ प्रस्तुत करते हैं।

'अवसर' उपन्यास 'अभ्युदय' का दूसरा खंड है। इसका प्रकाशन सन् 1976 में हुआ है। मूल कथा तो पौराणिक है, किंतु प्रस्तुत कृति सर्वथा समकालीन बोध का उपन्यास है जिसमें आधुनिक परिप्रेक्ष्य और मूल्यों-मानकों के आधार पर उस प्राचीन कथा के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है।

'संघर्ष की ओर' अभ्युदय का तीसरे खंड है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1978 में हुआ है। उपन्यास में आदिवासी जातियों के उत्थान व उनके शोषण के विभिन्न आयामों और शोषण के विरुद्ध जनसंगठन की समस्याओं का औपन्यासिक कलात्मक विवेचन किया गया है।

रामकथा पर आधारित उपन्यास श्रृंखला 'अभ्युदय' का चौथा और अंतिम भाग है 'युद्ध'। यह रामकथा के किष्किधाकांड, सुंदरकांड और लंकाकांड के आधार पर दो खंडों में लिखा गया बृहद् उपन्यास है।

'जंगल की कहानी का प्रकाशन सन् 1977 में हुआ है। नैसर्गिक संपत्ति, वनसंपदा, जंगलों का मनुष्य के जीवन में महत्व आदि का संबंध कथासूत्र के माध्यम से मनोरजक रूप में लेखक

ने प्रस्तुत किया है। पर्यावरण से जुडा हुआ यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है।

'अभिज्ञान' कृष्णा और सुदामा की प्रख्यात कथा पर आधारित पौराणिक दार्शनिक उपन्यास है जिसमें गीता के कर्म सिद्धांत की नयी, रोचक और औपन्यासिक व्याख्या की गई है। इसका प्रकाशन सन् 1981 में हुआ। नरेन्द्र कोहली ने कृष्ण-सुदामा के चरित्रों द्वारा कर्म-सिद्धांत की सहज स्थापना की गई है। यही उपन्यास की शक्ति है। कृष्ण-सुदामा की कथा को इस प्रकार सार्थक बन गया है।

'आत्मदान' साम्राट हर्षवर्धन के बडे भाई राज्यवर्धन के जीवन पर आधारित एक अनोखा और रोचक उपन्यास है। इसमें राज्यवर्धन के चरित्र के नए आयाम उद्‌घाटित करता है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1983 में हुआ है।

'न भूतो न भविष्यति' स्वामी विवेकानंद के जीवन के महत्वपूर्ण अंशों को लेकर लिखा गया है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 2004 में हुआ है। यह आकर्षक, बृहद और संपूर्ण उपन्यास है, जो किसी चलचित्र के समान आपकी आँखों के सामने घटनाओं का एक प्रवाह घटित करता है। स्वामिजी के जीवन के ऐसे महत्वपूर्ण प्रसंगों को रोचक उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करना सृजन जगत का एक चमत्कार है।

'तोडो कारा तोडो' स्वामी विवेकानंद की जीवनकथा पर आधृत है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 2008 में हुआ है। स्वामिजी का जीवन निकट अतीत की घटना है। उनके जीवन की सारी घटनाएँ सप्रमाण इतिहासांकित है। यहाँ उपन्यासकार केलिए अपनी कल्पना अथवा अपने चिंतन को आरोपित करने की सुविधा नहीं है। अपनी बात न कहकर उपन्यासकार को वही कहना होगा जो स्वामी विवेकानंद ने कहा था। अपने नायक के व्यक्तित्व और चिंतन में तादात्म्य ही उसकेलिए एकमात्र मार्ग है। इस उपन्यास के प्रत्येक पृष्ठ पर उपन्यासकार के अपने नायक के साथ तादात्म्य को देखकर हम चकित रह जाऐंगे।

इस उपन्यास के अभी छह खंड प्रकाशित हो चुके हैं। निकट भविष्य में इसके दो खंड और प्रकाशित होने की संभावना है। 'सैरंध्री' महाभारत के सशक्त नारीपात्र द्रौपदी पर आधारित उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 2010 में हुआ। नारी समस्या पर आधाररित उपन्यास है 'सैरंध्री'

महाभारत भारतीय चिंतन और भारतीय संस्कृति की अमूल्य थाती है। महाभारत कथा पर आधारित 'महासमर' उपन्यास श्रृंखला में समसामयिक सामाजिक तथ्यों को, समस्याओं को और मनुष्य की प्रवृत्तियों को उजागर करते हुए इस सत्य को भी उजागर करना

चाहते हैं कि न तो प्रकृति के नियम बदलते हैं न ही मनुष्य का मनोविज्ञान । 'महासमर' का पहला भाग है 'बंधन'। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1988 में हुआ है। इस खंड की कथा सत्यवती के हस्तिनापुर में आगमन से आरंभ होकर हस्तिनापुर से विदा होकर वेदव्यास के आश्रम में जाने तक चलती है। संपूर्ण उपन्यास 'महासमर' का नायक यद्यपि युधिष्ठिर है, तथापि इस के प्रमुख पात्र भीष्म और सत्यवती है।

'महासमर' का दूसरा भाग का शीर्षक 'अधिकार' है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1990 में हुआ है। 'अधिकार' की कहानी पांडवों के शतश्रृंग के आश्रम से हस्तिनापुर में आने से आरंभ होती है। अर्थात् पांडवों के शैशव से आरंभ होकर वारणावत के अग्निकांड पर समाप्त होती है। वस्तुतः यह खंड अधिकारों की व्याख्या, अधिकारों केलिए हस्तिनापुर में निरंतर होनेवाले षड्यंत्र, अधिकार को प्राप्त करने की तैयारी तथा संघर्ष की कथा है। राजनीति में अधिकार प्राप्त करने केलिए होनेवाली हिंसा तथा राजनीतिक त्रास की बोझ से दबे हुए असहाय लोगों की पीडा की कथा समानांतर रूप से चलती है। तमोगुण प्रधान राजनीति तथा तमोन्मुख रजोगुणी राजनीति का अंतर इसमें स्पष्ट होता है। एक ओर निर्लज्ज स्वार्थ और भोग तथा दूसरी ओर अनास्क्त धर्म

स्थापना का प्रयत्न। दोनों पक्ष आमने-सामने है। महाभारत की कथा में कृष्ण का प्रवेश भी इसी खंड नें हुआ है।

'कर्म' महासमर का तीसरा भाग है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1991 में हुआ है। इसकी कथा युधिष्ठिर के युवराज्याभिषेक के पश्चात की कथा है। इस उपन्यास में वाराणवत के अग्निकांड से लेकर द्रौपदी के स्वयंवर के पश्चात, एक सी के पाँच पुरुषों के साथ विवाह कर दिए जाने के पीछे क्या तर्क था? इस प्रश्न का उत्तर खोजने का लेखक ने अपनी विशिष्ट, तथ्यपरक, तर्कसंगत शैली में समुचित प्रयास किया है।

महाभारत की घटनाओं एवं पात्रों को इन उपन्यासों से मात्र उठाया ही नहीं गया है बल्कि उनके पीछे जो सच्चाइयाँ दब गयी थी उन्हें अनावृत भी किया गया है। कथा पात्रों में छिपे अर्थ का पुनःसृजन किया गया है। सबसे बडी बात, महाभारत के पात्रों के मानसिक अंतर्द्वन्द्व को गहराई से समकालीन बोध केलिए मूर्त किया है। चाहे वह कुंती का अंतर्द्वन्द्व हो या कर्ण का या भीष्म पितामह का। नरेन्द्र कोहली ने बहुत धैर्य एवं परिश्रम से एक पात्र की मानसिकता में प्रवेश कर उनका चित्रण किया है।

'धर्म' उपन्यास 'महासमर' का चौथा भाग है। इस उपन्यास

का प्रकाशन सन् 1993 में हुआ। इस खंड की कथा पांडवों को राज्य के रूप में मिले खांडवप्रस्थ से प्रारंभ होती है, जहाँ न कृषि है, न व्यापार। संपूर्ण क्षेत्र में अराजकता फैली हुई है। अपराधियों और महाशक्तियों की वाहनियाँ अपने षड्यंत्रों में लगी हुई है। ऐसे ही अनेक समस्याओं के मध्य से होकर गुज़रती है 'धर्म' की कथा। यह उपन्यास न केवल समस्याओं की गुत्थियाँ सुलझाता है, बल्कि उस युग का, उस युग के चरित्रों का तथा अपने धर्म का विश्लेषण भी करता है। और फिर भी यह एक मौलिक समकालीन उपन्यास है जिसमें हमारे समसामयिक समाज की धडकनें पूरी तरह विद्यमान हैं।

'अंतराल महासमर का यह पाँचवाँ खंड है, जो सन् 1995 में प्रकाशित हुआ। इस खंड में द्यूत में हराने के पश्चात् पांडवों के वनवास की कथा है। यादवों की राजनीति पांडवों का धर्म केलिए आग्रह तथा दुर्योधन की मदांधता संबंधी यह रचना पाठक के सम्मुख इस प्रख्यात कथा के नवीन आयाम उद्घाटित करती है। कथानक का ऐसा निर्माण चरित्रों की ऐसी पहचान, संवादों का ऐसा प्रवाह कथानक को समकालीन परिवेश से जोडता चलता है। सभी पात्र अपने आसपास की दुनिया के ही नज़र आते है।

प्रच्छन्न 'महासमर' का छठा भाग है। इसका प्रकाशन सन्

1997 में हुआ। इस उपन्यास में दो बातें सबसे अधिक ध्यान आकृष्ट करती है-एक तो राजनीति का अधिक से अधिक अपराधीकरण अथवा अपराधियों का सत्ता के केन्द्र में आ जाना और दूसरा कृष्णा के देवत्व का क्रमशः उद्‌घाटन। लेखक की आस्था अपनी पूर्व प्रबलता से अभिव्यक्त हो रही है। किंतु कृष्ण का देवत्व जिस रूप में उद्‌घाटित होता चलता है, उसकी तर्कशीलता और बौद्धिकता से कहीं कोई विरोध नहीं है। इस कला का वास्तविक रूप तो उपन्यास में यत्र-तत्र बिखरा पडा है।

महासमर का सातवां खंड है 'प्रत्यक्ष'। इस उपनयास में भीष्म पर्व की घटना है। युद्धभूमि पर अपने सामने पितामह, गुरु, बंधुओं को देखकर अर्जुन और युधिष्टिर शास्त्र नीचे रख देते है। लेकिन कृष्ण द्वारा गीता उपदेश किए जाने पर वे दोनों युद्ध करने केलिए प्रस्तुत होते है। इस उपन्यास का सबसे प्रमुख भाग है गीता प्रसंग।

आठ खंडों में प्रकाशित 'महासमर' का आठवाँ और अंतिम खंड है निर्बंध'। इसकी कथा 'द्रोणवर्व' से आरंभ होकर 'शांतिपर्व' तक व्याप्त है। कथा का अधिकांश भाग तो युद्ध क्षेत्र मं से होकर आगे बढ़ता है, किंतु यह युद्ध केवल शास्त्रों का युद्ध नहीं है। यह टहराहट मूल्यों और सिद्धांतों की भी है। इस खंड के साथ यह

उपन्यास श्रृंखला पूर्ण हुई जिसके लेखन में लेखक को पन्द्रह वर्ष लगे है। कदाचित् यह हिन्दी का सबसे बृहदाकार उपन्यास है जो रोचकता, पठनीयता और इस देश की परंपरा के गंभीर चिंतन को एक साथ समेटे हुए है।

इस उपन्यास श्रृंखला का पहला खंड है 'बंधन' और अंतिम खंड है 'निर्बंद्ध'। 'बंधन' भीष्म से आरंभ हुआ और इस प्रकार से 'निर्बंध' भीष्म पर ही जाकर समाप्त होता है। किंतु इस उपन्यास श्रृंखला के नायक भीष्म नहीं है। महाभारत की कथा के नायक है युधिष्ठिर। अलग-अलग प्रसंगों में एकाधिक पात्र नायक का महत्व अंगीकार करते दिखाई देते है। शांतिपर्व के अंत में भीष्म तो बंधनमुक्त हुए ही है, पांडवों के बंधन भी एक प्रकार से टूट गए हैं। उनके सारे बाहरी शत्रु मरे गए हैं। अपने संबंधियों और प्रियजनों में से अधिकांश को भी जीवनमुक्त होते उन्होंने देखा है। पांडवों केलिए भी माया का बंधन टूट गये है। वे खुली आँखों से इस जीवन और सृष्टि का वास्तविक रूप देख सकते है। अब वे उस मोड पर आ खडे हुए है, जहाँ वे स्वर्गारोहहण भी कर सकते है और संसारोहण भी। प्रत्येक चिंतनशील मनुष्य के जीवन में एक वह स्थल आता है जब उसका बाहरी महाभारत समाप्त हो जाता है और वह उच्चतर प्रश्नों के आमने - सामने आ खडा होता है।

पाठक को इसी मोड तक ले आता है 'महासमर' का यह अंतिम खंड 'निर्बंध'।

1.5 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथकीय परिवेश

आज का युग वैज्ञानिक सभ्यता का युग है। इस सभ्यता में साँस लेता हुआ मनुष्य भौतिकवाद की उत्कट लालसा के कारण अपने जातीय मूल्यों और मानवीय चेतना के गूढ सत्यों को तिरस्कृत कर चुका है। मानवीय चेतना के निगूढतम सत्यों की अनुगूँज मिथ के द्वार पुष्ट होती है।

मानवीय धर्म की रक्षा और अन्याय के विनाश के लिए समय-समय पर ऐसी शक्तियाँ अवतरित होती रही हैं जो बाह्य स्वरूप में राम, कृष्ण, जीसस, मुहम्मद नबी आदि नामों से पुकारी गई है। साहित्यकार ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों को आज के गिरते मूल्यों वाले संसार केलिए मिथक के रूप में चित्रित करके मानवीय सभ्यता का पुनःस्थापन करने केलिए कोशिश करते है।

समय की माँग और परिस्थिति के अनुसार साहित्यकार मिथकों के नित नूचन प्रयोग करता हि रहता है। मिथक आज के समाज और युग में महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। वर्तमान साहित्यकार भले ही मिथकों का अभिनव प्रयोग करता रहे, उसका उद्देश्य

मानवीय सभ्यता को उच्चता के शिखर पर ले जाना ही रहा है। आज भले ही वाल्मीकी कृत 'रामायण' एवं व्यास कृत 'महाभारत' अपने मिथक संदर्भों को लेकर विवादित हो जाएँ परंतु अपने युग और समय की माँग के अनुसार उसका सृजन सत्य और सार्थक है। शंभूनाथ जी के अनुसार "यह ठीक है कि हम वाल्मीकी के अध्यात्मिक राज्य या तुलसी के रामराज्य में विश्वास नहीं कर सकते लेकिन उस स्पप्न में विश्वास कर सकते है जो उन्होंने अपने काल की मनुष्यता की राह ढूँढते हुए मिथक की आँखों से देखा था।"[1] मिथक की सार्थकता उस युग में की नहीं आज की भी है।

वर्तमान युग का साहित्यकार पुराण कथा और अलौकिक चरित्रों को आधुनिक परिवेश देकर मिथकों में नूतन प्रयोग कर रहा है और उसका ऐसा करना सही भी है। आज का मनुष्य उससे तभी शिक्षा ग्रहण कर सकता है जब वह उसके तर्क की कसौटी पर खरा उतरता हो।

समकालीन उपन्यासकारों में नरेन्द्र कोहली एक ऐसा साहित्यकार है जिन्होंने पौराणिक इतिवृत्तों को अपने उपन्यास का केन्द्र विषय बनाया है। कोहली जी ने प्राचीन मिथक को समय सापेक्ष बनाकर आज के युगबोध के संदर्भ में प्रस्तुत कर सराहनीय कार्य किया है। आज के नेता लोगों के नैतिक पतन, मात्र कुर्सी की राजनीति,

1. शंभूनाथ - मिथक और आधुनिक कविता - भूमिका भाग

पल-पल बदलते राजनीतिक परिवेश, उनसे प्रभावित सामाजिक स्थितियाँ-ये सब बातें उनके उपन्यास में दृष्टव्य होते हैं। सत्ता परिवर्तन के साथ ही बदलते व्यक्तित्व और योग्यता के बजाय चाटुकारिता का उत्कर्ष एवं सत्ता से जुडे व्यक्तियों के महत्व पर किया गया व्यंग्य उनकी कृति में स्थान-स्थान पर दिखाई देता है। कोहली जी पुराण कथाओं की ऐसी व्याख्या करते चले जाते हैं जिसमें समय के लंबे अंतराल के बाद भी वर्तमान अपने को जुडा हुआ पाता है।

1.5.1 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का मिथक वैशिष्ट्य

कोहली जी के उपन्यासों की मुख्य विशेषता मिथक है। रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन एवं धार्मिक ग्रंथों के चरित्र एवं घटनाओं को आधुनिक संदर्भ देकर एक नये रूप में ढालकर कोहली जी ने जो सामग्री प्रस्तुत की है वह निश्चय ही सराहनीय है।

रामायण की संपूर्ण घटना पर आधारित है उनकी 'अभ्युदय' नामक उपन्यास शृंखला। 'अभ्युदय' के पाँच खंड हैं, वे हैं 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर', 'युद्ध' (दो भाग)। महाभारत पर आधारित उनकी उपन्यास शृंखला है 'महासमर'। 'महासमर' के आठ खंड हैं, वे हैं - 'बंधन', 'अधिकार', 'कर्म', 'धर्म', 'अंतराल',

'प्रच्छन्न', 'प्रत्यक्ष', 'निर्बंध'। इस उपन्यासों में कोहली जी ने घटनाओं को अपनी कल्पना का रंग देकर नए तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है। प्राचीन मिथकों को तोडकर युग की मानसिकता के अनुकूल उन्हें प्रस्तुत करने का जो कार्य लेखक ने किया है वह निस्संदेह सराहनीय है ।

रामकथा को आधुनिक संदर्भ देकर लिखना कोहलीजी की अपनी विशेषता रही है। आज के परिवेश की घटनाओं से उस युग की घटनाएँ भिन्न नहीं थी। सत्ता एवं वैभव, व्यक्ति को किस परिस्थिति तक अधम तथा अत्याचारी बना देता है इसका वर्णन कोहली जी ने अपने उपन्यासों में किया है। शक्तिशाली राष्ट्र के राजा एवं समर्थ और वैचारिक योग्यता रखनेवाले महर्षियों का परस्पर वैमनस्य तथा राजा का प्रजा के प्रति अनुत्तरदायित्व को कोहली जी ने प्रस्तुत किया है। राक्षसों का वर्णन लेख ने सींग व लंबे दाँतोंवाले विशालकाय के रूप में नहीं अपितु सत्ता-संपन्न एवं शक्तिशाली विलासी के रूप में किया है।

राम को अवतार के रूप में नहीं एक जन-नायक के रूप में चित्रित किया गया है। राम के अतिमानवीय और अवतारवाद की धारणा कोहली जी ने खंडित किया है। राम को राज्य व सत्ता का मोह त्याग कर वनों में जाना था। अपने युवराज्याभिषेक पर वे

प्रसन्न नहीं होते और जैसा ही कैकेयी उनके सामने अपने पूर्व प्रदत्त वरदानों का उल्लेख करती है वे शीघ्र ही वन जाने को सहर्ष तैयार हो जाता है। और शीघ्रतिशीघ्र अयोध्या से दूर होना चाहते हैं।

सीता को कोहलीजी ने एक दयनीय अबला के रूप में चित्रित नहीं किया। सीता तर्क करती है। वार्तालाप में भाग लेती है। राम के साथ-साथ वन-वन भटक कर जन जागृति का कार्य करती है। निषाद, भील तथा कोल जाति की स्त्रियों को संगठित करती है। उन्हें शस्त्र शिक्षा देती है और रावण को देख भयभीत नहीं होती वरन् मुक्ति केलिए उससे संघर्ष भी करती है।

इस तरह राम-कथा मात्र कल्पना न बनकर यथार्थ की भूमि पर लिखी। एक ऐतिहासिक पौराणिक कथा बन गयी है।

रामायण की तरह ही महाभारत जैसे विस्तृत ग्रंथ को भी कोहलीजी ने आधुनिक परिवेश में लिखा है। महाभारत की कथा यद्यपति रामायण की तरह अतिमानवीय और अविश्वसनीय तो नहीं है परंतु उसमें भी कई प्रसंग ऐसे हैं जिन पर सहज विश्वास नहीं होता है। कोहलीजी ने उन प्रसंगों को मात्र विश्वसनीयता ही नहीं दी है वरन् उन्हें राजनीतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आधार देते हुए आज का परिवेश भी दिया है।

महाभारत में भीष्म की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। 'महासमर' में कोहली जी ने भीष्म के चरित्र के कुछ ऐसे पहलुओं को उभारा है जो नए मिथकों की स्थापना कर भीष्म के व्यक्तित्व को अलग रूप में प्रस्तुत करते है। इसी तरह 'महासमर' के अन्य पात्रों के व्यक्तित्व से अतिमानवीय और अवतारवादी प्रसंगों को हटाकर उनके स्थान पर व्यावहारिक एवं यथार्थपरक तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। इससे कृष्ण की छवि एक अवतार की न होकर सामर्थ्यवान सक्षम व्यक्ति के रूप में उभरती है। कुंति अपने अतीत, वर्तमान एवं भविष्य से संघर्ष करती एक सहनशील व दृढ माँ और स्त्री के रूप में प्रस्तुत की गयी है। द्रौपदी अपने पिता की प्रतिज्ञा केलिए अपने संपूर्ण जीवन को समर्पित कर देती है और कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को सखा भाव तक ही सीमित कर देती है। महाभारत के पात्रों एवं घटनाओं का आधार लेकर आज के सामाजिक, राजनीतिक व नैतिक मूल्यों में आती गिरावट एवं विसंगतियों को प्रस्तुत करना इन मिथकों का वैशिष्ट्य ही कहा जाएगा।

1.5.2 'महासमर' में मिथक प्रयोगों की मौलिकता

कोहली जी ने 'महासमर' के मिथक प्रयोगों में ऐसी नवीनता और मौलिकता दिखाई है कि पाठकों को वह रहस्यमय न लगकर

सत्य और यथार्थ घटनाएँ प्रतीत होती है। महाभारत के समूचे प्रसंगों को ही लेखक ने विश्वसनीयता का कवच पहनाकर प्रस्तुत किया है।

कुंती के विवाह के अवसर पर स्वयंवर में कुंती द्वारा पांडु का चयन करने संबंधी घटना को कोहलीजी ने अलग तरह से प्रस्तुत किया है। कुंती पांडु का पिरचय प्राप्त करती है तो उसका मन अतीत में भटकने लगता है और अपने भविष्य के प्रति आशंकित कुंती हस्तिनापुर का नाम सुनकर ही पांडु से विवाह का निर्णय ले लेती है। हस्तिनापुर के राजप्रसाद में कानीन पुत्र का सम्मान हुआ है। हस्तिनापुर में वेदव्यास उतने ही सम्मानित हैं, जितने कि स्वयं देवव्रत भीष्म । हस्तिनापुर में किसी ने कानीन पुत्र केलिए सत्यवती का तिरस्कार नहीं किया है। कुंती अपने कानीन पुत्र को अधीरथ को सौंपा दिया था। अधीरथ हस्तिनापुर में ही है। पांडु से विवाह कर कुंती ने एक तरह से अपनी भविष्य तथा सम्मान सुरक्षित कर लिया था ताकि यदि भविष्य में कभी उसके अतीत एवं कानीन पुत्र के विषय में समाज को पता चला तो कोई उसे तिरस्कृत न कर सके क्योंकि हस्तिनापुर में सत्यवती के कानीन पुत्र वेदव्यास पहले से ही सम्मानित थे। यह कोहली जी की नितांत मौलिक कल्पना है।

द्रौपदी के विषय में भी कोहली जी ने नयी व्याख्या प्रस्तुत की है। महाभारत में ऐसे है कि द्रुपद निःसंतान थे। जब द्रोण ने अर्जुन द्वारा उन्हें पराजित किया उसने आधा राज्य छीन लिया तो द्रुपद ने स्वयं को अपमानित मान ब्राह्मणों के परामर्श से यज्ञ किया और उसी यज्ञ से कौरववंश और द्रोण के विनाश केलिए द्रौपदी व धृष्टधुम्न का जन्म हुआ। पर कोहली जी ने द्रुपद को निःसंतान नहीं माना है। द्रोण द्वारा अपमानित द्रुपद क्षुब्द हो उठते हैं तो द्रौपदी उन्हें धैर्य देती है और कहती है कि द्रुपद उसे और धृष्टधुम्न को अग्नि दीक्षित करें जिससे शत्रु दहन ही उनके लक्ष्य हो।

द्रौपदी के वस्त्र हरण एवं कृष्ण द्वारा उनकी रक्षा को भी कोहलीजी ने नए संदर्भों में प्रस्तुत किया है जो, उनकी अपनी मौलिक कल्पना है। जब द्रौपदी को सभा में उपस्थिति किसी भी व्यक्ति से सहायता की आशा नहीं रहती तो उसने कृष्ण का स्मरण किया है। कृष्ण का नाम सुनते ही दुशासन के सम्मुख इंद्रप्रस्थ की सभा घूम गई। कृष्ण ने अपनी तर्जनी पर सुदर्शन चक्र रखकर फेंका था और शिशुपाल का मस्तक कट कर भूमि पर जा गिरा था। और सहसा दुशासन को लगा उसके चारों ओर सुदर्शन चक्र ही सुदर्शन चक्र है। उसने द्रौपदी को छुटा दिया। यहाँ कोहलीजी ने कृष्ण के ईश्वर होने के मिथ को तोड नए संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

दुशासन कृष्ण के प्रभाव एवं शक्ति से भयभीत होकर गिर जाता है।

सूर्य के द्वारा प्रदत्त अक्षय पात्र के विषय में कोहलीजी के मान्यता सर्वथा मौलिक एवं नूतन है। युधिष्ठिर अपने परिवार एवं उनके साथ आये ब्राह्मण समुदाय के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था को लेकर चिंतित होते हैं और धौम्य मुनी से विचार विमर्श करते हैं तब धौम्य मुनी उन्हें सूर्य की महत्ता बताते हुए मंत्र देते है। सूर्य कोई एक पात्र लाकर नहीं देते वरन् धौम्य मुनी द्वारा यह सूत्र युधिष्ठिर को दिया जाता है कि अपने श्रम द्वारा हम वह अक्षय पात्र सूर्य से प्राप्त कर सकते हैं जो हमेशा भरा रहता है। इसके साथ ही गृहस्वामिनी द्वारा भोजन करने से पूर्व तक अक्षय पात्र के भरे रहने से इस बात पर विशेष जोर दिया गया है कि भारतीय संस्कृति में परिवार को समृद्धि पूर्ण बनाने में नारी के सहयोग का महत्वपूर्ण स्थान है तथा नारी द्वारा ही धान्य का सही उपयोग एवं पुरुषों के श्रम से सृष्टि चक्र के नियंता सूर्य द्वारा ऐसे अक्षय पात्र का निर्माण होता है जो कि परिवार को परिपूर्ण रखता है।

शिखंडी के विषय में मान्यता यह था कि वह पूर्व जन्म में अंबा थी जिसने भीष्म के विनाश की प्रतिज्ञा कर आत्महत्या कर लिया था। कोहलीजी ने शिखंडी के चरित्र को नए संदर्भ में प्रस्तुत

किया है। कोहलीजी ने शिखंडी को पूर्णतः नारी होने तथा बाद में शल्य चिकित्सा द्वारा पुरुष होने की घटना का उल्लेख किया है। आज भी विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि शल्य चिकित्सा द्वारा किसी भी स्त्री को पुरुष बनाया जाना काफी हद तक संभव हो गया है।

कोहलीजी ने 'महासमर' में उपकथाओं के रूप में कुछ मौलिक प्रसंगों को भी जोड दिया है ताकि उपन्यास में समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति हो जाए। उपन्यास में चित्रित समंग ग्वाले की उपकथा एवं उसका पारिवारिक प्रसंग कोहली जी की कल्पित मौलिक उद्‌भावना है। समंग दुर्योधन की गोशाला में काम करता है। समंग का पुत्र वृद्ध माता-पिता को वन में अकेले छोडकर हस्तिनापपुर में बहुत ही खुशी से रहते हैं। धन उसे माता-पिता से अधिक प्यारा है। समंग का पारिवारिक प्रसंग उपभोक्तवादी संस्कृति के कारण बदलते नैतिक मूल्यों का सशक्त दस्तावेज़ है।

समकालीन साहित्यकार पुराणकथा और अलौकिक चरित्रों को आधुनिक परिवेश देकर मिथकों में नूतन प्रयोग कर रहे हैं। मिथकों में मूल्य छिपे रहते हैं। आधुनिक मनुष्य उससे शिक्षा भी प्राप्त कर सकता है। कोहलीजी के उपन्यासों की कथा अतीत की कथा है जो इतनी प्राचीन है कि उसकी अधिकांश घटनाएँ

अविश्वसनीय हो चुकी है। लेकिन कोहली जी ने प्राचीन मिथकों को मौलिक रूप में प्रस्तुत किया है। मानव समाज की वे विसंगतियाँ है जो उस पौराणिक युग में भी थी और आज के युग में भी है, जिनका स्वरूप वही है मात्र परिवेश बदला है। महाभारत को दुबारा लिखने की आवश्यकता ही क्यों महसूस की गई, इसका एक मात्र उत्तर यही है कि पुराने मिथकों को तोडकर महाभारत के दर्पण में वर्तमान मूल्यों को रखना, विसंगतियों का चित्रण करना, शाश्वत चरित्रों को उद्‌घाटित करना ही कोहलीजी के लेखन की विशेषता रही है।

1.5.3 नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथक की युगीन चेतना

कोहली जी ने रामायण एवं महाभारतकालीन राजनीतिक घटनाओं को वर्तमान राजनीति की घटनाओं से जोडा है। जब शासन के प्रतिनिधि जनता के विश्वास को तोडकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने लगते हैं तो सामाजिक और राजनीतिक मूल्य गिर जाते हैं। शासन चाहे रावण का हो या दुर्योधन का अथवा वर्तमान समाज की भ्रष्ट राजनीतिक गतिविधियों का, जब भी राजशक्ति जन शक्ति पर हावी हुई है तब राजनीतिक मूल्य ध्वस्त हो जाते हैं। इन सब मुद्दों को कोहली जी ने उठाया है।

लेखक ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उस युग की सामाजिक चेतना के साथ आज के समाज के साम्य को प्रस्तुत किया है। सामाजिक परिस्थितियाँ चाहे रामायण, महाभारत के युग की रही हो चाहे वर्तमान युग की उनमें समानता रही है। नारी तब भी पीडित थी और आज भी है, निम्न वर्ग का शोषण तब भी होता था आज भी होता है। सामाजिक कुरीतियाँ तब भी थीं, आज भी है।

रूढिवादिता एवं अंधविश्वास समाज में हमेशा रही है। रामायण एवं महाभारतकाल का समाज भी इनसे पृथक नहीं है। जातिभेद, ऊँच-नीच की भावना व वर्ग भेद हमेश मानवीयता पर प्रश्न चिह्न लगाते रहे हैं। निर्दोष अहल्या को दोषी मानकर समाज द्वारा तिरस्कृत करना, जातिभेद के कारण समाज में कर्ण को उचित स्थान न मिलना आदि समाज की रूढिवादिता का ही पिरचायक है।

लेखक द्वारा आर्य एवं आर्योत्तर जातियों के बीच एकता स्थापित करना, उनमें समभाग लाने का और उस युग की संस्कृति का वर्चमान संस्कृति के साथ तादात्म्य स्थापित करने का बखूबी प्रयास किया जाता है। राम द्वारा सुग्रीव और विभीषण से मित्रता तीन जातियों की संस्कृतियों का मिलन था। भीम का हिडिंबा से विवाह आर्य एवं राक्षसी संस्कृति की एकता का परिचायक है।

साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति केलिए साहित्य की किसी भी विधा को क्यों न चुने उसमें युग चेतना के स्वर उभरकर आ ही जाते हैं। कोहली जी के मिथकीय परिवेशवाले सभी उपन्यासों में युग चेतना की धडकनें भरपूर विद्यमान है।

1.6 पौराणिक के विषय में नरेन्द्र कोहली का दृष्टिकोण

'पौराणिक' शब्द 'पुराण' में 'इक' प्रत्यय मिलने से बना है। पुराण का शाब्दिक अर्थ-पुराना, प्राचीन, पुरातन है जिनकी संख्या विद्वानों के अनुसार अठारह है। नरेन्द्र कोहली के अनुसार हमारे पुराणों में हमारा इतिहास, काव्य और अध्यात्म मिलता है। "पौराणिक मतलब पुराणों पर आधारित है। कुछ लोग केवल यह मानते हैं कि जो पुराना इतिहास है वह पुराण है, पर जो सबसे बडी बात लेखक के रूप में या कथाकार के रूप में मुझे लगता है यह है कि सारी विधाएँ जो देशकाल की दृष्टि से हमारे सामने, हमारे समाज में या हमारे देश में जो आज घटित हो रहा है, हम उसी को लेकर चल रही है। पुराण एक ऐसी विधा है जिसमें देशकाल की सीमा नहीं है। पुराण बहुत विराट रचना है। आज की सारी विधाओं की तुलना में अगर देखें तो एक-एक वाक्य में यही कहूँगा कि विराटता की दृष्टि से वह इनसे बहुत आगे हैं।"[1] नरेन्द्र कोहली के अनुसार पुराण कथाएँ वस्तुतः हमारी प्राचीन कथाएँ है अर्थात् हमारा इतिहास है।

1. नरेन्द्र कोहली से शोधार्थिनी की बातचीत में से लिया गया अंश (25/09/2014)

अपने उपन्यास 'महासमर' के माध्यम से नरेन्द्र कोहली ने पौराणिक चरित्रों को आधुनिक युग के प्रतिबिंब के रूप में उजागर किया है। पुराणकथा को यथार्थ के धरातल पर लाने केलिए लेखक को कई स्थानों पर प्राचीन परंपराओं एवं मिथकों को तोडना पडा है किंतु उससे प्रमुख घटनाओं एवं पात्रों के चरित्र में तोड-मरोड नहीं हुई, बल्कि वे घटनाएँ और अधिक सजीव एवं सशक्त होकर प्रासंगिक हो उठी तथा पात्रों का चरित्र अधिक प्रखरता से तर्कसंगत होकर मुखर हुआ है।

नरेन्द्र कोहली ने जीवन की परिवर्तनशीलता के साथ-साथ अतीत की मान्यताएँ और परंपराओं में सामंजस्य बिठाकर 'महासमर' में समसामयिक वर्तमान प्रसंगों के नए ढंग से प्रस्तुत की है। इसकेलिए उन्होंने समाज की जडी हुई परंपराओं का खंडन कर मानवीय जीवन मूल्यों की महत्ता को स्थापित करने का प्रयास किया है। कोहलीजी आधुनिक जीवन की व्यवस्था में सांस्कृतिक उत्थान केलिए महाभारत में स्थापित आदर्श से प्रेरित होकर इन जीवन मूल्यों को उपन्यास के माध्यम से हमारे प्रस्तुत करते हैं। इसी कारण जवन के मूलसार को समझने तथा समस्याओं के समाधान केलिए उन्होंने अतीत के महान ग्रंथों को माध्यम बनाकर जीवन की उत्कृष्टता बनाए रखनेवाले आदर्श पात्रों को चुना और

उन्हीं पात्रों के माध्यम से आज की राजनीतिक, सामाजिक विसंगतियों पर प्रकाश डाला है। कोहलीजी की परंपरा के प्रति अटूट आस्था है। 'महासमर' की कथा भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता के प्राचीनतम ग्रंथ 'महासमर' से ली गयी जो परंपरा की अर्थवत्ता के प्रति रचनाकार के विश्वास को दृढता प्रदान करती है।

उपन्यास की कथाओं केलिए लेखक ने अपने समाज और पुराण कथाओं दोनों को ही कथा स्रोत के रूप में चुना है। लेखक का मानना है कि न तो प्रकृति बदलती है और न ही मनुष्य का स्वभाव, इसलिए पुराण हमसे अलग नहीं हो पाते 'ऐतिहासिक क्रम से तो यही कहा जाएगा कि पहले मैं ने अपने परिवार को देखा, फिर समाज को, फिर राष्ट्र को। पहले वर्तमान को देखा फिर अपने इतिहास और पुराण को। पहले समाचार पत्र को पढा और फिर अपने निकट-अतीत से लेकर सुदूर-अतीत की कृतियाँ तक को। मेरा अनुभव यह है कि जीवित को कालखंडों में बाँटकर देखना सत्य की प्रतिष्ठा करना है। जीवन अनवरत है। आज का समाचार पत्र जिस जीवन की चर्चा करता है, उसी जीवन की चिंता व्यास और वाल्मीकि ने भी की है। प्रकृति के नियम वे ही हैं मनुष्य का स्वभाव और प्रकृति भी वही है, अंतर केवल इतना है कि वाल्मीकि और व्यास ने जीवन को उसकी समग्रता में देखा है और

उसके संबंध में बडी गहराई तक जाकर सोचा है। यही कारण है कि वे उसके वास्तविक और यथार्थ रूप के साथ उसके सत्य और उदात्त रूप को भी देख पाए। इसलिए मैं मानता हुँ कि कोई लेखक अपने वर्तमान से मुक्त नहीं हो सकता, किंतु अपने वर्तमान का बन्दी होकर रह जाना भी कोई आदर्शस्थिति नहीं है।"[1] लेखक यह मानता है कि पौराणिक कथाओं को लेकर लिखनेवाला लेखक भी समकालीन जीवन का ही लेखन कर रहा होता है। लेखक उन पात्रों और उन घटनाओं के प्रति लोगों के मन में जो मान्यता पहले व्याप्त है उसका लाभ उठाना चाह रहा है।

लेखक का मत है कि कुछ चीज़ें शाश्वत होती है। काल का प्रवाह निरंतर-अखंड है। प्रकृति के नियम अटल है। हमारे पौराणिक ग्रंथों के शाश्वत मूल्य न कभी बदले जा सकते है, न कभी वे अनावश्यक होंगे और न ही अप्रासंगिक। हमारे देश की जनता पौराणिक उपन्यासों के माध्यम से अपनी संस्कृति से संपृक्त हो उसमें से कुछ प्राप्त करना चाहती है।

1.6 महाभारत कथा के संदर्भ में नरेन्द्र कोहली का समकालीन बोध

महाभारत हमारा काव्य भी है, इतिहास भी है और अध्यात्म

1. नरेन्द्र कोहली - मेरे -साक्षात्कार - पृ. 71-72

भी। हमारे प्राचीन ग्रंथ शाश्वत सत्य की चर्चा करते हैं। वे किसी कालखंड के सीमित सत्य में आबद्ध नहीं है। नरेन्द्र कोहली ने न महाभारत को नए संदर्भों में लिखा है, न संशोधन करने का कोई दावा है, न वे पाठक को महाभारत समझाने केलिए उसकी व्याख्या मात्र कर रहे हैं। वे यह नहीं मानते कि महाभारत में जो घटनाएँ घटित हो चुकी, उनसे अब हमारा कोई संबंध नहीं है। सत्य तो यह है कि न तो प्रकृति के नियम बदले है, न मनुष्य का मनोविज्ञान।

'महासमर' के बारे में नरेन्द्र कोहली का अपना मत है 'प्रख्यात कथाओं का पुनःसृजन उन कथाओं का संशोधन अथवा पुनर्लेखन नहीं होता, वह उसका युगसापेक्ष अनुकूलन मात्र भी नहीं होता है। पीपल के बीज से उत्पन्न प्रत्येक वृक्ष पीपेल होते हुए भी स्वयं एक स्वतंत्र अस्तित्व होता है, वह न किसी का अनुकरण है न किसी का नया संस्करण। मौलिक उपन्यास का भी यही सत्य है।"[1] महाभारत की कथा भारतीय चिंतन और भारतीय संस्कृति की अमूल्य थाती है। नरेन्द्र कोहली ने उसे ही अपने उपन्यास का आधार बनाया है। 'महासमर' की कथा मनुष्य के उस अनवरत युद्ध की कथा है जो उसे अपने बाहरी और भीतरी शत्रुओं के साथ निरंतर करना पडता है। वह उस संसार में रहता है जिसमें चारों ओर लोभ और स्वार्थ की शक्तियाँ संघर्षरत हैं। बाहर से अधिक

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -) -भूमिका भाग

उसे अपने भीतर से लडना पडता है। परायों से अधिक उसे अपनों से लडना पडता है।

नरेन्द्र कोहली ने रामकथा के यशस्वी समकालीन चित्रण के अनंतर महाभारत की औपन्यासिक पुनःसृष्टि करते समय भी अपने उत्तदायित्व का गंभीरतापूर्वक निर्वाह करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। महाभारत सामान्य काव्य नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय संस्कृति का विश्वकोश है। कोहलीजी को महाभारत की पुरानी प्रामाणिकता को बनाए रखकर नयी व्याख्याओं के द्वारा उसी सर्वकालीनता को आधुनिक संदर्भों में उजागर करने का दुरूह कार्य करना पडा है।

निष्कर्ष

नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व, उनकी रचनाएँ और सृजनाशैली का विश्लेषण करते हुए हमें यह मालूम पडता है कि समकालीन साहित्यकारों में अपनी अलग अभिव्यक्ति शैली के कारण कोहली जी का एक विशिष्ट स्थान है। उनकी रचनाओं में उनके प्रखर व्यक्तित्व की छाप हमें स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। वे एक संवेदनशील एवं सामाजिक दायित्ववाले रचनाकार हैं। समाज के सभी अत्याचारों, अंतर्विरोधों कुरूतियों के खिलाफ वे अपनी

तूलिका से अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर करते है। उनके उपन्यासों की विशेषता यह है कि ज़्यादातर उपन्यास पौराणिक इतिवृत्तों पर आधारित उपन्यास शृंखला है। वे यह मानते हैं कि समकालीन विद्रूपताओं को सही मायने में प्रस्तुत करने का एक तीखा औजार है पौराणिक इतिवृत्त। क्योंकि पौराणिक या मिथकीय कथाबीज पाठकों के मन में पहले से ही स्थायी रूप से पडा होगा। इसलिए पाठकों को लेखक के विचारों के साथ तादात्म्य आसानी से हो सकता है। पाठकवृंद इन रचनाओं से सामाजिक अन्यायों के प्रति अवगत हो जाएगा। दूसरी ओर सामाजिक दायित्वों को निभाने केलिए ये लोग जागरूक भी बन आएंगे। पौराणिक कथानक होने पर भी कोहलीजी ने अपनी मौलिक उद्भावनाओं के ज़रिए उसे एकदम समकालीन के अनुरूप ढाला है। आधुनिक जीवन में मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में और इन मूल्यों को लोगों के मन में बरकरार रखने केलिए उनकी रचनाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

❖ ❖ ❖

अध्याय दो

महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

2.1 समाज और साहित्य

मानव समाज का व्यवस्था सुचारू रूप से चलने तथा मानव समाज अपनी एकता को बनाए रखने केलिए कतिपय नियमों एवं रीतियों की सृष्टि करता है। सभी लोगों की भलाई केलिए इन नियमों का पालन भी ज़रूर है। लेकिन समय के बदलने के साथ इनमें परिवर्तन आवश्यक हो जाता है।

आज हमारे समाज में अराजकता, अव्यवस्था, छल, पाखण्ड, अनैतिकता, अन्याय, शोषण, अत्याचार आदि अनेक विसंगतियाँ पैदा होती है। साहित्यकार समाज के हर पहलू को ध्यान में रखकर साहित्यसृजन करते है। प्रतिभा संपन्न रचनाकार नरेन्द्र कोहली आज के अस्तव्यस्त सामाजिक व्यवस्था पर थोडा बहुत चिंतित है। उन्होंने पौराणिक कथ्यों एवं पात्रों को आधार बनाकर वर्तमान समाज की अनेकानेक विद्रूपताओं को चित्रित करने का सफल प्रयत्न किया है। उनके यह प्रयत्न पर वे शत प्रतिशत सफल भी हो गए है।

2.2 'महासमर' में चित्रित सामाजिक मूल्य

'महासमर' कथानक की दृष्टि से दो राज परिवारों का सत्ता संघर्ष होने के बावजूद भी तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण की

अभिव्यक्ति हुई है। मनुष्य समाज का मुख्य अंग है। मनुष्य का जीवन सुचारू ढंग से चलने केलिए कुछ नियम बताए जाते हैं और इस नियम को सामाजिक मूल्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। 'महासमर'में तत्कालीन सामाजिक चित्रण से और चरित्रों की माध्यम से आधुनिक दृष्टि से व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है । आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'महासमर' के समाज को जानने-समझने केलिए तत्कालीन समाज का राजधर्म, नारी धर्म, गुरुधर्म, वर्ण व्यवस्था, आदि की व्याख्या समझता आवश्यक है।

महाभारतकालीन समाज में माता-पिता की इच्छा का पालन, उनकी इच्छा की पूर्ति मानव का पहला धर्म माना जाता था। ऐसे सामाजिक मूल्य का अनेक उदाहरण 'महासमर' में दृष्टिगोचर है। देवव्रत पिता शान्तनु के सत्यवती के साथ शादी करने केलिए अपनी सारी राज सुख-सुविधाओं गँवाने को तैयार था। उस समय की राज-व्यवस्था और सामाजिक विचारों से प्रभावित देवव्रत यह सोचता है कि आज यदि देवव्रत अपना अधिकार नहीं छोड़ते तो आनेवाली प्रत्येक पीढ़ी उन्हें पितृ-द्रोही के रूप में धिक्कारेगी कि वे अपने पिता के सुख केलिए राज सुख नहीं त्याग सके। इस संदर्भ में देवव्रत स्वयं सोचते हैं कि -श्रवण कुमार अपने माता पिता की इच्छा पूर्ति के कारण अमर हो गया। दशरथ पुत्र राम इसी प्रकार

अपने पिता की इच्छा पूरी करने केलिए वन चले गए और अपने यौवन का सर्वश्रेष्ठ काल, राजमहलों में नहीं, भयंकर वनों में बता आए। देवव्रत ने भी वह किया है।"[1] देवव्रत जिस समाज में रहते है, वह समाज मानते है कि पिता ने पुत्र को जन्म दिया है, पिता ने ही पुत्र का पालन पोषण किया है इसलिए पुत्र पर पिता का पूर्ण अधिकार है। पुत्र, पिता की संपत्ति है। पुत्र, पिता के लिए जो भी कर दे वह कम है। देवव्रत ने शान्तनु के लिए जो कठिन प्रतिज्ञा करके सत्यवती को लाकर शान्तनु को दी थी उसके लिए शान्तनु उनका फिर से नामकरण करके भीष्म नाम रखते हैं। और कहता हैं कि तुम-सा पुत्र पाकर पिता-पुत्र पर ही गर्व करने योग्य रह जाता है, स्वयं अपने आप पर गर्व करने का साहस नहीं कर पाएगा।

उस समय राजा अपनी प्रजा का पूर्णतः ध्यान रखते थे। 'महासमर' में युधिष्ठिर का चरित्र प्रजापालक, सहिष्णुता, विनम्रता आदि गुणों से युक्त है। अपने विषम एवं विकट परिस्थितियों में भी उन्होंने धर्म नहीं छोड़ा है। युधिष्ठिर शासन को वास्तविक रूप में ग्रहण कर प्रजा की रक्षा, उसकी समृद्धि तथा प्रजा के सर्वांगीण विकास का प्रयास करता है। भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं- "तुम्हारा अधिकार असहाय, पीड़ित, दमित तथा शोषित प्रजा का कवच बन जाएगा। तुम्हारा कर्तव्य होगा कि तुम उनकी रक्षा करो, उनका

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 43

पालन करो।"[1] प्रत्युत्तर में युद्धिष्ठिर कहते हैं - "मैं प्रयत्न करूँगा पितामह! कि मैं अधिकार का वास्तविक रूप ही ग्रहण करुँ। मैं प्रजा का रक्षक बनूँ। उसकी समृद्धि को पहचानकर प्रजा के सर्वांगीण विकास का मार्ग चुनूँ।"[2] प्रजापालन के सही मायना युधिष्ठिर के कथनों में मिलता है।

नरेन्द्र कोहली 'महासमर' में महाभारतकालीन अच्छे-अच्छे सामाजिक मूल्यों का अंकन करते है। आज हमारे समाज में सनातन मूल्यों का ह्रास होने लगता है। इन मूल्यों का पुनःस्थापन ककने केलिए कोहलीजी ने मूल्यों का खजाना महाभारत को उपन्यास के विषय के रूप में चुना है। और यह आशा भी करता है कि उनका उपन्यास आज के मानव केलिए प्रेरणादायक बने।

2.3 सामाजिक शोषण तथा अत्याचार

मनुष्य अपने स्वभाव के अनुसार प्रायः दूसरों पर अधिकार जमाने की चेष्टा करता है। वह कभी उच्चकुल-जाति के आधार पर तो कभी बल या धन वैभव से दूसरों को अपने अधीन करने का प्रयत्न करता है। महाभारतकालीन समय में राज्य का शासन चलाने केलिए नियम थे। किंतु 'महासमर' में शान्तनु सत्यवती का पुत्र चित्रांगद माता-पिता के अत्यधिक प्रेम के कारण राज्य के

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 382
2. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 383

नियम, मर्यादा और धर्म का उल्लंघन करता है। इतनी कम आयु में भी वह लोगों पर अत्याचार करता है। एक बार जब चित्रांगद भ्रमण केलिए निकलता है तो सारथी उसके रथ को वाटिका के बाहर रोक देता है। चित्रांगद ने कारण पूछा तो सारथी ने बताया कि यह राजोद्यात है, भीतर आप जाया जा सकता है - रथ केलिए मार्ग नहीं है। चित्रांगद को सारथी पर क्रोध आता है और उसे पीटता है। सत्यवती भी उसे उचित ही समझती है। यहाँ नरेन्द्र कोहली ने यह बदौने का प्रयत्न किया है कि उस समय राज्य के वफादार कर्मचारी राज्य की मर्यादा बनाए रखने के प्रयत्न करते थे जबकि चित्रांगद जैसे युवराज वैसे कर्मचारियों पर अत्याचार करते थे।

उस समय गुरु स्वयं ही विद्यार्थियों में वर्ग-भेद को प्रश्रय देते थे। कुरुवंश के राजकुमारों की शिक्षा का दायित्व कृपाचार्य को सौंपा गया था। वे अपने शिष्यों को उचित शिक्षा भी दे रहे थे। कृपाचार्य उनके शिष्यों की शिक्षा के बारे में जानकारी देते हुए भीष्म से कहते हैं - "वे लोग अच्छे योद्धा बनेंगे। मेरा विचार है कि इस समय हस्तिनापुर में सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं का निर्माण हो रहा है। हाँ! अधीरथ का पुत्र कर्ण सूतपुत्र होते हुए भी क्षत्रियों के गुणों से परिपूर्ण है। वह युद्ध कला में इनमें से किसी से भी कम नहीं होगा, किंतु मेरी इच्छा उसे राजकुमारों के समकक्ष शिक्षा देने की नहीं है।

न ही मैं उसे वे सारी विद्याएँ सिखाऊँगा, जिनके कारण वह राजकुमारों की समता कर सके।"[1] यहाँ नरेन्द्र कोहली ने यह दिखाया है कि उस समय के गुरु भी सामाजिक विषमता को जन्म देते थे। गुरु का धर्म तो अपने शिष्य की संपूर्ण क्षमताओं का विकास करना होता है। उन्हें यह चिंता नहीं करनी चाहिए कि उनका कौन-सा शिष्य किस वर्ग अथवा परिवार से आया है। विद्या का दान, वर्ग के आधार पर नहीं, बल्कि योग्यता के आधार पर होना चाहिए। फिर भी कृपाचार्य जैसे गुरु वर्गभेद के आधार पर सामाजिक वैषम्य को बढ़ाते थे।

पांडव जब वारणावत जाते है तो वहाँ के लोग पांडवों के स्वागत केलिए एकत्रित हुए थे। युधिष्ठिर सबका अभिनंदन स्वीकार करते है। अनेक लोग उपहार भी लाए थे। लेकिन युधिष्ठिर ने ये उपहार का स्वीकार नहीं किया। किंतु उस प्रजा के चेहरों पर प्रसन्न होने के स्थान पर चकित होने का भाव अधिक थे। उसमें से एक ग्रामीण युधिष्ठिर से कहता है कि हम जब नगगरपाल से मिलने जाते हैं, तो उनके लिए भी कोई न कोई उपहार लेकर ही जाते हैं। उन्होंने कभी हमारे उपहार अस्वीकार नहीं किए है। तब युधिष्ठिर उससे पूछते हैं कि आप लोग नगरपाल केलिए उपहार लेकर क्यों जाते है? तब ग्रामीण अत्यंत सहज भाव से युधिष्ठिर से कहता -

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 42

"उन्हें प्रसन्न करने केलिए युवराज! हमें उनसे कोई-न-कोई काम पडता ही रहता है। यदि हम उन्हें प्रसन्न नहीं रखेंगे, तो वे हमारा काम क्यों करेंगे?"[1] यहाँ रक्षकों के द्वारा ही प्रजा का शोषण होता था। राजा कर्मचारी उपहार के बिना कोई काम करने को तैयार नहीं होते थे। एक ओर राजपरिवार एवं उच्चवर्ग के लोग वैभव एवं ऐश्वर्य में मस्त जीवन बीताते थे तो दूसरी ओर ईमानदारी से जीनेवाले लोगों को दो वक्त का भरपेट भोजन भी नहीं मिलता था। महाभारत कालीन समाज में नहीं बल्कि वर्तमान युग में भी इस तरह की अनेक घटनाएँ हमें देखने को मिलते है।

2.4 महाभारतकालीन वर्ण व्यवस्था और 'महासमर'

प्राचीन काल में वर्ण-व्यवस्था भारतवर्ष के सामाजिक संगठन तथा संस्कृति का प्राण थी। इसी के द्वारा ही भारतीय संस्कृति तथा सामाजिक संगठन का विकास होता था, पर यह व्यवस्था उस समय इस रूप में नहीं थी जिस रूप में आज देखने को मिलती है। उस समय भी समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य तथा शूद्र-ये चार वर्ण होते थे, परंतु उनका यह विभाजन वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित था। मानव समाज की चार मुख्य आवश्यकताएँ हैं - ज्ञान, रक्षा, जीविका तथा सेवा। ब्राह्मणों को 'ज्ञान' अर्थात् विद्या - अध्ययन-अध्यापन, क्षत्रियों को 'रक्षा' अर्थात् विदेशी आक्रमणों से नागरिकों

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 80

की रक्षा करना और सीमाओं का विस्तार करना, वैश्य का कार्य 'जीविका' यानी खेती और वाणिज्य आदि, शूद्रों का कार्य उपर्युक्त तीनों वर्गों की पूर्ण मनोयोग्य से सेवा करना था। यह व्यवस्था केवल जाति तथा जन्म पर आधारित नहीं थी, वरन् मनुष्य की चार मूल-भूत आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए वैज्ञानिक ढंग से की गई थी ।

'महाभारत' की कथा से 'महासमर' की कथावस्तु बनाया गया है, लेकिन समाज की उपस्थिति की व्याख्या आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ही की गई है। 'महासमर' के प्रथम खंड 'बंधन' में कथा का आरंभ शातनु-सत्यवती के विवाह-प्रसंग से होता है। राजा शान्तनु दासराज की कन्या सत्यवती के रूप-सौन्दर्य के प्रति आकर्षित हो गए थे। दासराज यह जानता है कि क्षत्रियों के लिए छोटी जाती की कन्याओं का अपहरण व आधिपत्य एक सामान्य घटना है। फिर भी राजा शान्तनु दासराज से उसकी कन्या का हाथ माँगने आ गए है इसलिए दासराज इस अवसर का लाभ पूरी तरह से उठाना चाहता है। अपनी बेटी सत्यवती को समझते हुए दासराज सामाजिक यथार्थ से हमारा परिचय कराते है। दासराज के शब्दों में 'बेटी! मैं आजीवन तुझे अपने घर में नहीं रख सकता था। तुझे किसी क्षत्रिय राजा या राजकुमार के साथ जाना ही था। स्वेच्छा से न भेजता तो वे बलात् ले जाते। इस सौदे में तेरे सुख केलिए जो मैं अधिक से

अधिक माँग सकता था, वह मैं माँग लिया है। अब तेरे लिए भगवान से यही माँगता हूँ कि तू अपने पति के घर पर सुखी रहे।"[1] तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति की ओर कोहलीजी ने यहाँ ईशारा किया है।

सामन्ती समाज की आधुनिक व्याख्या में एक महत्वपूर्म बिन्दु है - वर्ण व्यवस्था। सामन्ती समाज वर्णाश्रम प्रधान समाज है। 'महासमर' में वर्ण व्यवस्था के दो प्रतीक पात्र हैं कर्ण और एकलव्य। कर्ण कुन्ती का कानीन पुत्र है। सचमुच वह क्षत्रिय है लेकिन वह सामाजिक दृष्टि से सारथि पुत्र है इसलिए प्रतिभा संपन्न व्यक्ति होने के बावजूद भी उसे समाज में उचित स्थान नहीं मिलता। द्रोण, भीष्म, कृपाचार्य आदि सभी इस बात पर सहमत है कि कर्ण क्षत्रिय राजकुमारों के साथ शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता। द्रोण बोले 'सारथि-पुत्र को योद्धा के रूप में क्यों प्रशिक्षित किया जाए? ताकि वह विप्लव फैला सके? राजवंशों को उलट-पलट सकें? प्रत्येक साधारण जन को राजकुमारों के समकक्ष युद्ध-प्रशिक्षण देना, न राजवंशों के हित में है, न शासन तंत्र का। इसलिए यह वर्ग मात्र राजकुमारों का है कर्ण ! तुम अपने वर्ग में जाए। तुम अपने वर्ग में जाओ।"[2] आज तक कितने ही कर्ण वर्गभेद की आँधी में अस्तित्वहीन रह गए है। कदम कदम पर उनकी प्रतिभा को दबाया गया है।

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 36
2. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 314

कर्ण को शस्त्र-विद्या का ज्ञान ब्राह्मण-पुत्र बनकर लेना पडता है। क्योंकि सूतपुत्र होकर उसे कोई शिक्षा नहीं मिलती है। अपने पिता से वाद-विवाद में कर्ण उस सामाजिक व्यवस्था के सम्मुख भी बड़े प्रश्न खडा करता है, "आप मुझे बताएँ कि विद्या का अधिकार सबको क्यों नहीं है? विद्या-दान के मध्य वर्ण कहाँ से आ जाता है? मैं शास्त्र-विद्या विशारद क्यों नहीं हो सकता ? क्या कमी है मुझमें ? मानवों में वर्ण-भेद कर, वर्ग-भेद कर कुछ को हीन और कुछ को श्रेष्ठ मानने का क्या अर्थ है? समाज में कुछ लोगों केलिए सुविधाएँ क्यों जुटाई जाती है और कुछ की इतनी उपेक्षा क्यों की जाती है।"[1] कर्ण के शब्दों में वर्गभेद का दर्द हमें देख सकते हैं।

द्रोण-एकलव्य प्रसंग भी समाज की वर्ण-व्यवस्था-शक्ति का प्रमाण है। द्रोण ने एकलव्य को शिक्षा इसलिए नहीं दी क्योंकि वह भील जाति का बालक था। द्रोण द्वारा ठुकराए जाने के बाद एकलव्य ने द्रोण की प्रतिमा बनाई और वह एकाग्र चित्त होकर धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा। एकलव्य गुरु द्रोण को अपना गुरु मानता रहा है। जब द्रोणाचार्य को यह बात पता चला तब उन्होंने एकलव्य से गुरु दक्षिण के रूप में दाहिने हाथ का अँगूठा ले लिया क्योंकि वह जानते थे कि धनुर्विद्या में एकलव्य अर्जुन से कहीं श्रेष्ठ है और यह श्रेष्ठता अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर का यश

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 219

अर्जित नहीं करने देगी। अपने शिष्यों को अच्छे पद प्रदर्शित करनेवाले गुरु भी वर्गभेद जैसे संकुचित मनोभाव रखनेवाले है।

2.5 'महासमर' में अभिव्यक्त न्याय विधान

प्रत्येक युग और समाज के अपने नियम होते हैं। जब कोई व्यक्ति इन नियमों का उल्लंघन करता है तो वह अपराध कहलाता है। ऐसे व्यक्ति को शासक द्वारा दण्डित किया जाता है। दोषी को दोषी ठहराना और निर्दोष को निर्दोष घोषित करना शासक की न्यायप्रियता कहलाएगी।

महाभारत कालीन समय में नारी का सम्मान होता था। ऋषि गण भी नारे सम्मान की रक्षा करते हुए दिखाए गए हैं। 'महासमर' में भी नारी सम्मान को अनेक उदाहरण हमें देख सकते हैं। भीष्म जब काशीराज की तीन कन्याओं का हरण कर लाते है तब सबसे बड़ी अंबा विचित्रवीर्य के साथ शादी करने से इन्कार कर देती है। वह शाल्व राजकुमार को अपने पति के रूप में समझती थी। भीष्म उसे मुक्त करते हैं। लेकिन दूसरे पुरुष के साथ जाने के काररण शाल्व अंबा का वरण नहीं करता है। तब वह अपनी इस दयनीय स्थिति केलिए भीष्म को जिम्मेदार ठहराती है और न्याय के लिए परशुराम के पास जाती है। तब परशुराम भीष्म से कहते हैं - 'नारी के सम्मान की रक्षा, प्रत्येक प्राणी का धर्म है देवव्रत भीष्म! एक

अबला राजकन्या नगर-नगर भटक रही है, और दो शस्त्रधारी सत्तावान योद्धा उसका अपमान कर रहे हैं। उन्हें न्याय को स्वीकार करने केलिए बाध्य करने हेतु, अथवा उन्हें उनके अपराध का दण्ड देने केलिए मुझे शस्त्र उठाना पड़ रहा है पुत्र। यह मेरी अहम्मन्यता नहीं है, न ही अपना इच्छा का आरोपण। मैं धर्म को वाणी दे रहा हूँ, या तो अंबा को पत्नी के रूप में अंगीकार करो, अथवा अपने प्राण देकर अपने अपराध का परिमार्जन करो।"[1] यहाँ नरेन्द्र कोहली ने उस समय नारी के सम्मान की रक्षा केलिए कठोर दण्ड-विधान की ओर संकेत दिया है।

द्वारका में कृष्ण की पत्नी सत्यभामा के पिता सत्राजित की हत्या करके उससे स्यमंतक मणि छीन ली जाती है। पूरे नगर में यह बात फैली हुई है कि सत्राजित का वध शतधन्वा ने किया है और वह स्यमंतक मणि भी ले गया है। किन्तु द्वारका में शतधन्वा के सहयोगी अत्यंत शक्तिशाली होने के कारण उसे बंदी नहीं बना सकता है। तब कृष्ण सत्यभामा से हत्यारे को ढूँढकर उचित दण्ड देने की बात करते हुए कहते हैं - "सत्राजित मेरे श्वसुर थे, इसलिए मैं तो उनके हत्यारे को ढूँढ ही निकालूँगा और उसे दण्डित भी करूँगा, किन्तु यदि किसी साधारण जन के विरुद्ध अत्याचार हो तो उसका प्रतिकार कौन करेगा? शासन का विधान किसलिए है?

---

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 223

प्रजा अपनी आय में से राज्य कर किसलिए देती है? इसलिए कि शक्तिशाली लोग सुख सुविधा से रहें और स्वेच्छाचारी जीवन व्यतीत करें ? समाज और राज्य का विधान, उनके लिए नहीं है क्या ?"[1] कष्ण का यह संवाद राजा और राज्य के अन्य पदाधिकारियों की अकर्मण्यता और लापरवाही की ओर इंगित करता है।

पौराणिक काल में नही आज भी शासक थोड़ा। बहुत शिथिल पड़ जाता था अपने शासन पर पूरा ध्यान न दे पाता वैसी परिस्थितियों में अत्याचार, लूटपाट जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ जाता है। न्याय जैसा कोई विधान न रहने से जिन व्यक्तियों को प्रजा की रक्षा की ज़िम्मेदारी दी जाती थी वे ही उन पर अत्याचार करने लगते थे।

2.6 सामाजिक प्रतिष्ठा और राजकीय दंभ

महाभारत कालीन युग में राज वर्ग अपनी प्रतिष्ठा के लिए कुछ भी कर सकता था। 'महासमर' में ऐसे अनेक उदाहरण हमें मिलते हैं कि राजा अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने केलिए कुछ भी हीन प्रवृत्ति करते हैं। धृतराष्ट्र जैसे राजाओं का आचरण और कर्म तो अधम ही थे किंतु वे व्यर्थ का आडंबर करके अपने आपको एक सज्जन की कोटि में रखने का प्रयत्न करते है। पाण्डु जब दिग्विजय केलिए जाते हैं तो शासन धृतराष्ट्र संभालता है। राजा बनने के बाद धृतराष्ट्र किसी से परामर्श लेना उचित नहीं समझते हैं। वे सोचते

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 130

हैं कि साम्राट ही सर्वस्व होता है। शकुनी द्यूत और मदिरा को धृतराष्ट्र के माध्यम से राजकीय प्रश्रय दिलवाता है। राज्य की ओर से उसे प्रोत्साहित किया जाता है, उसके लिए सुविधाएँ जुटाई जाती हैं।

सब जानते थे कि धृराष्ट्र के शासन में न्याय जैसा कोई विधान नहीं रह गया है। जब दुर्योधन की दुष्प्रवृत्तियाँ बहुत बढ़ जाती हैं तो धृतराष्ट्र सोचते है कि उसे अपनी प्रतिष्ठा बचाने केलिए कोई उपाय करना चाहिए। धृतराष्ट्र किसी भी प्रकार पाण्डु पुत्रों से अधिक दुर्योधन की प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहता है। इसके लिए उसको छल और प्रपंच का भी सहारा लेना चाहता है। उस समय के सामाजिक नियमों के अनुसार एक ही कुल में दो सम्राट नहीं हो सकते थे। किन्तु धृतराष्ट्र किसी भी प्रकार युधिष्ठिर का हक छीनकर दुर्योधन को सम्राट बनाना चाहता है।

उस समय युधिष्ठिर जैसे व्यक्ति भी थे जो समाज के हित को ध्यान में रखते थे। धृतराष्ट्र के शासन में द्यूत और मदिरा को मानव जीवन की अनिवार्यता बना दिया था। राजसभा में जब इस विषय को लेकर बहस होती है तो युधिष्ठिर इस झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा और पाखण्ड का खंडन करते हुए कहते है - मैं जानता हूँ कि इस समय हस्तिनपुर में ही नहीं, प्रायः सारे जंबूद्विप में मदिरा और द्यूत मनोरंजन के प्रमुखतम साधन है। मैं यह भी जानता हूँ कि

क्षत्रियों ने ही इन्हें सबसे अधिक प्रश्रय दे रखा है। राजवंशों में भी इसका बहुत प्रचलन है। वे भी इनके बिना नहीं रह सकते हैं। यदि कोई क्षत्रिय द्यूतक्रीडा में सम्मिलित न होता चाहे तो उसे उसी प्रकार कायर, भीरु और कापुरुष समझा जाता है। किंतु क्षत्रिय को वीर होना चाहिए, हिंस्र नहीं। उसे मनोरंजन करना चाहिए, मन की उदात्त वृत्तियों का भंजन नहीं। हमारे समाज ने ये कुछ कृत्रिम लक्षण क्षत्रियत्व के साथ दोड़ दिए हैं और मान लिया है कि जो द्यूतक्रीड़ा में सम्मिलित नहीं होता, मदिरा का सेवन नहीं करता वह क्षत्रिय नहीं है।"[1] यहाँ कोहली जी ने समकालीन झूठी पाखंडवृत्ति की ओर युधिष्ठिर के पात्र द्वारा प्रकाश डालने का सफल प्रयास किया है। आज के संदर्भ में भी व्यक्ति के कर्मों को कम महत्व दिया जाता था, उसके पद को ज़्यादा महत्व दिया जाता है।

2.7 नारी का सामाजिक शोषण एवं नारी दुर्दशा

शोषित नारियाँ सिर्फ मध्य और निम्न वर्ग में ही हैं ऐसा नहीं है, बल्कि कई मामलों में तो उच्च और उच्चतम वर्ग की स्त्रियाँ इनसे भी ज़्यादा प्रताड़ित और शोषित है। पुरुष प्रधान समाज में सारे बंधन, सारी मर्यादाएँ नारी के शोषण केलिए बनी हैं। कोहलीजी हमेशा ही नारी मुक्ती के पक्षधर है। संपूर्ण 'महासमर' में नारी समस्याओं का अंकन करके समाज के हर तबके के स्त्रियों को न्याय दिलाने का ईमानदारी के साथ प्रयत्न किया है।

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 22

विधवा स्त्री को अधिकारों से वंचित रखना हमारे समाज का जन्मसिद्ध हक है। जब किसी स्त्री के पति की किसी भी कारणवश मृत्यु हो जाती थी तो घर और समाज में उसका महत्व कम हो जाता था। ऐसी स्थिति में स्त्री और उसके बच्चे बोझ माने जाते थे। उन्हें अपनी संपत्ति से किसी भी तरह से वंचित रखने के प्रयत्न किए जाते थे। हस्तिनपुर का राज्य पाण्डु का था किन्तु पांडु की मृत्यु के बाद राज्य धृतराष्ट्र पाण्डु के पुत्रों को देना नहीं चाहता था और इसी कारण वह कुंति और उसके पुत्रों को किसी न किसी बहाने हस्तिनापुर से दूर रखता था। भीष्म, विदुर, द्रोण, कृपाचार्य जैसे धर्म परायण लोग भी अंधे धृतराष्ट्र के हाथ से छीनकर उसके पति का साम्राज्य कुंति और उसके पुत्रों को लौटाना नहीं चाहते है। कुंति अपने पाँच पुत्रों को लेकर वन-वन भटके, भिक्षा माँगकर जीवनयापन करे यही सभी की तमन्ना रहे हैं। धृतराष्ट्र जब कुंति और उसके पुत्रों को वारणावत भेजता है तब कुन्ति की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए कोहली जी ने अपने 'कर्म' उपन्यास में लिखा है कि -"उसने एक बार अश्रु भरी आँखों से हस्तिनापुर के राजप्रसाद को देखा था। वह आज दूसरी बार यहाँ से निष्कासित हो रही थी। वह नहीं जानती थी कि अब पुनः यहाँ प्रवेश मिलेगा भी या नहीं। विचित्र बात थी कि जो स्वामी थे, वे अतिथि के समान विदा हो रहे

थे, और जिन्होंने बलात् आधिपत्य जमा रखा था, वे स्वामी के समान, उन्हें विदा कर रहे थे।"[1] पुरुष के बिना स्त्री का कोई महत्व नहीं था। पुरुष की अनुपस्थिति में स्त्री और उसके परिवार की भी कोई सुरक्षा नहीं थी। कुंति न स्वयं बलप्रयोग कर सकती है न शक्ति परीक्षा। उसे तो उस दिन की प्रतीक्षा, करनी होगी, जिस दिन उसके पुत्र समर्थ हो जाएँगे। अपना अधिकार माँगेगे और अधिकार न मिलने पर बलप्रयोग कर उसे प्राप्त कर सकेंगे।

समकालीन जीवन में दहेज प्रथा एक सामाजिक कोढ़ के रूप में उभरी है। दहेज प्रथा कानूनी जुर्म है। दहेज लेने अथवा देनेवाले को पाँच साल की सजा की व्यवस्था की गई है। दहेज एक ऐसी सामाजिक कुरीति है को बेटी के माता-पिता को कभी चैन की नींद नहीं देती है। 'महासमर' उपन्यास में नरेन्द्र कोहली इसी यथार्थ को उजागर करती है। विद्या की माँ कहती है "कुँआरी कन्या की तो रक्षा ही कठिन है और विवाह की बात सोचे तो यौतुक (दहेज) का पिशाच मुँह बाए खडा है।"[2] दहेज के कारण विवाह जैसे पवित्र संबंध व्यापार में परिणत हो गयी है।

स्त्रियों को अपने जीवन साथी चुनने का अधिकार आज भी समाज नहीं देता है। उनकेलिए जीवन साथी उनके अभिभावक ही खोजते हैं। यदि कोई स्त्री पहल करे तो भी परिवार और समाज

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 74
2. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 234

खुलकर उसका विरोध करते है। 'महासमर' में अंबिका और अंबालिक का इसी यातना से गुज़रना पडा है। विचित्रवीर्य से शादी करने केलिए भीष्म ने काशिराज्य की दो कन्याओं अंबिका और अंबालिका का अपहरण किया। अंबिका और अंबालिका को अपनी इच्छा के विरुद्ध विचित्रवीर्य से शादी करना पड़ा। अंबिका और अंबालिका अपने जीवन के विनाश केलिए एकमेव भीष्म को ज़िम्मेदार मानती है। विवाह जैसे महत्वपूर्ण प्रसंगों में भी नारी की इच्छा जानने का प्रयत्न नहीं किया जाता है।

विचित्रवीर्य की मृत्यु के बाद सत्यवती अंबिका और अंबालिका को सती होने का आदेश तो नहीं देती है किन्तु नियोग द्वारा पुत्र जन्म देने का आदेश देती है। यहाँ पर भी काशीराज की कन्याओं की इच्छा जानते का प्रयत्न नहीं किया जाता । जब अंबिका नियोग द्वारा पुत्र को जन्म देती है और पुत्र में दोष रह जाता है तो उसकेलिए अंबिका को ही दोषी ठहराया जाता है। सत्यवती क्रोधित होकर कहती है कि -"यह अभागिनी ही नहीं चाहती थी कि मुझे स्वस्थ और समर्थ पौत्र प्राप्त हो। इसी ने निराहर रह-रहकर गर्भस्थ पौत्र को पौष्टिक तत्वों से वंचित रखा। इसी ने अपने सारे गर्भ-काल में रो-रोकर अपनी आँखें फोड़ी। इसी ने गर्भ धारण के समय आँखें मूँद ली कि शिशु नेत्रहीन ही जन्मे। अभागिनी न होती, तो विधवा जीवन का शाप क्यों पाती। आते ही दुष्टा ने पति को खोया

और अब पुत्र के नेत्रों का प्रकाश पी गई।"[1] सन्तान के जन्म के पश्चात् अगर उसमें कोई दोष रहता तो उसके लिए भी नारी को ही अपराधी माना जाता है।

उस समय विवाह के बाद कुछ समय के अन्तर्गत अगर स्त्री गर्भवती नहीं होती तो उसके सहमति के बिना ही पुरुष दूसरा विवाह कर लेता था। कुंति के साथ पांडु की शादी होती है और वह आखेट केलिए जाने का निर्णय करता है तब राजमाता सत्यवती सोचती है कि इसको शायद कुंती पसंद नहीं आयी है। वह कुंती से कुछ पूछे बिना भीष्म से कहकर पांडु केलिए दूसरी पत्नी माद्री को शुल्क देकर खरीद लाने का आदेश देती है। नरेन्द्र कोहली ने यहाँ नारी को उपेक्षित और विवश स्थिति की ओर प्रकाश डालते हुए कुन्ति से कहलवाया है कि- "यदि कभी उसका मन माद्री से ऊब भी गया, तो वह तीसरा विवाह करेगा, लौटकर कुंती के पास क्यों आएगा। यदि दूसरा विवाह करते हुए, उससे किसी ने कुछ नहीं पूछा, तो तीसरा करने पर ही कौन पूछेगा।"[2] पुरुष एक से अधिक विवाह कर सकता था और इस संदर्भ में अपनी पहली पत्नी की राय लेना तक उचित नहीं समझा जाता था।

द्यूत में हारने के बाद पांडवों को तेरह वर्ष का वनवास केलिए जाना पड़ता है। पांडवों के सुख-दुख में सदा कुंती उनके

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 270
2. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 366

साथ रही है किंतु इस बार कुंती उनके साथ वन जाता नहीं चाहती है। जब युधिष्ठिर अपनी माँ से अपने मायके भोजपुर जाने केलिए कहते हैं तब कुंती उस समय की समाज व्यवस्था की ओर निर्देश करती हुई कहती है - "किन्तु विवाह के पश्चात स्त्री का मायके से क्या संबंध? अपने विवाह के पश्चात् मैं ने एक बार भी पलटकर भोजपुर की ओर नहीं देखा। उन्होंने भी मुझे एक बार विदा क्या किया, मुझसे मुक्ति ही पा ली। मेरे किसी सुख-दुख में मुझे कभी स्मरण नहीं किया उन्होंने।"[1] यहाँ कोहलीजी ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि विवाह हो जाने के बाद स्त्री का उसका अपने मायके के साथ केवल औपचारिक संबंध रह जाता है।

संपूर्ण 'महासमर' में नरेन्द्र कोहली ने पुरुष समाज में स्त्रियों की असहाय स्थिति का अंन किया है।

2.8 नारी का शारीरिक शोषण और अत्याचार

नारी की सबसे बडी समस्या है विभिन्न प्रकार का उत्पीड़न। दुर्भाग्य की बात है कि औरतों को घर के बाहर के साथ-साथ घर के भीतर भी यौन उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है। यौन उत्पीड़न से महिलाओं को संरक्षण प्रदान करने केलिए हमारे कानून में विशेष प्रवधान किए गए हैं। कानूनी प्रवधान होने के बाद भी नारी हमेशा यौन उत्पीड़न का शिकार बन जाती है। 'महासमर' में

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 9

द्रौपदी को खुले आम बलात्कार करने का प्रयास किया गया है। द्यूत खेल के उपरांत भरी सभी में दुर्योधन और दुशासन ने द्रौपदी का अपमान किया है। युधिष्ठिर धर्म की बात कहकर इस अन्याय को निस्सहाय से अनदेखा करता है। पाँच पतियों कि पत्नी होने के कारण कर्ण ने द्रौपदी को वेश्या कहा। उपन्यास में चित्रित यह घटना समसामयिक नारी यौन उत्पीड़न की अनेक घटनाओं की याद दिलाती है।

जब राजमाता सत्यवती अंबिका को नियोग के द्वारा संतान प्राप्ती की बात करती हैं तब अंबिका की इच्छा न होते हुए भी वह उसका विरोध नहीं कर पाती और अपनी असमर्थता के बारे में स्वयं कहती है कि -"हे ईश्वर। कैसी दासता दी है तू ने ? राजकुमारी भी बनाया, राजवधू भी। और फिर दासी बना दिया। दासी भी एक स्त्री की जिसके मन में कभी दया नहीं जगती।"[1] हमारा समाज पुरुष-प्रधान है और उसमें पुरुष की इच्छा के अनुसार ही स्त्री को चलना होता है। नारी संपूर्ण रूप से पुरुष पर आधारित मानी गयी है। जब वह एक बार किसी पुरुष के साथ विवाह-बंधन में बँध जाती है तो उसके बाद उसका सारा जीवन अपने पति की इच्छा पर चलता है। पुरुष कुछ भी कर सकता है, वह दूसरा विवाह भी कर सकता है और तीसरा भी। किंतु स्त्री को ऐसा करने का कोई

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 277

अधिकार नहीं है। स्त्री भी इस समाज व्यवस्था को स्वीकार कर सब कुछ सहती रहती है।

स्त्री ने पुत्र का जन्म की अपेक्षा रखी जाती है। द्रुपद की रानी पुत्री को जन्म देकर भी द्रुपद से झूठ बोलती है कि वह पुत्र को जन्म दिया है। वह उसका पालन-पोषण भी लड़के के रूप में ही करती है और उसकी शादी दशार्णराज की पुत्री से करना देती है। प्रत्येक समाज में पुत्र जन्म का अधिक महत्व है । पुत्री जन्म से लोग खुश नहीं होते थे। अपने वंश को आगे बढ़ाने केलिए पुत्र जन्म को आवश्यक समझा जाता है।

इसप्रकार पुरुष समाज द्वारा नारी का शोषण और अत्याचार एक आम बात हो गयी है।

2.9 नारी उपहार की वस्तु

पौराणिक काल में नारी को महज एक उपहार की वस्तु समझा जाता था। उच्च आसन पर आरुढ़ व्यक्ति को खुश करने केलिए उपहार स्वरूप सुन्दरी स्त्री को दी जाती थी। ऐसे उपहार देकर उच्च पद पर आसन्न व्यक्ति के पास अच्छे-बुरे काम भी करवाए जाते थे।

उस समय ऋण से मुक्ति पाने केलिए स्त्रियों को बेचा जाता

था और धनिक वर्ग उनका भरपूर लाभ उठाता था। ग्रामीण लोग प्रायः निर्धन थे। 'महासमर' में शिशुपाल जैसे धनिक व्यक्ति ऋण चुकाने केलिए निर्धन व्यक्तियों को तंग करते है। जल्दी ही ऐसी स्थिति आ जाती है कि आदमी जीवन से ऊब जाता है और ऋण चुकाने में असमर्थ पति अपनी पत्नी को बेच देता है। नरेन्द्र कोहली ने 'कर्म' उपन्यास में ग्रामीण जीनव की ऐसी घटना की ओर संकेत किया है। देवप्रसाद नामक एक ग्रामीण व्यक्ति कुंति से कहता है - "तब शिशुपाल के चेले चाटे सुझाते है कि ऋण से मुक्ति चाहते हो, तो अपनी पत्नी शिशुपाल के हाथ बेच दो। जब पैसे होंगे, छुड़ा लेना। आपको क्या बताऊँ देवी! लोग इतने दुःखी हो चुके होते हैं कि उनकी बात माने जाते हैं। शिशुपाल अनेक स्त्रियों का इसी प्रकार क्रय कर कहीं दूर जाकर बेच आता है।"[1] ऋण से मुक्ति पाने केलिए स्त्री को पशु की तरह बेच दिया जाना, अत्यंत अमानुषिक और घृणित प्रवृत्ति है।

अपनी हैसियत से ज़्यादा पाने केलिए भी स्त्री को एक माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता था। कभी-कभी ऊँचा पद पाने केलिए या नौकरी पाने केलिए भी पुरुष वर्ग अपनी पत्नी या अपनी पुत्री को ऊपरी अमलदार के पास भेजते थे। हस्तिनापुर में एक प्रहरी दूसरी प्रहरी को यही बात समझाते हुए कहता है कि - "तू सचमुच मुर्ख है। एक तेरी ही पत्नी है क्या, या एक तूने ही अग्नि

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 383

की साक्षी में विवाह किया है? सारी हस्तिनपुर में यही हो रहा है। जब राज्य के अधिकारी प्रसन्न ही इन्हीं बातों से होते हों, तो वह करना पड़ेगा न। बडे-बड़े सामंत पंक्तिबद्ध खड़े हैं कि "महाराज! हमारी भेंट स्वीकार कर लो।" और तू क्षुद्र प्रहरी अपने आत्मसम्मान को रो रहा है। तू तो भूखा मरने की ठाने बैठा है।"[1] पुरुष मेधा समाज स्त्री को महज काम सुख की चीज़ मात्र समझते है।

हस्तिनापुर की द्यूत सभा में जब युधिष्ठिर द्यूत खेलने बैठते हैं तो क्रमशः वे अपना धन और राज्य हारते जाते है। उस समय राजाओं के पास दासियाँ भी होती थी, और युधिष्ठिर उस द्यूत सभी में अपनी एक लाख दासियों को भी दाँव पर लगाते हैं और उनको द्यूत में हार जाते हैं। दासियाँ-अक्सर धन के रूप में दाँव पर लगायी जाती थी। युधिष्ठिर द्यूत सभा में अपना सर्वस्व हार जाने के बाद अपनी पत्नी द्रौपदी को भी दाँव पर लगाते हुए कहते है - "मैं द्रौपदी को दाँव पर लगाता हूँ तुम उसे ही मेरा धन समझो।"[2] युधिष्ठिर जैसे धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी स्त्री को धन या वस्तु समझते है तथा दुर्योधन और शकुनी जैसे दुष्ट लोग द्वारा परस्त्रियों पर अधिकार जमाकर खुश होते थे।

पौराणिक काल में ही नहीं बल्कि आज भी पुरुष नारी को सिर्फ उपहार करने की चीज़ मात्र समझते है। पुरुष मेधा समाज

---

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 225
2. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 392

नारी के व्यक्तित्व को नहीं मानते है। नारी सिर्फ उपभोग करने का वस्तु मात्र है। हमारे समाज में नारी की असली हैसियत के बारे में अवगत कराने केलिए नारी संबंधित अनेक समस्याओं को 'महासमर' में कोहलीजी ने उठाया है।

2.10 दहेज प्रथा और विवाह प्रथा

विवाह दो आत्माओं को एकाकार करनेवाला संस्कार है। वह सिर्फ दो आत्माओं का ही नहीं, दो परिवारों का भी संगम करवाता है। लेकिन समकालीन संदर्भ में पैसों केलिए याने की आर्थिक लाभ केलिए बन गयी कारोबार मात्र हो गयी है। कोहली ने इस समकालीन सच्चाई को 'महासमर' में चित्रित किया है। राजा शान्तनु जब दासराज की पुत्री सत्यवती से विवाह करना चाहते हैं तब दासराज उनकी पुरुष सहज दुर्बलता को पकड़कर उससे अपनी पुत्रि केलिए अधिक से अधिक पाने की इच्छा से शर्त रखता है। देवव्रत उनके पिता की इच्छा पूर्ण करने केलिए दासराज को आजीवन अविवाहित रहने का वचन देते हैं और सत्यवती का विवाह शान्तनु से करवाता है। सत्यवती राजा शान्तनु से विवाह करने के पूर्व तपस्वी पराशर को प्रेम करती थी। वह उसके कानीन संतान को भी जन्म देती है, किन्तु वह पराशर से शादी नहीं कर सकती। इस संदर्भ में कोहलीजी ने उस समय के सामाजिक रीति रिवाज़ों की ओर निर्देश करते हुए लिखा है कि "बाबा किसी भी

रूप में इस विवाह केलिए तैयार नहीं होंगे। जीवन की कोई सुख सुविधा नहीं है, उसके पास। होने की कोई संभावना नहीं है।"[1] नरेन्द्र कोहली यहाँ स्पष्ट किया है कि वैयक्तिक प्रेम के स्थान पर आर्थिक प्रबुद्धता को ध्यान में रखकर विवाह किया जाता है।

गांधारी का विवाह भी राजनीतिक धरातल पर ही तय हुआ था। जब मंत्री कणिक गान्धार गए तब उन्होंने भी जन्माध धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारी से करने केलिए गान्धारराज सुबल को राजकीय प्रलोभन देते है। इस संदर्भ में कणिक सुबल से कहते हैं - "राजवंश क्या अपनी संतानों का विवाह व्यक्तिगत सुख-दुख केलिए करते हैं? उसमें कही व्यक्तिगत लाभ हानी की बात होती भी है? आप भली प्रकार जानते है कि राजपरिवारों के संबंध राजनीति से ही परिचालित होते है।"[2] विवाह के अवसर में भी नारी की इच्छा पूछने केलिए कोई तैयार नहीं हो जाता है। अभिभावकों की स्वार्थ लाभ केलिए स्त्री को माध्यम बनाया गया है।

कहीं-कहीं विवाह करने केलिए कन्या पक्ष को दहेज दिया जाता था तो कहीं-कहीं कन्या पक्ष से दहेज लिया भी जाता था। जब भीष्म पांडु की दूसरी पत्नी केलिए शल्यराज के पास पहुँचते है तब वहाँ यह रीति प्रचलित थी कि कन्या पक्ष को शुल्क देकर कन्या खरीदी जाती थी, और उस प्रथा को वे लोग उचित भी

---

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 55
2. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 315

समझते थे। इस संदर्भ में शल्य भीष्म से कहता है - "हम यह मानते हैं कि पिता की संपत्ति का अधिकारी पुत्र है और संतान भी माता-पिता की संपत्ति ही है। अतः उन्हें उसका शुल्क मिलना चाहिए।"[1] यहाँ लेखक ने बताया है कि उस समय कन्या पक्ष से दहेज लिया जाता था और फिर बाद में विवाह होता था, विवाह होने के बाद उसका अपने परिवारवालों के साथ एक पुत्री के रूप में जो संबंध होता था वैसा संबंध नहीं रहता था। उस समय ऐसी ही समाज व्यवस्था चल रहा था।

2.11 नारी का विद्रोही पूर्ण स्वर

पौराणिक युग से आज तक नारी पर कड़े सामाजिक बंधन लगे हुए हैं। अगर वह उसे तोड़ने का प्रयत्न भी करती है तो पुरुष वर्चस्ववादी समाज उसे नीचे की ओर दबाने की कोशिश करतो हा। 'महासमर' में द्रौपदी नारी शक्ति का दीप्त प्रतीक है। जब दुशासन द्वारा खुले राजसभा में उसकी अपमान करने पर वह दृढ़ता एवं साहस के साथ अपने सतीत्व की रक्षा करती है और यही उसकी शक्ति का आधार है। द्रौपदी भारतीय समाज की पीडित और शोषित किंतु संघर्षशील नारी का उत्तम उदाहरण है। पुरुष की कामवासना की शिकार तथा पुरुष के शोषण से त्रस्त नारी का एक दयनीय रूप द्रौपदी में हम देख सकते हैं। अपनी

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -7) पृ. 354

शोषित अवस्था में भी वह पूरी ताकत से शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते है। द्रौपदी में भारतीय स्त्री की संघर्ष प्रियता, उसकी शोषित अवस्था में अपने चरम बिंदु पर दिखाई देती है। पूरे उपन्यास में द्रौपदी सशक्त दृढनिश्चयी व्यक्तित्व की स्वामिनी है।

अज्ञातवास के संदर्भ में द्रौपदी बहुत ही स्वाभिमान के साथ सुदेष्णा की परिचारिका का काम कर रही है। सुदेष्णा की परिचारिका का काम कर रही है। कोहलीजी ने आधुनिक युग में नारी द्वारा घर की परिधि से निकलकर, कोई काम धंधा या नौकरी पेशा करना, नारी मुक्ति और उनके अधिकारों केलिए चलाए जा रहे आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में द्रौपदी को प्रतीकात्मक चरित्र के परिप्रेक्ष्य में द्रौपदी को प्रतीकात्मक चरित्र के रूप में चित्रित किया है। अपनी धैर्य के कारण द्रौपदी का चरित्र उदात्त हो जाता है। जो गलत है उसे गलत कहने में द्रौपदी घबराए अथवा संकुचाते नहीं है। जब कीचक द्रौपदी का आक्रमण करते है तब राजा विराट की ओर से उसे कुछ-न्याय नहीं मिला। राजा के भीरत्व के विरुद्ध वह अपना आक्रोश व्यक्त करती है। "कीचक को धर्म का ज्ञान नहीं है। राजा भी किसी प्रकार धर्मज्ञ नहीं है। जो अधर्मी राजा के पास बैठते है, वे सभासद भी धर्म के ज्ञाता नहीं हैं।"[1] द्रौपदी द्वारा उठाया गया प्रत्येक चरण उनकी दृढनिश्चयी व्यक्तित्व का प्रमाण देता है।

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) पृ. 74

नारी हमेशा राजसत्ता के बंधनों दम घुटता है। जब राजमाता सत्यवती अंबिका से नियोग द्वारा पुत्र जन्म की बात करती हैं तब अंबिका उस वातावरण में भी उस बात का विरोध करती हुई कहती है कि - "मैं आपकी गोशाला की गाय नहीं हूँ। न आपके लिए पौत्र उत्पन्न करने का कोई यन्त्र हूँ।"[1] राजसत्ता के आगे उनका यह विरोध टिक नहीं पाता है फिर भी वह अपना विरोध राजमाता के सामने प्रकट करती है।

शादी के बाद पांडु अपनी दो नववधुओं को छोड़कर आखेट पर जाने की घोषण करते हैं तब कुंती और माद्री दोनों चुपचाप इस अत्याचार को सहन नहीं कर पाती है। कुन्ती सोचती है कि यह रोने का समय नहीं है। उसे अपने पति के इस व्यवहार पर विरोध करना चाहिए। दोनों पांडु के साथ वन जाने का निर्णय लेता है। पांडु उनसे कहता है कि आखेट के लिए स्त्रियों के साथ जाता उसकेलिए असुविधा होगा। तब कुन्ती पांडु से कहती है कि यदि आप और आपके वीर सैनिक कुछ हिस्त्र पशुओं से दो युवतियों की रक्षा नहीं कर सकते तो आपका आखेट पाखंड है। पति को परमेश्वर माननेवाली उस समय की नारी भी विद्रोह कर सकती थी, और वह अपने अधिकार की याद दिलाती हुई विद्रोहपूर्ण स्वर में पांडु से कहती है - "मेरी उद्धण्डता क्षमा कीजिएगा। किंतु मैं ने आपसे कहा न कि हम अपनी समस्याओं का समाधान खोजेंगे। वह साथ रहकर ही

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 253

संभव है। यदि आप प्रासाद में हमारे साथ नहीं रह सकते तो हम वन में आपके साथ रहेंगी। यह हमारा अंतिम निर्णय है।"[1] माद्री भी उसे अपना अन्तिम और दृढ निर्णय मानती है। कुंती और माद्री के इस विद्रोह के सामने पांडु को झुकाना पडता है और वे दोनों को आखेड के समय साथ लेकर चलते है।

'महासमर' की नारी पात्र अपने अधिकारों केलिए लडनेवाली संघर्षशील नारी का प्रतीक है। नारी का संघर्ष पुरुषों के खिलाफ नहीं, बल्की उस वातावरण के विरुद्ध है जिसे बदलते की आवश्यकता है।

2.12 पारिवारिक विघटन

संयुक्त परिवार प्रणाली भारतीय समाज और संस्कृति की रीढ़ रही है। दया, प्रेम, सहानुभूति, निस्वार्थता, सहयोग आदि उदात्त भावनाओं का विकास संयुक्त परिवार में ही संभव है। लेकिन पाश्चात्य शिक्षा के बढ़ते प्रभाव, भोगवादी सभ्यता, औद्योगिकरण एवं विदेशी संस्कृति के प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार टूटकर परिवर्तित होने लगे है। संयुक्त परिवार का विघटन काफी हद तक नैतिक पतन ही है। चाहे कोई भी युग हो जब समाज नैतिक पतन के गर्त में गिरा है।

नरेन्द्र कोहली ने 'महासमर' के माध्यम से यह बताना चाहा

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 394

है कि समाज के पतन का मूल बिन्दु पारिवारिक विघटन में निहित है। शकुनी और गांधारी हस्तिनापुर में कुरुवंश के विनाश केलिए गांधार आए थे। लेकिन शादी के बाद गांधारी पुत्रों और परिवार से प्यार करने लगी। परंतु शकुनी अपने उद्देश्य को भूला नहीं था। उसका एकमात्र लक्ष्य था कुरवंश का नाश। शकुनी का चिंतन है "गांधारी उन कुरुओं की रक्षा करना चाहती थी जिन्होंने उसे अपमानित किया था। वह शायद भूल गयी कि वह गांधारी गांधार राजकन्या है। शायद वह अपने आप को कौरवी समझने लगी है। शकुनि केलिए बस एक ही काम शेष रह गया है। दुर्योधन के हाथ में एक छड़ी पकड़ा देने भर का। मासूम बच्चा जब बिना वजह सर्प को छेडता है जो अनजाने सर्पदंश का शिकार भी होता है।"[1] शकुनी के मन में हमेशा कुरुवंश के प्रति क्रोधाग्नी जलते रहे है। उसने दुर्योधन को नीचता का ही राह सिखा है। उसने दुर्योधन को नीचता का ही राह सिखा है। उसने दुर्योधन के साथ कपट प्यार दिखाकर कुरवंश के नाश केलिए परिश्रम किया है। पांडवों की एकता को भी छिन्न भिन्न करने केलिए शकुनी ने परिश्रम किया था। शकुनी अपने वार्तालाप में युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन केलिए कौन्तेय शब्द का प्रयोग किया है। नकुल और सहदेव को वह माद्रेय कहता और इन पाँचों भाइयों के साथ चर्चा करनी हो तो वह उन्हें पांडव कहता है। इसकी तुलना में वह धृतराष्ट्र के पुत्रों का

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 16

धृतराष्ट्र अथवा गांधारी के नामकरण से नहीं करता। उन्हें कौरव कहता है। इसीसे दुर्योधन आदि को कुरुवंश के सच्चे उत्तराधिकारी साबित करता है। शकुनी पारिवारिक अशांति के लिए हमेशा प्रयत्नरत रहे थे।

रिश्ते-नातों में पत्नी का भाई परिवार केलिए कैसा घातक होता है यह दृश्य कीचक के द्वारा बड़े स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। विराटनगर के राजा ने युधिष्ठिर से कहा "अभी तक ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि कीचक ने मेरा राज्य छीनने का कोई प्रयत्न किया हो, किंतु मेरी सत्ता का हरण उसने अवश्य कर लिया है। वह मेरे अनेक आदेश निरस्त कर देता है। मेरा सभा में उसके विरोध में एक स्वर भी नहीं उठता। मैं स्वयं साहस नहीं कर पाता हूँ कि उसका विरोध कर सकूँ।"[1] विराट नाम मात्र केलिए राजा है वास्तविक सत्ता कीचक जैसे दुष्टों के कब्जे में है। यहाँ कोहलीजी ने रिश्तों -नातों के खोखलेपन को उठाया है।

परिवार विघटन का अर्थ है कि पारिवारिक सदस्यों को एक साथ बाँधनेवाली स्थितियों और क्रियाओं का कमज़ोर हो जाना। परिवार विघटन में पति-पत्नी के संबंधों का टूट जाना जितनी अहमियत रखता है उतनी ही अहमियत बाकी रिश्ते-नातों को भी। रोज़ रोज़ के मनमुटाव और गृहकलह का बच्चों के मन पर

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 371

होनेवाला दुष्परिणाम खंडित व्यक्तित्व को जन्म देता है। परिणामस्वरूप मानवीय संबंधों में अजनबीपन आया है। कोहलीजी की 'महासमर' में इन्हीं मानवीय संबंधों में अजनबीपन और परिवार-विघटन की बड़ी सूक्ष्मता से जाँच-परख हुई है।

देवव्रत ने अपने शैशव में अपने माता-पिता के संबंध में, उनकी गृहस्थी के विषय में जो कुछ जाना और सुना, देखा है, उसके बाद उसके मन में गृहस्थी केलिए कोई विशेष आकर्षण नहीं रह गया था। अपनी माता और पिता का लेशमात्र स्मरण होते ही उनका मन इन संबंधों से मुक्त होने केलइ बेचैन हो जाता है। देवव्रत को शांतनु ने जन्म के बाद कभी नहीं देषा। कभी देखने की कामना नहीं की। देवव्रत परशुराम के आश्रम में ही रहा था। गृहकलह युवापीढ़ी को घर से दूर ले जाता है जहाँ शांति और आपसी प्रेम नहीं वहाँ विरक्ति की भावना जन्म लेती है।

उक्त विवेचन से हमें मालूम होता है कि मनुष्यों की अनंत स्वभाव प्रकृतियों के अनुसार विविध पारिवारिक संबंधों में तनावग्रस्त परिस्थितियों का निर्माण होता है। सिर्फ पति-पत्नी ही नहीं, अन्य पारिवारिक खून के रिश्ते भी स्वार्थ के धरातल पर खोखले साबित हुए हैं और हो रहे हैं। विषय पौराणिक होते हुए भी परिस्थितियाँ समकालीन है।

2.13 परिवारों में वृद्धों की समस्या

शैशव, युवावस्था, एवं वृद्धावस्था मानव-जीवन के तीन महत्वपूर्ण पड़ाव है। वृद्धावस्था जीवन की शाम है। उसी वेला में मन-मस्तिष्क शारीरिक अवयव सब तक जाते है। मन शरीर का साथ नहीं देता। ज़िन्दगी की गति थम सी जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति झुँझलाहट का शिकार हो जाता है।

'महासमर' में वृद्ध जीवन की समस्याओं को भी पिरोया गया है। वृद्ध भी समूह में आना चाहता है। बच्चों के बीच साथ-साथ रहना और काम करना चाहता है, किंतु रिश्ते-नातों की डोर शिथिल हो जाती है। अकेलापन और शारीरिक असमर्थता वृद्धों को समूह से दूर कर देती है। भीष्म को भी यही व्यथा सताती है। भीष्म का चिंतन है - "वार्धक्य का यही तो एक गुण है कि वह कर्म करें न करे, चिंता अवश्य करता है। मुझे सूचना नहीं होगी तो मैं स्वयं को उपेक्षित मानने लगूँगा। बुढ़ापे की सबसे बड़ी पीड़ा अपने अंगों के शिथिल होने की नहीं है पुत्रि। अपने संबंधों के शिथिल होने की होती है। अपने ही परिवार में अनावश्यक और उपेक्षित हो जाने की पीड़ा वृद्धावस्था को असह्य कटुता से भर देती है।"[1] इतना वृद्ध पारिवारिक पृष्ठभूमि होते के नाते भी भीष्म के अकेलापन महसूस हो रहा है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -6) पृ. 83

वृद्धों का एकाकीपन और उपेक्षा उनके दुःख और शोक का मूल कारण है। इसी मनोग्रंथी से धृतराष्ट्र भी गुजर रहे है। धृतराष्ट्र की मानसिक द्वद्व उपन्यास में इसप्रकार चित्रित है कि "धृतराष्ट्र को अच्छी तरह याद है कि जब पांडुपुत्र हस्तिनापुर में थे तो वे अपने पितृत्य को प्रगाम करने प्रतिदिन आते थे और यह दुर्योधन तो जैसे भूल ही गया है कि उसका एक वृद्ध पिता भी है जिसका मन कुछ सोचता है, माँगता है, घबराता है, भयभीत होता है। दुर्योधन समझता है कि अपने पिता को प्रसाद की दासियों के भरोसे छोड़ा जा सकता है। इस अंधे वृद्ध को चाहिए ही क्या? स्वादिष्ट भोजन, अच्छी मदिरा और कुछ युवती दासियाँ। पर इतना तो धृतराष्ट्र के सेवकों को भी उपलब्ध था, किसी मंत्री, सेनानायक, किसी अच्छे व्यापारी, किसी बडे कृषक को भी उपलब्ध था।"[1] धृतराष्ट्र अपनी ज़िन्दगी अपने पुत्र केलिए जिया है। उसी पुत्र का उपेक्षा भाव उसे असहनीय लग रहा है। अपने अभिभावकों के प्रति उपेक्षा भाव वर्तमान समाज में भी हमें देख सकते हैं।

'महासमर' के भाग छह 'प्रच्छन्न' उपन्यास में चित्रित समंग ग्वाले की उपकथा एवं उसका पारिवारिक प्रसंग कोहलीजी की कल्पित मौलिक उद्‌भावनाएँ है। समंग का पुत्र वृद्ध माता-पिता को वन में अकेले छोडकर हस्तिनापुर में बहुत ही खुशी से रहते है। उपन्यास में समंग की पत्नी चपला अपने पुत्र की उपेक्षा का वर्णन

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 177

करती हुई कहती है - "कभी किसी ने सोचा था कि भगवान ऐसी भी संतान को जन्म देंगे जो वृद्ध माता-पिता को असहाय छोड़कर चली जाएगी। रात भर उनको स्मरण कर रोती हूँ। कभी कभी सोचता हूँ कि अपनी बहु का ही झोटा पकड़कर उसे घसीट लाऊँ। वही कुलच्छनी ही जो मेरे पुत्र को अपने मोहजाल में बाँध कर यहां ले आयी और अब न तो लौटने को राजी होती है और न हमें ही अपने साथ रखती है। फिर सोचती हूँ कि इसमें बहु का भी क्या दोष? पुत्र ऐसा कपूत न होता तो बहु का साहस ही कैसा होता कि वह ऐसा सोचती?"[1] युवापीढ़ी वृद्ध माता-पिता को बोझ मानते है। समंग का पारिवारिक प्रसंग उपभोक्तवादी संस्कृति के कारण बदलते नैतिक मूल्यों का अच्छा उदाहरण है।

कोहली ने 'महासमर' में वृद्धावस्था की ज्वलंत समस्याओं जडैसे अकेलापन, शारीरिक असमर्थता आदि को मर्मस्पर्शी रूप में पिरोने का प्रयास किया है।

2.14 अनाथ परित्यक्त बालक

'महासमर' में अनाथ परित्क्त बालकों की अनेक समस्याओं को उठाया गया है। नरेन्द्र कोहली ने पौराणिक पात्रों के माध्यम से अनेक समकालीन मुद्दों की ओर ईशारा किया है। कर्ण कुंती का कानीन पुत्र है। राजपरिवार का अंग होते हुए भी कुंति द्वारा

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 206

परित्यक्त कर्ण को वाँचित अधिकार नहीं मिला है। अपने परित्यक्त नवजात शिशु कर्ण को उसकी युवावस्था में पहचान कर भी उसे स्वीकार करने में कुंती साहस नहीं जुटा पा रही है। पारिवारिक संबंधों के बंधन में कुंती मज़बूर हो जात है। उपन्यास में कुंति का चिंतन इस प्रकार व्यक्त है - "पाँच पांडवों को नहीं मालूम कि कर्ण उनका भाई है। ये नहीं जानते कि वह इनका शत्रु नहीं है, वह तो सामाजिक विडंबना का आखेड, एक अबोध बालक है जो घर से निकलकर गली में धकेल दिया गया है। अपने परिवार के किसी व्यक्ति को अपने निकट न पाकर अपने अकेलेपन और अपनी असहायता में वह गली में फिरनेवाले कुत्तों से मित्रता कर बैठा है। बेचारा नहीं जानता किये कुच्चे हैं, उनमें न मानवता है, न न्याय है, न धर्म और न उदार दृष्टि। कर्ण नहीं जानता कि उनसे वह रोग उसे भी लग जाएगा। वह भी उचित-अनुचित, धर्म-अधर्म, मानवता-अमानवता कुछ भी नहीं पहचानेगा।"[1] नरेन्द्र कोहली यह समकालीन सच्चाई का बयान करते है कि आज भी अनेक अनाथ बालक बुरे लोग के संग में फसजाकर अपनी ज़िन्दगी बरबाद करता है।

जन्मते ही परित्याग की शिकार सिर्फ सत्यवती ही नहीं है, भीष्म भी जन्मते ही माता-पिता द्वारा त्याग दिए गए थे। उनके माता-पिता विरहित पालन-पोषण का प्रभाव आगे चलकर संपूर्म व्यक्तित्व और स्वभाव का चिंतन कोहलीजी ने व्यक्त किया है -

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -6) पृ. 77

"माता-पिता दोनों के स्नेह से उपेक्षित देवव्रत का मनोविज्ञान तमाम प्रश्नों को जन्म देता है। क्या आवश्यकता है उन्हें किसी के प्यार की ? दुःख से बचना है तो उपेक्षाओं से बटना होगा । स्नेह, प्यार और वात्सल्य ये सब समयानुसार ओढ़े गए छल-छद्म है जो दूसरों को भी धोखा देते है और स्वयं अपने लिए भी छलों का प्रसाद खड़ा कर लेते है।"[1] माता-पिता के प्यार और पालन पोषण से वंचित भीष्म कुछ भी रिश्ते-नातों के प्रति उनके मन में नकारात्मक दृष्टिकोण पैदा किया है।

गरीबी, अभाव और शोषण का शिकार एकचक्रा नगरी के बालकों का वर्णन लेखक ने बाल मजदूरी की समस्या को नज़र में रखकर बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। युधिष्ठिर जब बालकों के शिक्षा के बारे में पूछिने पर एक ग्रामीण कहता है "यहाँ के अधिकांश बालक-बालिकाएँ अपनी सीमित क्षमता में असाध्य श्रम कर अपने परिवारों को चलाने में आर्थिक सहयोग करते हैं। कोई खेतों में काम करता है, कोई धनी परिवारों में घरेलू कार्य करता है। यदि ये निर्धन परिवार अपनी संतानों को अध्ययन केलिए शिक्षा-संस्थान में भेज देंगे तो उनकी आय की पूर्ति कैसे होगी।"[2] आज के अनाथ बालकों की स्थिति उपर्युक्त कथन से भिन्न नहीं है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 371
2. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 174

बालमज़दूरी, बालशोषण की अनेक मिलती-जुलती घटनाएँ हम रोज़ ही समाचारपत्रों में पढ़ते और सुनते रहते हैं। अनाथ और परित्यक्त बालकों की कथा और व्यथा समकालीन अनाथ बच्चों के दर्द को जीवित करती है।

2.15 निरक्षरता

किसी भी समाज के सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में शिक्षा को बहुत बड़ी भूमिका निभाना है। सामाजिक विकास में अशिक्षा बडा अभिशाप माना जाता है। कोहली ने 'महासमर' में तत्कालीन शिक्षा संबोधित समस्याओं का चित्रण वर्तमान परिवेश को नज़र में रखकर ही किया है।

वारणावत के ग्रामीण युवकों को अक्षरज्ञान के अभाव में खानमालिक जो लूटते है उससे बचाने के हेतु अर्जुन उन्हें साक्षर बनाना चाहता है। उन्हें शिक्षा की ओर अग्रसर करने का अर्जुन का प्रयत्न सराहनीय है। अर्जुन युवकों से कहता है "मान लो शिक्षित व्यक्ति ब्रह्मचारी शुभबुद्धि ही है। शुभबुद्धी सोचता समझता रहेगा, अपना संगठन बनाता रहेगा। तुम जैसे लोगों से काम करवाता रहेगा। अंततः वह तुमसे एकदम भिन्न कोटि का जीव हो जाएगा। और मानने लगेगा कि वह तुम जैसे लोगों से कहीं श्रेष्ठ है। परिणामतः स्वयं को मनुष्य मनेगा और तुम्हें पशु। तुम्हारा सुख-

दुख उसे स्पर्श भी नहीं करेगा। वह मानेगा कि उसकी सुविधा केलिए मरना खपना तुम्हारा धर्म है।"[1] शिक्षा के द्वारा काफी शोषण से मुक्ति संभव है।

दोषयुक्त शिक्षा पद्धति भी शिक्षा के प्रति उदासीनता का कारण है। युधिष्ठिर और अर्जुन के साथ भीम भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि शिशा के प्रवाह में लाने केलिए इन ग्रामवासियों में आर्थिक स्वालंबन के सबक ही आवश्यक है। ऋषि आचार्य से भीम बोले "बुरा न मानना आचार्य। मुझे लगता है कि ऋषियों-मुनियों के सारे कार्यक्रम, उनका सारा चिंतन अपने आश्रमों तक सीमित है। अब जैसे हमने खनिज के उत्पादन, शोध तथा उससे अन्य वस्तुओं के निर्माण पर आधृत एक नवीन शिक्षाप्रणाली का विकास किया, तो इस निर्धन तथा पिछडे हुए क्षेत्र को उसके माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने में सहायता मिलेगी।"[2] उपन्यास के माध्यम से कोहलीजी यह व्यक्त करना चाहते है कि शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बना देता है।

निरक्षरता के अनेक कारण है। इनमें से एक मुख्य कारण अभिभावकों की लापरवाही ही है। अनुशासन रूपी-नियंत्रण की सबसे पहली डोर माता-पिता के हाथों में होती है। उसके ढीली होते ही बालक दिग्भ्रित होकर युवावस्था में ही ज़िन्दगी बरबाद करता

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -6) पृ. 214
2. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 290

है। 'महासमर' में कोहलीजी ने माता-पिता की लापरवाही के दुष्परिणाणों का सफल अंकन किया है। साम्राट विचित्रवीर्य को राजमाता सत्यवती कृपाचार्य के अनुशासन में नहीं बाँधने दिया। गुरुकुल में राजकुमार अपने मनमानी करता रहा था। विचित्रवीर्य के भविष्य के प्रति कृपाचार्य चिंतित है। वे भीष्म से कहते है "विचित्रवीर्य को यह बोध अधिक है कि वह राजकुमार है, युवराज है और इस हस्तिनापुर का भावी सम्राट है। उसे यह बोध बहुत कम है कि वह मेरा शिष्य है, उसे बहुत कुछ सीखना है, सीखने केलिए विनय और नम्रता अनिवार्य गुण है, उसे स्वयं को मेरा अन्नदाता अधिक समझा गुण है, उसने स्वयं को मेरा अन्नदाता अधिक समझा, शिक्षा कम।"[1] जिस समाज में अध्यापक और गुरू का सम्मान अभिभावक नहीं करेगा उसका अनुकरण ही संतान करता है।

पौराणिक युग में नहीं बल्की आज का युग में भी जनता का शोषण एवं पिछडेपन का कारण अज्ञान एवं अशिक्षा ही है।

2.16 मदिरा का बढ़ते उपयोग

समस्त मानव समाज मादक द्रव्यों के सेवन का निषेध करता है। परंतु दिन प्रतिदिन घातक से घातक मादक द्रव्यों की खोज मनुष्य करता रहता है। मदिरा के सेवन से न सिर्फ सेवन

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 70

करनेवाले व्यक्ति को ही नुकसान होता है, बल्कि समस्त परिवार अस्तव्यस्त हो जाता है। इसके सेवन से आदमी के मानवीय गुण तत्काल समाप्त हो जाते हैं और आदमी पशुवत् व्यवहार करने लगता है। वह अनैतिक-नैतिक, उचित-अनुचित के विवेक से शून्य हो जाता है।

मदिरा के निषेध शारीरिक और चारित्रिक विकास केलिए आवश्यक है। इसी अवधारणा के साथ नरेन्द्र कोहली ने युधिष्ठिर जैसे सत्यवादी धर्मपरायण युवराज के द्वारा मद्यनिषेध के विषय को उजाला दिया है। द्यूत और मदिरा के व्यापार में प्रतिबंध लगाने केलिए युधिष्ठिर धृतराष्ट्र से अपेक्षा रखते है। युधिष्ठिर कहते है "द्यूत प्रजा में लोभ जगाता है। लोभ से उसका विवेक पंगु हो जाता है। ऐसे में जो व्यक्ति मदिरापान कर द्यूतक्रिड़ा में संलग्न होगा, वह अपनी सद्वृत्तियों को नष्ट कर हीन वृत्तियों का क्रीडा-कंदुक बना हुआ होगा। अत; दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए उचित यही है कि राज्य द्यूतगृह और मदिरालय खोलने की अनुमति न दे। जो पदार्थ हमारी प्रजा के मन और आत्मा केलिए घातक है उसका व्यापार कर हमने अपने लिए एक बड़ी राशि प्राप्त कर भी ली तो अंततः वह लाभदायक नहीं है।"[1] युधिष्ठिर के यह कथन समकालीन संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है। मदिरालय को हमारे राज्य में चलाने का अनुमति हम लोग नहीं करना चाहिए।

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग -3) पृ. 20, 21

लेकिन कणिक जैसे मंत्रि मदिरा को प्रोत्साहन देने की बात उठाते है। कणिक धृतराष्ट्र से कहता है "महाराज! युवराज की बात सुनकर यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि वे महान नीतिज्ञ एवं प्रजावत्सल्य शासक है। किंतु महाराज! युवराज ने कदाचित यह नहीं सोचा कि मदिरालय और द्यूतगृह राज्य की आय के कितने बड़े स्रोत है। युवराज चाहते हैं कि मदिरालय और द्यूतगृह बंद कर दिए जाए, ताकि राज्य की आय का एक बहुत बड़ा स्रोत सूख जाए।"[1] आज भी कणिक जैसे राजनीतिज्ञ है जो पैसा केलिए या फिर अपने स्वार्थ भोग केलिए मदिरा का प्रोत्साहन हेतु कार्य चलाता है।

मदिरापन की शिकार एक ग्रामीण अपनी व्यथा युधिष्ठिर से कहता है - "जो काम मैं करता हूँ और जितना काम करना पड़ता है उसके पश्चात् मन और शरीर इतने थक जाते हैं कि किसी मनोरंजन की, सुख के कुछ क्षणों की, प्यार भरे कुछ बोलों की तीव्र इच्छा होने लगती है। किंतु घर लौटते ही किसी न किसी वस्तु का अभाव प्रेत के समान रक्त चूसने लगता है । हमारी आकांक्षाएँ बहुत ऊँची नहीं है, किंतु अपने तथा अपने परिवार केलिए भोजन और वस्त्र भी तो नहीं जुटा पाता अपने पारिश्रमिक में से। बस्ती के बनिए का उधार चुकाकर शेष बची राशि को देखता हूँ तो लगता है कि वह इतनी कम है कि उससे परिवार की

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग -3) पृ. 23

कोई आवश्यकता पूरी नहीं होगी। घर लौटकर वही पुराना झगड़ा उठ खड़ा होगा। सोच-सोचकर जब सिर की नसें टूटने लगती है तो बची हुई राशि की मदिरा पी जाता हूँ।"[1] एक बार मदिरा के चंगुल में फसे तो चाहकर भी उसे तोडा नहीं जा सकता है। इस ग्रामीण के कथन से यह जाहिर है कि मदिरा के दुष्प्रभाव से आदमी शैतान हो जाता है। उसका जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है।

2.17 बेरोज़गारी

आज की ज्वलंत समस्या है बेरोज़गारी। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ और शासन की गलत नीतियों के कारण बेरोज़गारी की समस्या दिन-रात चौगुनी गति से बढ़ती जा रही है। आज के परिवेश में योग्यता का कोई महत्व नहीं रहा है। अयोग्य या तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण व्यक्ति प्रशासनिक अधिकारी हो सकता है। प्रथम श्रेणी की योग्यता रखनेवाला व्यक्ति क्लर्क हो जाता है या नौकरी की तलाश में भटक रहा है। पैसों के बल पर नौकरियाँ और डिग्रियाँ दोनों ही खुलकर खरीदी जा रही है। जिसके पास पैसा नहीं है वह सारी योग्यताओं के बावजूद भी हताश और निराश है। मानसिक तथा शारीरिक यातनाएँ सहते हुए किसी तरह से जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

बेरोज़गारी के इसी समकालीन बोध को नरेन्द्र कोहली ने

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 183

आचार्य द्रोण की बेरोज़गारी की कुंठा के माध्यम से 'महासमर' में अंकित किया है। एक परम शस्त्र विशारद आचार्य को जब बेरोज़गारी के कारण धनाभाव में जो मानसिक, शारीरिक एवं पारिवारिक यातनाएँ सहनी पड़ी है उस पीडा में आज के स्वाभिमान, सुशिक्षित नौजवान की पीडा नज़र आती है। द्रोण दुःखी मन से अपनी पत्नी कृपी से बोले "मेरा परिवार भूखा और कंगाल है। यह विद्या ने क्या दिया मुझे? अपमान और तिरस्कार, अभाव और असुविधाएँ... मुझे विधाता ने जो विद्या दी है उससे बहुत कम में लोग धनाढ्य, शूर-वीर और चक्रवर्ती सम्राट बने बैठे है। और मैं हुँ कि उस विद्या को या तो संचित मात्र करता जा रहा हूँ या फिर निःशुल्क वितरित करता जा रहा हूँ।"[1] नौकरी के अभाव में द्रोणाचार्य तानवग्रस्त ज़िन्दगी जीने केलिए विवश हो जाता है।

बेरोज़गारी के साथ ही साथ एक और कुंठा साथ-साथ चलती है कि व्यक्ति जो कुछ बनना चाहता है वह सारी योग्यता एवं क्षमताएँ होते हुए भी बन नहीं पाता। अनेक प्रकार के वर्ग भेद और आर्थिक मज़बूरियों की दीवार उसके मार्ग को अवरुद्ध करती है। इन्हीं कुंठाओं के बीच जी रही है वर्तमान युवा पीढ़ी और इसी समकालीन बोध को कोहलीजी ने कर्ण के माध्यम से प्रस्तुत किया है। शस्त्र विद्या सीखने केलिए कर्ण जब द्रोणाचार्य के पास जाते है तब द्रोणाचार्य सूतपुत्र कहकर उसे अपमानित किया। और यह

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 116

उपदेश भी देता है कि सारथी-पुत्र को सारथी के रूप में सिर्फ रथनिर्माण, रथसंचालन आदि बातों पर ध्यान दीजिए। कर्ण अचल होकर द्रोण से कहा कि उसे सारथी नहीं योद्धा बनना चाहता है। तब द्रोण बोले - "युद्ध का ज्ञान तुम्हें दिया जाएगा। शस्त्रास्त्रों से परिचय कराया जाएगा। उनके परिचालन की विधियाँ भी सिखाई जाएँगी। तुम चाहो तो सैनिक बन सकते हो, किंतु तुम्हें सेनापति नहीं बनाया जा सकता। उसकेलिए राजा अथवा राजकुमार होना आवश्यक है।"[1] आज भी कर्ण जैसे नौजवान समाजिक बुराइयों के कारण बेरोज़गारी की समस्या इतनी जटिल हो चुकी है कि उसकी किसी भी अन्य समस्या से तुलना नहीं की जा सकती है।

2.18 पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण और उसका नियंत्रण आज के ज़माने का लोकप्रिय नारा बन गया है। लेकिन नारों और नाटकीय प्रचारों से परे अपने पर्यावरण को जानना-समझना, प्रकृति का शोषण व मनमाना दोहन न करके अपने आस-पास के जीव जन्तुओं, मनुष्यों की शांति एवं कल्याण करना ही नरेन्द्र कोहली का मकसद है।

विश्व में ऊर्जा का शक्तिशाली स्रोत परमाणु ऊर्जा है। परमाणु परीक्षणों केलिए ज़्यादातर समुद्रों एवं रेगिस्तानी इलाकों को चुना

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 157

जाता है जहाँ पर परीक्षण से जलीय व स्थलीय जीवों और वनस्पतियों में ये पदार्थ पहुँचते है। इन जीवों एवं वनस्पतियों का उपयोग भोजन के रूप में करने से ये रेडियो एक्टिव पदार्थ एक खाद्य स्तर से दूसरे खाद्य स्तर तक पहुँचते है। आज इस समस्या के समाधान केलिए आवश्यक है कि परमाणु परीक्षणों पर रोक लगाई जाए। 'महासमर' में जब अर्जुन द्वारा दिव्यास्त्रों के परीक्षण करते है तब नारद पृथ्वी पर अवतरित किया और दिव्यास्त्रों पर रोक लगाने का सफल प्रयास व परामर्श दिया है।

अर्जुन द्वारा दिव्यास्त्रों के परीक्षण में असंतुष्टि प्रकट करके नारद बोले "तुम इन दिव्यास्त्रों का परीक्षण से यहाँ की प्रकृति नष्ट होगी। प्राकृतिक संतुलन बिगडेगा। असंख्य जीव-जंतु व्यर्थ ही मारे जाएँगे। तुम्हारा ध्यान इस ओर नहीं गया कि ये दिव्यास्त्र बिना किसी विशिष्ट लक्ष्य के मात्र परीक्षण के लिए नहीं चलाए जाते। इनके प्रयोग का अधिकार तुम्हें केवल उन परिस्थितियों में है जब तुम शत्रुओं में इस प्रकार घिर जाओ कि अपने प्राण बचाने केलिए तुम्हारे पास और कोई मार्ग न हो और उनका प्रयोग आवश्यक हो जाए।"[1] यहाँ नरेन्द्र कोहली यह व्यक्त करना चाहते है कि अपनी निज आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए प्रकृति का दुरुपयोग मन कीजिए।

---

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 323

जंगलों का महत्व प्राकृतिक संतुलन केलिए कितना अधिक है यह जागृति सभी लोगों में होना चाहिए। किंतु मानव ने अपने स्वार्थों के कारण जंगल की निर्दयता से कटाई कर अपने लिए विनाश के साधन जुटा लिए है। किंतु नरेन्द्र कोहली ने पांडवों द्वारा जंगल बचाने का अभियान प्रस्तुत कर इस समस्या के प्रति जागृति दिखाई है। खांडव वन के पुनरुद्धान के संबंध में युधिष्ठिर ने कहा "खांडव वन को ध्वस्त करने का हमें कोई लाभ नहीं है। नगर के निकट वन रहेगा तो वायुमंडल शुद्ध रहेगा। वर्षा अच्छी होगी। पशुओं केलिए गोचर भूमि तथा वनस्पति की सुविधा रहेगी। हमें खांडव वन को नष्ट करने का कोई लाभ नहीं है। हम खांडव वन को इसी प्रकार बनाए रखेंगे।"[1] युधिष्ठिर के यह कथन से कोहली जी यह व्यक्त करना चाहते है कि प्रकृति के संरक्षण हम लोगों का दायित्व है।

निष्कर्ष

मानुष सामाजिक प्राणी है। मनुष्य की अस्मिता को बनाए रखने में भिन्न सामाजिक पहलुओं महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नरेन्द्र कोहली ने महाभारत-कालीन समाज के परिवेश को 'महासमर' में आधुनिक विचार-चिंतन के साथ व्याख्यायित किया है। 'महासमर' में कथानक की दृष्टि से दो राज परिवारों का सत्ता संघर्ष होने के

---

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 52

बावजूद समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण की अभिव्यक्त हुए है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महासमर के समाज को जानते-समझने केलिए घटनाओं के साथ पात्रों-चरित्रों की व्याख्या को भी समझना आवश्यक है। वर्ण व्यवस्था, तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति, राजा-प्रजा संबंध, पारिवारिक समस्याएँ आदि सामाजिक बिंदुओं को जाँच परखा गया है। इन ऐतिहासिक घटनाओं एवं उपाध्यनाओं के माध्यम से सामाजिक मूल्यों का पुनः प्रतिष्ठा कोहली का मुख्य उद्देश्य है।

❖ ❖ ❖

अध्याय तीन

महाभारत पर आधारित नरेन्द्रकोहली के उपन्यासों का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

3.1 प्रस्तावना

संस्कृति' शब्द का अर्थ होता है - संसार, शुद्धता, या परिष्कृत करना। परंपरा से प्राप्त विचार, मूल्य, कला, शिल्प वस्तु तथा आदत संस्कृति के अंग है। आदर्शों, मूल्यों, स्थापनाओं और मान्यताओं के समूह को संस्कृति कहा जा सकता है। संस्कृति के अनुसार ही किसी समाज की जीवन-शैली का निर्माण होता है। इसका संबंध मनुष्य के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक एवं कलागत जीवन के विविध पहलुओं से है। भारतीय दर्शन के अनुसार संस्कृति के पाँच अवयव है - कर्म, दर्शन, इतिहास, वर्ण तथा रीति रिवाज़। आधुनिक हिन्दी उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली ने अपने पौराणिक उपन्यासों के अन्तर्गत महाभारतयुगीन समाज के सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकार डाला है।

3.2 संस्कृति : स्वरूप एवं अवधारणा

'संस्कृति' शब्द आजकल अत्यन्त व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस शब्द की व्याख्या धार्मिक, साहित्यिक एवं इतिहासवेत्ता विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार से की है। संस्कृतज्ञ धार्मिक विद्वानों का विचार है कि 'संस्कृति' शब्द 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से सुट्ट का आगम करके 'क्तन' प्रत्यय लगाकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है संशोधन करना,

सुधारना, उत्तम बनाना, सुन्दर या पूर्ण बनाना अथवा परिष्कार करना। अंग्रेज़ी साहित्य में संस्कृति शब्द का पर्यायवाची 'कल्चर' शब्द माना जाता है। यह 'कल्चर' शब्द लैटिन भाषा के 'कुलतुरा' तथा 'कोलियर' शब्द से निकला है। अतः उसकी अर्थ भी पैदा करना या सुधारना है।

संस्कृति का संबंध मानव के भौतिक अध्यात्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक, दार्शनिक, कलात्मक आदि सभी प्रकार के महत्वपूर्ण विकास एवं जीवन के विविध पहलुओं से है। किसी देश की संस्कृति से उस देश के रहन-सहन अनुभव, जीनव-यापन के ढंग, कला प्रेम, रुचि आदि का बोध होता है।

डॉ. गुलाब राय का मत है कि "संस्कृति शब्द का संबंध संस्कार से है, जिसका अर्थ है संशोधन करना, संस्कृति उत्तम व्यक्ति के भी होते हैं और जाति के भी। किंतु जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं। भाववाचक होने के कारण संस्कृति एक समूह वाचक शब्द है।"[1] मतलब यह है कि संस्कृति का अर्थ मानव जाती को परिष्कृत एवं सभ्य बनाने में निहित है।

रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है "संस्कृति ज़िन्दगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में

1. गुलाबराय - भारतीय संस्कृति की रूपरेखा - पृ. 1

छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते है। हम जिस समाज में पैदा हुए है अथवा जिस प्रकार से हम मिलकर जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है। यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं, वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों केलिए छोड़ जाते है। इसलिए संस्कृति वह चीज़ मानी जाती है जो हमारे सारे जीवन में व्याप्त हुए है, जिसकी रचना-विकास में अनेक सदियों के अनुभव का हाथ है। यही नहीं, बल्कि संस्कृति हमारा पीछा जन्म-जन्मांतर तक करती है।"[1] मतलब संस्कृति गतिशील प्राप्त निरंतर प्रक्रिया है।

संस्कृति की व्याख्या करना या उसे किसी परिभाषा में बाँधना बहुत कठिन है। संस्कृति में ऐसे गुण विद्यमान हैं जो मनुष्य को उसकी प्राकृतिकता से ऊपर उठाकर उसे निरंतर संस्कारित करते रहते है मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही संतुष्ट नहीं हो जाता। वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किंतु इस बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते है। इन्हें संतुष्ट करने केलिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते है। मनुष्य की जिज्ञासा का

1. रामधारी सिंह दिनकर - संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 653

परिणाम धर्म और दर्शन होते है। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वस्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। सुखपूर्वक निवास केलिए सामाजिक और राजनीतिक संघटनों का निर्माण करता है। कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं आदि सब पहलुओं संस्कृति का ही अंग है। समकालीन संदर्भ में संस्कृति की परिचर्चा को विस्तृत दायरे में रखना चाहिए । क्योंकि आज के भूमण्डलीकृत समाज में मनुष्य अपने स्वार्थ लाभ केलिए किसी भी अत्याचार करने में हिचकते नहीं। आज के इस खतरनाक माहौल में भारतीय संस्कृति की अहं भूमिका निभाना है। भारतीय संस्कृति मनुष्य को कुसंस्कार, मोह, दासता, अहं की दुनिया से निकालकर सत्य, न्याय और सौहार्द की दुनिया में ले जाता है। इसी प्रकार मनुष्य को परस्पर सहयोगिता और सामूहिक कल्याण के पवित्र से बाँधना, यही आज हमारे सांस्कृतिक दृष्टि के लक्ष्य होने चाहिए।

3.3 'महासमर' में अभिव्यक्त सांस्कृतिक वैविध्य

'महासमर' में भिन्न-भिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों एक साथ प्रकट हो गयी है। कोहलीजी ने इन सांस्कृतिक पहलुओं को इसलिए अपनाया है कि ताकि मानवीय मूल्यों का उद्धार संभव हो। मनुष्य के जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक की जीवन पद्धती

कुछ सनातन मूल्यों पर निर्भर है। सचमुच ये मूल्य ही मनुष्य को पशुसुलभ धरातल से ऊपर उठाकर उसे मानव बना देता है। आज के भूमण्डलीय समाज में मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने केलिए कोहलीजी ने महाभारतकालीन पृष्ठभूमि को आधार बनाया है। पौराणिक इतिवृत्तों हमे सुसंस्कृत बनाने केलिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । इन संस्कृतियों से हमें बहुत ही सीख मिलते है। इसीसे प्रेरणा पाकर हमें आगे की ओर बढना चाहिए।

3.3.1 सामाजिक संस्कृति

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। वह जनमानस की अन्तर्बाह्य प्रतिछवियों का प्रकाशन करनेवाला ज्ञान-शशि का संचित कोष है, अतः वह किसी देश या काल के संस्कृति के ज्ञान का सर्वाधिक विश्वस्त प्रामाणिक आधार होता है। साहित्यकार खासकर उपन्यासकार अपनी कथा परिधि में किसी एक युग के प्रदेश-विशेष को या समाज-विशेष को जीवन्त करने की कोशिश करता है। इस कोशिश के अन्तर्गत वह समाज के मानव जीवन एवं उसकी विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्ति देना चाहता है। उस समाज-विशेष की सामाजिक या राजनीतिक समस्याओं का वर्णन करते समय उपन्यासकार उसके सांस्कृति जीवन की उपेक्षा नहीं कर सकता। वह उस समाज की विभिन्न जातियों एवं उनके रहन-

सहन, खान-पान, वेशभूषा, संगीत, कला शिक्षा, साहित्य, धर्म आदि अनेकानेक पहलुओं का चित्रांकन करता है, उनसे संबंधित मान्यताओं और समस्याओं को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार उपन्यासकार का लक्ष्य समाज के सांस्कृतिक जीवन का चित्रांकन करना होता है । कोहलीजी ने 'महासमर' में समाज के सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

शिक्षा पद्धति

शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता होती। वह एक ऐसा महत्वपूर्ण साधन है जो किसी भी राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति की दृढ बनाता है। पौराणिक युग में शिक्षा का सविशेष महत्व था। उस समय एक निश्चित स्थान और समय पर शिक्षा दी और पाई जाती थी। खास करके शिक्षा केलिए आश्रमों की व्यवस्था की गई थी।

'महासमर' में राजकुमारों केलिए आश्रम में जाकर शिक्षा पाने की प्रथा का चित्रण है। किन्तु उसमें धीरे-धीरे स्वार्थ वृत्ति प्रविष्ट होती गई। गुरु केलिए जो सम्मान था वह धीरे-धीरे कम होता जा रहा था। राजा शान्तनु के साथ जब सत्यवती का विवाह होता है तो वह अपने संतान के पहले ही उसकी शिक्षा के बारे में

अपना मत प्रस्तुत करती हुई कहती है कि मेरा पुत्र शिक्षा ग्रहण करने केलिए ऋषिकुलों या आश्रमों में नहीं जाएगा। तब शान्तनु उसे समझाते हैं कि क्षत्रिय राजकुमार वनों में जाकर ऋषियों के शिष्यत्व में उनके आश्रमों में ही विद्या ग्रहण करते हैं। यही परिपाटी था। किन्तु अपने स्वार्थ में अंधा सत्यवती शिक्षा संबंधी कोई परिपाटी को स्वीकार नहीं करती है, और कहती है - "परिपाटी विधाता का अंतिम विधान नहीं है। परिपाटी को स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है। उसका संशोधन किया जा सकता है। हम नयी परिपाटी का निर्माण कर सकते है। यदि राजकुमार आश्रम तक जा सकता है, तो गुरू राजमहल तक भी आ सकता है। मेरा पुत्र आश्रम में नहीं जाएगा।"[1] पौराणिक युग में गुरू को शिष्य की उन्नती सबसे प्रमुख थी। लेकिन समकालीन संदर्भ में आकर गुरु में कुछ स्वार्थता दृष्टिगोचर है। समय के साथ-साथ गुरु भी आर्थिक संपन्नता की ओर आकृष्ट होते जाते है। इस समकालीन सच्चाई का बयान कोहलीजी ने 'महासमर' में चित्रित किया है। गुरु द्रोण ने आज तक यश ही कमाया था, किन्तु जब से वे द्रुपद द्वारा अपमानित होते है तो वे भी सोचते हैं कि सिर्फ यश से काम नहीं चलता, जीवन में अगर सुखपूर्वक जीना है तो आर्थिक संपन्नता भी चाहिए, और वे हस्तिनापुर आकर आचार्यत्व ग्रहण करते हो।

---

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 80

जब वे अपनी युद्धशाला में पहले दिन ही प्रवेश करते है तो वे कर्ण को राजकुमारों से भिन्न पाते है और उसका परिचय पूछते है। जब कर्ण अपना परिचय एक सारथी पुत्र के रूप में देता है तो द्रोण उग्र स्वर में उसे कहते है कि तुम नहीं जानते यह वर्ग केवल राजकुमारों का है। तब कर्ण भेदभावपूर्ण शिक्षा प्रणाली का खण्डन करता हुआ द्रोण से कहता है - "गुरुदेव! विद्या का दान, वर्ग के आधार पर नहीं, योग्यता के आधार पर होना चाहिए ज्ञान उनकी संपत्ति है, जो उसे ग्रहण करने की क्षमता रखते है।"[1]

वेशभूषाः श्रृंगार प्रसाधथन

वेशभूषा का संबंध देश की सभ्यता-संस्कृति से होता है, क्योंकी देशगत विभिन्नता के साथ सभ्यता और संस्कृति बदलती है, जिससे वेशभूषा में भी अंतर आ जाता है।

'महासमर' में पुष्पों से श्रृंगार किए जाने के प्रसंग मिलते है। सत्यवती का श्रृंगार श्रृषि पराशर ने पुष्पों से किया था, इस संदर्भ में कोहली जी ने 'बंधन' उपन्यास में लिखा है - "उन्हें पता ही नहीं चला कि वे कब, कहाँ और कितनी देर तैरे। कितनी देर फूलों में रहे। कितने कमल उन्होंने तोडे। कितने कमलों से तपस्वी ने सत्यवती का श्रृंगार किया। सत्यवती के केशों में कमल के फूल गुंथे थे, उसके गले में हार झूम रहे थे। इतने कि उसका वक्ष

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 349

कमलमय हो गया था, उसकी कलाइयों में कमल-वलय थे, उसकी कटि में कमल की करधनी थी, उसके पैरों में कमल की पैजनियाँ थी और वह स्वयं कमल-सरोवर बनी हुई तपस्वी की भुजाओं के कगारों में इठला रही थी। तपस्वी उसे बार-बार प्यार कर रहा था, मेरी पद्म-गन्धा, मेरी पद्म गन्धा...।"[1] प्रेमी और प्रेमिका के बीच की प्यार के बंधन में वेशभूषा और श्रृंगार प्रसाधन की बहुत बडी भूमिका है।

उस समय राणियों के श्रृंगार-प्रसाधन के लिए सैरंध्री नियुक्त की जाती थी। विराट राज्य की रानी सुदेष्णा केलिए सैरंध्री के रूप में द्रौपदी नियुक्त होती है। वह अपने श्रृंगार प्रसाधन का नमूना देते हुए रानी से कहती है -"महारानी यदि आप इस केश सज्जा के साथ अपने कानों में कर्णफूलों के स्थान पर कर्णवलय धारण कर लें तो आपका वयस कम से कम पाँच वर्ण और भी कम हो जाएगा।"[2] सैरंध्री के रूप में कार्य कर रही द्रौपदी को जब रानी सुदेष्णा कीचक के भवन में माधवी लाने केलिए भेजती है तो कीचक उसे आभूषणों का प्रलोभन देकर अपनी बनाना चाहता है। इस संदर्भ में कोहलीजी ने 'प्रच्छन्न' उपन्यास में कीचक से कहलवाया है कि - "मैं अभी दासियों को आज्ञा देता हूँ। वे तुम्हारे लिए सोने का हार लाएँ, शंख की चुँडियाँ लाएँ स्वर्णमय कर्ण फूलों के जोडे लाएँ, मणि, रत्नों के आभूषण लाए, रेश्मी साडियाँ लाए।"[3]

1. नरेन्द्र कोहली - महासमर (बंधन) पृ. 51
2. नरेन्द्र कोहली - महासमर (प्रच्छन्न) पृ. 391
3. नरेन्द्र कोहली - वही - पृ. 453

द्रौपदी की श्रृंगार प्रसाधन का वर्णन 'महासमर' में मिलता है। द्रौपदी श्रृंगार-कर्मियों को बुलाती है । श्रृंगार कर्मियों के तीन दल आते है। कोहली जी ने 'धर्म' उपन्यास में इसका जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया है - "पहला दल श्रृंगार वैद्यों का था। सारे निरीक्षण-परीक्षण के पश्चात् उन्होंने परस्पर विचार-विमर्श किया और तब अनेक औषधियों को आवश्यक घोषित किया है। वैद्यों के सहायकों ने तत्काल वे औषधियाँ प्रस्तुत की और उसी क्षण उनका द्रौपदी को सेवन कराया गया।

दूसरा दल श्रृंगार कलाकारों का था। उन्होंने द्रौपदी के रंग, रूप, आकार इत्यादि को देख, उसके अनुरूप केश-सज्जा, वस्त्रों तथा आभूषणों का प्रस्ताव किया। तीसरा दल प्रसाधन-कर्मियों का था। उन्होंने वैद्यों और कलाकारों से संपूर्ण स्थिति समझ, उनके निर्देशों के अनुसार कार्य आरंभ किया। उन्होंने द्रौपदी को आधी घड़ी तक शुद्ध बाप-स्नान कराया। उसके पश्चात् विभिन्न सुगंधियों से पूरित जल से स्नान कराया। प्रसाधन औषधियों के मर्दन के पश्चात चंदन इत्यादि का लेप हुआ। और चूर्णों इत्यादि के प्रयोग के पश्चात् उनका वास्तविक कार्य आरंभ हुआ। पैर के नखों से लेकर, सिर के केशों तक प्रत्येक अंग का, रंग तथा सुगंध से श्रृंगार हुआ। चेहरे के श्रृंगार का विशेष ध्यान रखा गया। अधरों का

आकार, भौहों, पलकों, भरौनियों की बनावट तथा कपोलों की चिकनाहट पर प्रसाधन कर्मियों ने सबसे अधिक समय लगाया। केश-विन्यास से पहले केशों को धो-पोंछ-सुखाकर, कलाकारों के आयोजन के अनुसार वेणी का श्रृंगार किया गया और उसे पुष्पों से सुशोभित किया गया । तब वस्त्रों और आभूषणों की बारी आयी।"[1] इस प्रकार की जीवंत चित्रण से द्रौपदी हमारे सामने प्रत्यक्ष रूप में आने की अंदाज़ा लग रही है।

मनुष्य की यह वृत्ति है कि वह दूसरों के सामने सुन्दर और मनोहर दिखना चाहता है। द्रौपदी दुर्योधन की रानियों से मिलने जाने का प्रयोजन बताती हुई कहती है कि मिलने का अर्थ होता है अपने वैभव का प्रदर्षन । युधिष्ठिर द्रौपदी से कहते है कि उस श्रृंगार का क्या लाभ है जिससे दूसरे के मन में प्रसन्नता के स्थान पर ईर्ष्या जन्म ले? तब द्रौपदी कहती है - "नारी प्रकृति-धर्मो है। उसे न आप श्रृंगार से रोक सकते है, न प्रदर्शन से, न आत्म-मुग्धता से। वसंत आते ही सारी प्रकृति श्रृंगार कर उठती है। चाहे कोई देखे, या न देखे।"[2]

कोहलीजी ने अपने पौराणिक उपन्यासों में विभिन्न प्रदेशों एवं मानव समुदायों की वेश-भूषा एवं श्रृंगार- प्रसाधनों का उल्लेख

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 351
2. वही - पृ. 370

कर एक युग विशेष को जीवन्त कर दिखाने का सफल प्रयत्न किया है।

खानपान

खान-पान जीवन का अनिवार्य पहलू है। अतः उसका संबंध संस्कृति और सभ्यता से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इतना ही नहीं प्रागैतिहासिक युग से लेकर आज तक मानव जीवन में हुए विकास का अध्ययन खान-पान के आधार पर किया जा सकता है। वह दिन मानव-सभ्यता की चरमोपलब्धि का रहा होगा, जब मनुष्य ने शिकार केलिए औजार बनाना सीखा और कच्चे माँस को भूनकर खाना शुरू किया। आज न मालूम कितने खान-पान के पदार्थ है और न मालूम कितने खाने के ढंग है। अनन्त होने के कारण उनकी गणना नही हो सकती। विभिन्न संस्कृतियों में जन्मे, पढे-लिखे व्यक्तियों के रहन-सहन में जहाँ अन्तर मिलेगा, वही उनके खान-पान में कम विभिन्नता न होगी। उनकी यही विशेषता उन व्यक्तियों की रुचियों, संस्कारों तथा प्रवृत्तियों में विविधता पैदा कर देती है और विविध संस्कृतियों का निर्माण करती है।

'महासमर' में खान-पान के विभिन्न संदर्भ पिरोया गया है। उपन्यास में भोजन में अहेर के मांस का उपयोग किया जाता था

साथ में अन्न और फलों का भी उपयोग किया जाता था। 'अंतराल' उपन्यास में कोहलीजी ने इस संदर्भ में सहदेव से कहलवाया है कि -"वैसे इन दिनों आस-पास के वनों में फलों की कमी नहीं है। वृक्ष फलों के बोझ से लदे पडे हैं। हमारा प्रयत्न है कि अन्न को अभी सुरक्षित रखा जाए और जब तक फल उपलब्ध है, फलाहार ही किया जाए। जो लोग माँसाहारी है उनके लिए वन में अहेर का अभाव नहीं है।"[1] भोजन का इंतज़ाम भी अच्छी तरह से किया जाता था। उस युग में भोजन में हिरण के माँस का प्रयोग किया जाता था। दोपहर के भोजन केलिए अर्जुन काला हिरण का शिकार करता है। इस संदर्भ में कोहली जी ने प्रच्छन्न उपन्यास में लिखा है - "सहसा अर्जुन का ध्यान अनजाने ही चरते हुए निकट आ गए हिरणों के झुण्ड की ओर चला गया। वे वन्य मृग थे। किसी आश्रम के साथ उनका संबंध नहीं लगता था, नहीं तो इस घने वन में वे नहीं आते। उनके आगे-आगे एक आकर्षक काला हिरण था, अर्जुन को ध्यान आया, दोपहर के भोजन का प्रबन्ध भी अभी करना था। उनके अभ्यस्त हाथों ने धनुष पर बाण चढ़ाया और छोड़ दिया।"[2] इससे हमे पता चला कि माँ का भोजन निषिद्ध नहीं है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग- 5) पृ. 355
2. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 127

'महासमर' में स्त्री द्वारा मदिरा का सेवन करने का प्रसंग मिलता है। विराट राज्य की महाराणी सुदेष्णा के भोजन का विवरण करते हुए 'प्रच्छन्न' उपन्यास में लिखा है - "सुदेष्णा भोजन कक्ष में आयी। परिचारिकाओं ने तत्काल भोजन परोस दिया। किन्तु उसे जैसे कुछ खाने की इच्छा ही नहीं थी। आधी घड़ी तक बैठी मधुपान करती रही थी। भोजन के प्रति अनिच्छा जब मधु में डूब गती तो उसने पशु माँ की ओर हाथ बढ़ाया। कदाचित मृग का माँस था! उसने एक बड़ा सा खण्ड उठाया और उसमें दाँत गड़ा दिए।"[1]

राज दरबारों में मदिरा का सेवन किया जाता था। खास प्रदेश से खास प्रकार की मदिरा मंगवाई जाती थी और उसका सेवन किया जाता था। कीचक ने इस ऋतु में खास केकय से माधवी (मदिरा) मंगवाई थी। वह अपनी बहक गया। मैं तो तुम्हें सूचना देने आया था कि केकय से माधवी आयी है। वह अपना शांगलू है न! वह अपने घर गया था। वह जब भी केकय जाता है, तो और कुछ लाए न लाए, मेरे लिए माधवी अवश्य लाता है। जब वर्षों का यह असामयिक समारोह आरंभ हुआ तो वह मार्ग में ही था। वर्षों में इन मार्गों से यात्रा और भी संकटपूर्ण हो जाती है। उसे

---

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग - 6) पृ. 450

मार्ग में एक जाना चाहिए था, किन्तु वह रुका नहीं। उसने सोचा कि इसी ऋतु में तो स्वामी को केकय देश की माधवी मिलनी चाहिए। अब न मिली तो क्या लाभ। वह अपने अश्वों को दौडाता विराटनगर आ पहुँचा और सीधा मेरे प्रसाद में उपस्थिति हुआ। मैं भी समझ गया कि यही तो ऋतु है माधवी की और वह भी केकय की माधवी की।"[1]

कोहली जी ने पूरे एक युग को जीवन्त कर दिखाने केलिए देव, दानव और मानव समुदायों में प्रचलित खान-पान के चित्रण में पूरी सावधानी से काम लिया है। सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ-साथ भोजन की सामग्रियों में भी अनेक सुधार हुए और पौष्टिक आहारों का प्रचलन बढ़। आज विकसित युग में अनंत खाने-पीने की वस्तुएँ काम आती है जिनके नाम गिने नहीं जा सकते। भोजन की अनेक सामग्रियाँ आधुनिक समाज में उपलब्ध है, जिनका अपनी रुचि के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति प्रयोग करता है।

यज्ञ और अनुष्ठान

हमारे देश में यज्ञ-अनुष्ठान की एक लंबी परंपरा प्राप्त होती है। प्राचीन मान्यता के अनुसार लोक कल्याण केलिए यज्ञ कराए जाते थे। 'महासमर' में यज्ञ और अनुष्ठान के अनेक सोदाहरण

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग - 6) पृ. 457

देखने को मिलते है। द्रोण हस्तिनापुर के राजकुमारों को भेज कर द्रुपद को बंदी बनाते है और उनका आधा राज्य छीन कर उन्हें मुक्त करते है। द्रुपद अपने इस अपमान का बदला लेना चाहते हैं। वे इस घटना को किसी भी प्रकार भूल नहीं सकते है। द्रौपदी अपने पिता की मनःस्थिति को अवगत कर यज्ञ की दीक्षा लेने केलिए कहती है। वह कहती है आप अकेले ही क्यों जले। हम सब साथ क्यों न जले। दावाग्नि के समान क्यों जले, यज्ञाग्नि के समान क्यों न जलें । जलें तो एक उद्देश्य केलिए जलें। आद्मदहन हमारा लक्ष्य न हो, शत्रुदहन हमारा गंतव्य हो। तब द्रुपद द्रौपदी को यज्ञ की दीक्षा से अवगत कराते हुए कहतें है - "एक बार यज्ञ-दीक्षित होने का अर्थ होगा कि तुम्हारे जीवन का अपना कोई सुख-दुख, इच्छा अनिच्छा कुछ नहीं रह जाएगा। सब कुछ यज्ञ को समर्पित होगा। तुम नारी नहीं रहोगी, काष्ठ की समिधा हो जाओगी। अब तुम हवन कुण्ड से बाहर रहोगी, काष्ठ का जीवन जीओगी और जब हवन-कुण्ड को समर्पित की जाओगी, तो जलकर अपना अहोभाग्य मानोगी।"[1] यहाँ कोहलीजी ने यह बताना चाहा है कि उस समय अपने प्रतिशोध का बदला लेने केलिए भी यज्ञ का सहारा लिया जाता था।

उपन्यास में राजा अपने साम्राज्य का विस्तार करने-केलिए अलग-अलग प्रकार के यज्ञ करवाते है। खण्डव दाह के पश्चात्

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग - 2) - पृ. 352

कृष्णा भी पाण्डवों को राजसूय यज्ञ करने केलिए कहते है। किंतु धर्मराज युधिष्ठिर कहते है कि पाण्डव दाह के पश्चात् अब हमें किसी का भय नहीं है। वे राजसूय यज्ञ की इच्छा भी प्रकट नहीं करते है। कृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि दुर्योधन हमारे संकट की घड़ी में इन्द्रप्रस्थ पर आक्रमण भी कर सकता है और हमारे शत्रुओं की सहायता भी। तब भी युधिष्ठिर कहते हैं कि हस्तिनापुर में पितामह भीष्म, पितृव्य धृतराष्ट्र, आचार्य द्रोण तथा विदूर काका के होते हुए, दुर्योधन हम पर आक्रमण नही करेगा, और कहते हैं कि ऐसा विश्वास तो क्या, मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। तब कृष्ण जरासंध के रुद्र यज्ञ की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहते है - ऐसी कल्पना मैं भी नहीं करता, किंतु अब आप इस जंबू द्वीप के राजनीतिक परिदृश्य पर एक दृष्टि डालिए। गिरिव्रज में बैठा जरासंध। उसने छयासी मुर्धाभिबिक्त राजाओं को पशुबल से हराकर बंदी कर लिया है। वह कहता है कि रुद्र यज्ञ में वह उनकी बलि देकर महादेव को प्रसन्न करेगा। किसी देवता की पूजा केलिए मनुष्यों के रक्त से करना चाहता है। ऐसे राजा की प्रजा की क्या स्थिति होगी, उसकी कल्पना ही की जा सकती है। जरासंध की पशु शक्ति से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित है। प्रत्येक राजा उसी का अनुकरण करना चाहता है, और आजकल तो घर-घर में राजा हैं। किसी को किसी

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) - पृ. 352

का भय नहीं। धर्म का बंधन मानने की उन्हें आवश्यकता नहीं है। सभी निर्भीक होकर अपना-अपना प्रिया कार्य कर रहे है।"[1] यज्ञ को एक मंगल कार्य मानकर उसका प्रश्रय देते है।

कृष्णा युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ केविए तैयार कर लेते है और जरासंध ने जो रुद्र यज्ञ केलिए छयासी राजाओं को बंदी बना रखा है उनको मुक्त कराने केलिए और जरासंध के वध केलिए भीम और अर्जुन के साथ गिरिव्रज पहुँच जाता है। वहाँ उनको पता चलता है कि जरासंध व्रत दीक्षित होकर बैठा है। भीम कुछ समय के लिए विश्राम करना चाहता है किंतु कृष्ण उसे जरासंध के व्रत दीक्षित होने का रहस्य बताते हुए कहते है - "तुमने सुना नहीं कि जरासंध यज्ञ केलिए व्रत-दीक्षित होकर उपवास कर रहा है। इसका अर्थ है कि उसने बलि केलिए शेष चौदह राजा भी बंदी कर लिए है। यह न हो कि जब तक हम अपनी मंथर गति से उसके निकट पहुँचे, तब तक वह अपने संकल्प के अनुसार से उसके निकट पहुँचे, तब तक वह अपने संकल्प के अनुसार एक सौ क्षत्रिय राजाओं को बलि देकर यज्ञ-भूमि को कलंकित तथा भगवान रुद्र की पूजा को दूषित कर चुका हो। तब उसका वध कर उसे दण्डित तो किया जा सकता है, किंतु बंदी राजाओं को बचाने तथा धर्मराज के लिए उनका समर्थन प्राप्त करने का लक्ष्य पूरा नहीं किया जा

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) - पृ. 352

सकेगा।"[1] उस समय एक ओर जरासंध जैसे राजा यज्ञ के नाम पर दूसरों का अहित करते थे और अपना स्वार्थ साधन। दूसरी ओर युधिष्ठिर जैसे राजा धर्म स्थापना केलिए भी यज्ञ का आयोजन करते थे। जरासंध के वध के बाद कृष्ण ने पाण्डवों से राजसूय यज्ञ करवाया था।

कर्ण दुर्योधन केलिए दिग्विजय करके लौटता है। वह बहुत सारा धन साथ लेकर आता है। जब दुर्योधन अपनी पत्नी कोशिश के सम्मुख उस धन का वितरण करता है तो उसके मन में किसी भी प्रकार की प्रसन्नता दिखाई नहीं देती है। बातचीत से दुर्योधन अनुभव करता है कि पत्नी के मन में युधिष्ठिर का सम्मान अधिक है। वह वहाँ से उठकर गणिका के पास पहुँचता है किंतु गणिका भी उसका मन बहलाने में असमर्थ होती है। वह सारी रात सो नहीं पाता है। जब सुबह कर्ण उसे मिलते केलिए आता है तो दुर्योधन उसे राजसूय यज्ञ करने केलिए प्रेरित करता है। दुर्योधन इस संदर्भ में कहता है - "मैं जानता हूँ कि तुम्हारे जैसा सहायक पाकर मेरि लिए कुछ भी असंभव नहीं है। फिर भी कह रहा हूँ कि मेरा एक मनोरथ पूर्ण करो। मेरे लिए रासूय यज्ञ की व्यवस्था कर दो। मैं ने देखा है कि राजसूय करने के पश्चात चाहे युधिष्ठिर इस समय द्वैतवन में बैठा है, किंतु तब भी उसका सम्मान मुझसे अधिक है।

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) - पृ. 263-264

मेरी पत्नी तक मानती है कि दिग्विजय करने मात्र से, मैं उस महत्व का भागी नहीं हो सकता। अब मेरे लिए एक ही मार्ग है कि मैं भी राजसूय यज्ञ करुँ।"[1] यहाँ उपन्यासकार ने इस ओर इंगित करना चाहा है कि यज्ञ का आयोजन धर्मरक्षा और लोक कल्याण की भावना से भी होते थे और कहीं-कहीं दिखाते और यय़ प्रतटित केलिए भी।

दुर्योधन राजसूय यज्ञ करने केलिए ब्राह्मण को बुलाकर राजसूय यज्ञ आरंभ करने का आदेश देता है। तब वह कहता है कि महाराज धृतराष्ट्र के होते हुए आप राजसूय यज्ञ नहीं कर सकते। तब दुर्योधन कहता है कि तो मैं तुम्हें दक्षिण कैसे दे सकता हूँ ? मुझसे तुम वृत्ति कैसे पा सकते हो? तब वह कहता है - "युवराज आप वैष्णवी यज्ञ करें। आप अपनी वर्तमान स्थिति में भी वैष्णवी यज्ञ कर सकते है, और मैं अपनी दक्षिणा पा सकता हूँ।"[2] यहाँ कोहली जी ने बताना चाहा है कि ब्राह्मण और राजा अपने निजी स्वार्थों केलिए यज्ञ करते थे।

जब वैष्णवी यज्ञ संपन्न होता है तब कर्ण उसको बधाई देते हुए पांडवों के नाश पर फिर से बधाई देने केलिए कहता है। इस संदर्भ में 'प्रच्छन्न' उपन्यास में कर्ण दुर्योधन से कहता है - "भारतश्रेष्ठ!

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग- 6) - पृ. 165
2. वही - पृ. 175

सौभाग्य की बात है कि तुम्हारा वैष्णवी यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हो गया है, और उस उपलक्ष्य में मैं तुम्हारा अभिनंदन कर रहा हूँ। नरश्रेष्ठा यद्यपि तुमने यह यज्ञ भी दिग्विजय करने के पश्चात् ही किया है, फिर भी अभी हमारे शत्रु निःशेष नहीं हुए हैं। जब सम्मुख युद्ध में सारे पाण्डव मारे जाएँगे, उस समय तुम राजसूय का अनुष्ठान करोगे, और उस यज्ञ की सफल संपन्नता पर मैं पुनः इसी प्रकार तुम्हारा अभिनंदन करूँगा।"[1] कोहलीजी ने यहाँ दुर्योधन द्वारा किए गए वैष्णवी यज्ञ को सिर्फ एक आडंबर ही बताया है।

पर्व-त्योहार तथा आमोद-प्रमोद के उपकरण

मानवजाति की आदि प्रवृत्ति है कि उसे उत्सव या समारोह बहुत प्रिय है। जीवन में नीरसता और श्रम की थकावट को दूर करने केलिए मनोरंजन की आवश्यकता होती है। मनोरंजन मानवीय मन और तन में नूतन शक्ति का संचार कर कार्य करने की अद्‌भुत शक्ति प्रदान करता है। पर्व-त्योहारों का जन्म इसलिए हुआ और बाद में उनके साथ धार्मिक संदर्भ जोड दिए गए। त्योहारों पर व्यक्ति कुछ आप-ही-आप हर्षानुभूति करता है। इसका मनोवैज्ञानिक कारण कोई भी हो सकता है। परंतु यह निश्चित है कि हम आनन्दानुभूति में तरह-तरह के आमोद-प्रमोद के साधनों का प्रयोग

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग - 6) - पृ. 187

कर क्रीडादी द्वारा मनोरंजन करते हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधनों का उल्लेख मिलता है जिनसे हम युग-जीवन से तो परिचित होते ही हैं साथ ही युग-संस्कृति का भी पता चलता है।

'महासमर' में आखेट और मनोरंजन के अनेक कार्य देखने को मिलता है। खण्डवप्रस्थ में कृष्ण और अर्जुन आखेट पर जाने की बात करते हैं तब सुभद्रा अर्जुन से कहती है- "अच्छा जाइए। पर देखिए, निरीह मृगों को मत मारिएगा, व्याघ्र और सिंह का आखेट कीजिएगा, ताकि संसार में क्रूरता कम हो।"[1]

द्यूत क्षत्रियों की एक महत्वपूर्ण क्रीडा थी। शकुनी धृतराष्ट्र से कहता है कि क्षत्रियों के तीन ही हो काम है - युद्ध, मृगया और द्यूत। युद्ध और मृगया में तो हिंसा, रक्तपात और विरोध इत्यादि है, पर द्यूत में ऐसा कुछ भी नहीं है। क्षति की भी कोई संभावना नहीं है। रत्ती भर भी जोखम नहीं है। वह तो क्रीडा है, जैसे मृगया में मारा गया अथवा आहत हुआ पशु यह कहने नहीं आता कि उसके प्राण क्यों लिए गए, उसी प्रकार द्यूत में हारा हुआ प्रति पक्षी कभी यह नहीं कहता कि तुम ने मुझे हराया क्यों। उलटे वह हारकर भी गले मिलता है कि तुम्हारे साथ खेलकर बहुत आनंद आया। तब धृतराष्ट्र शकुनी से कहते हैं कि तुम चाहते हो कि दुर्योधन पाण्डवों

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) - पृ. 218

के साथ जुआ खेले? तब शकुनी कहता है - "हाँ! दाँव युधिष्ठिर और हमारे युवराज में हो, किंतु युवराज की ओर से खेलूँगा मैं । और जीजाजी ! जब पासे शकुनी फेंकेगा, तो युवराज के हारने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं पाण्डवों का राज्य, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य.,.. सब कुछ घड़ी दो घड़ी में युवराज के चरणों पर डाल दूँगा। न सेनाएँ चडेंगी, न युद्ध होगा, और न ही युवराज को कोई जोखिम उठाना पडेगा।"[1] यहाँ कोहली यह व्यक्त करना चाहता है कि मनोरंजन का माध्यम स्वार्थ लाभों केलिए उपयोग करता है।

'महासमर' में रानियाँ वनविहार और जलविहार के ज़रिए अपना मनोरंजन करती थी। काशिका भी दुर्योधन से इसी संदर्भ में कहती है - "प्रकृति के सुन्दर परिवेश में ही नारी का सुन्दर श्रृंगार, पुरुष के मन में काम उद्दीप्त करता है, अन्यथा लोग वन विहार और जलविहार को क्यों जाते। यहाँ आप राज-काज में लगे रहते है। प्रजा की समस्याओं का समाधान करते रहते है। युद्धों के अभ्यास और योजनाओं में लगे रहते हैं। इस राजकीय नागरिक परिवेश में, कब आपको अवकाश मिला है, अपनी पत्नियों के यौवन और नारीत्व को देखने का।"[2] रानियाँ वनविहार के बहाने मानसिक तुष्टि एवं ऊब गयी ज़िन्दगी को छटपटा बनाते की कोशिश में लग रही है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) - पृ. 354
2. वही - पृ. 354

'महासमर' में अनेक प्रकार की पर्व-त्योहारों का वर्णन भी मिलता है। विभिन्न राज्यों में अपने-अपने तौर-तरीकों से पर्व त्योहार मनाए जाते थे। कोहली जी ने विराटनगर में मनोरंजन केलिए किए गए माध्यमों का वर्णन करते हुए 'प्रच्छन्न' उपन्यास में लिखा है - "विराटनगर में दो दिन उत्सव ही उत्सव होते रहे। नगर को सजाया गया। निर्धनों को दान दिया गया। प्रजा के मनोरंजन केलिए नृत्य गान और संगीत हुआ। मल्लों ने राजा से पुरस्कार पाए। कलाविदों को राजा ने उपहार दिए। और स्वयं राजा अपने एकांत में माधवी पीते रहे।"[1]

कोहलीजी ने अपने पौराणिक उपन्यास 'महासमर' में यंत्र-तंत्र पर्व-त्योहार एवं भोग-विलास के विभिन्न उपकरणों का चित्रण किया है जो पाठक को एक युग-विशेष की संस्कृति से परिचित कराता है।

लोक संस्कृति

लोक का अर्थ उस जन समाज से है जो विस्तृत रूप में इस पृथ्वी पर फैला हुआ है और जिसमें सभी प्रकार के मनुष्य सम्मिलित हैं। समाज में एक वर्ग को जाने-अनजाने ही गुलामी की ज़िन्दगी भोगता पडता है। आज का साहित्य इन्हें हाशिएकृत वर्ग की संज्ञा

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग - 6) - पृ. 340

से अभिहित करता है। नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'महासमर' जनसामान्य दूसरे शब्दों में कहे तो हाशिएकृत वर्ग की ज़िन्दगी का खुलासा करता है। 'महासमर' वास्तव में लोक-जीवन की धड़कने को समेटती हुई नज़र आता है।

'महासमर' में निरीह ग्रामीण जनता के रीति-रिवाज़ों का सुन्दर चित्रण हमें मिलता है। जब पांडव इंद्रप्रस्थ में बसते थे तब ग्रामीण जनता के साथ उन लोगों के भेंट हुआ। धर्म उपन्यास में इसका चित्रण किया गयाहै। इन लोगों के घर प्रायः छोटे-छोटे और घास फूस के होते हैं। इन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। ग्राम प्रमुख किसानों को ऋण देते थे और उसके बदले में खेत हड़प लेते थे। कोहली जी ने 'धर्म' उपन्यास इसका जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है - "ऐसा है, देवी वैदेही। ग्रामीण बहुत निर्धन है। जी तोड़ परिश्रम करते हैं। उपज भी अच्छी होती है। किंतु कुछ कर के नाम पर, कुछ शुल्क के नाम पर तथा कुछ तंत्र-मंत्र और भगवान के नाम पर-ग्राम प्रमुख तथा उसके सहयोगी हमसे छीन लेते हैं कि हमारे पास दो समय का भोजन भी कठिनाई से बचता है। ऐसे में जब विवाह इत्यादि का अवसर आता है तो वर को कन्या के पिता को देने केलिए धन की अवश्यकता होती है। तब ऋण केलिए ग्राम-प्रमुख के पास जाना पड़ता है। वह हितू के रूप में धन की सहायता

करता है और विवाह करवा देता है। विवाह के पश्चात् ऋण चुकाने के समय तक खेत ग्राम प्रमुख के हो जाते है। अपना पेट पालने केलिए हम अपने ही खेतों में भूधर के दासों के समान कार्य करते है। उससे दो समय का भोजन मिल जाता है।"[1] किसान की अवस्था इतनी दीन है कि इन्हें बडे-बडे साहूकारों तथा ज़मीन्दारों से उधार लेकर उनका गुलाम बनकर रहना पड़ता है।

अंतराल उपन्यास में लूथपतियों द्वारा श्रमिकों के शोषण से अवगत करते हुए कोहलीजी ने चंपू नामक युवक से कहलवाया है कि - "सम्राट । जिन खेतों में धान उपजता है, वे यूथपति की संपत्ति है। उसी प्रकार नारियल के वन किसी-न-किसी मंत्री, सामंत अथवा लूथपति की संपत्ति है। पूरे यूथ द्वारा पकडी गयी मछलियों पर आधिपत्य लूथपति का होता है। जब तक लूथपति अपने लूथ का पालन पितावत् करना था। तब तक बात और थी, किंतु क्रमशः संपत्ति यूथ की न रहकर यूथपति की हो गयी है और यूथ के सदस्य उसके दास हो गए है। वे लूथपति चावल, नारियल तथा मछलियाँ अधिकाधिक मात्रा में राक्षसों के हाथ बेंच देते है और उसके स्थान पर बहुमूल्य वस्त्र तथा मदिरा प्राप्त करते है। परिणाम आपके सामने है - 'निर्धन प्रजा का पेट तक नहीं भरता तथा धनाढ्य वर्ग की रूपसियों केलिए, अपने असंख्य वस्त्रों में से

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 451

पहनने केलिए एक वस्त्र का चुनाव जीवन की सबसे बडी समस्या हो गई है।"[1]

कला

मानव चेतना जिन माध्यमों से अभिव्यंजित होती है उन माध्यमों में कला भी एक माध्यम है। कला द्वारा चेतना का लोकोत्तर स्वरूप दृष्टिगत होता है। 'महासमर' में यत्रतत्र वास्तुकला, नृत्यकला, चित्रकला, संगीतकला आदि का चित्रण दृष्टिगोचर है।

वास्तुकला

वैदिक काल से ही वास्तुकला का प्रारंभ हो गया था 'महासमर' में पाण्डवों को जिन्दा जलाने केलिए लाक्षागृह का निर्माण किया जा रहा था तब पाण्डवों की सुरक्षा केलिए विदुर खनक को भेजते है। जो एक सुरंग खोदकर पांडवों को जिंदा निकल जाने में सहाय रूप होता है। उस समय दुर्ग और प्रसादों की सुरक्षा केलिए ऊँची प्राचीरें और गहरी परिखाएं खोदी जाती थी। इस संदर्भ में पुरोचन जब युधिष्ठिर से खोदी से निकाली गयी मिट्टी के पर्वत के बारे में जानता चाहता है तब युधिष्ठिर कहते है - "इस मिट्टी से परिखा के साथ-साथ एक ऊँची प्राचीर भी बन जाएगी। मिट्टी का उपयोग भी हो जाएगा तथा सुरक्षा का एक और उपकरण भी तैयार हो जाएगा।"[2]

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 118
2. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग -3) पृ. 98

पांडवों को खाण्डवप्रस्थ दिया जाता है। जहाँ वे नगरी स्थापित करना चाहता है। इन्द्र विश्वकर्मों को उनकी सहायता केलिए भेजते है। विश्वकर्मा नगर निर्माण के संदर्भ में कहते हैं - 'मैं नगर का निर्माण आरंभ करता हूँ। मैं पहले प्राचीर नहीं बनाऊँगा। उससे श्रमिकों, लेपकों, तथा वास्तुकारों के आवागमन तथा निर्माण सामग्री लाने में बाधा होती है। वैसे भी जितना समय प्राचीर और उसके द्वार के निर्माण में व्यय होगा, उतना ही आपके प्रसाद के निर्माण में विलंब होगा। मैं सबसे पहले आपके लिए प्रसाद का निर्माण कर देता हूँ, ताकि आपको निवास की कठिनाई न हो। बाद में अन्य भवनों, मार्गों, वाटिकाओं, तडाकों इत्यादि का निर्माण होगा और अंत में प्राचीर तथा नगरद्वार बनाए जाएँगे।"[1] विश्वकर्मा शीघ्र नगर-निर्माण केलिए युधिष्ठिर से कहते है - "मैं आपकी आवश्यकताओं और उपेक्षाओं के अनुरूप नगर का निर्माण कराता हूँ। मेरे सहयोगी वास्तुशिल्पि अपना कार्य पूरी दक्षता से करेंगे, किंतु यदि आप अपनी ओर से कुछ लेपकों तथा श्रमिकों का प्रबंध कर दें तो कार्य में गति आ जाएगी और नगर शीघ्र तैयार हो जाएँगा।"[2] वास्तुकलाकारों की अपनी कला में नैपुण्य हमें उपन्यास में मिलता है।

उस समय अक्षय लेपक भीम के पास आता है और कहता है कि अब देवलोक से विश्वकर्मा थवन-निर्माण केलिए आये हैं,

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 52
2. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 54

अब हमारी ज़रूरत नहीं है। तब भीम उसे कहता है कि तुम एक साधारण लेपक मात्र हो, किंतु इतने जड़ अभी नहीं हुए हो कि कुछ नया सीख न सको। विश्वकर्मा के साथ अनेक वास्तुशिल्पी आए है और वे लोग अपने कार्य में अत्यंत दक्ष है। वे इद्रप्रस्थ का निर्माण करेंगे और देवलोक लौट जाएँगे। ऐसा तो नहीं है कि उसके पश्चात हमारे नगर में फिर कभी भवनों का निर्माण नहीं होगा अथवा हमें अन्य नगरों के निर्माण की आवश्यकता नहीं होगी। अब हर बार न तो विश्वकर्मा आएँगे और न ही देवलोक से वास्तुशिल्पी । तब हमारे नगरों और भवनों का निर्माण कौन करेगा? तुम हमारे नगरों और भवनों का निर्माण कौन करेंगा? तुम वास्तुकला का अध्ययन करो। अक्षय कहता है कि वास्तुकार तो ब्राह्मण होता है और यह सब मुझे सिखाएगा कौन ? तब भीम कहता है - "वास्तुकला तो तुम देव विश्वकर्मा से सीखोंगे और आचरण की शुद्धता धौम्य मुनी से। विश्वकर्मा ने अपने वास्तुशिल्पियों के दल के साथ कार्य करने केलिए हमसे लेपक और श्रमिक मांगे है। मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हें लेखक के रूप में नहीं, प्रशिक्षार्थी के रूप में विश्वकर्मा को सौप दूँ। सीखने की क्षमता तुममें है। श्रम करोगे, तो वास्तुकार बनते तुम्हें देर नहीं लगेगी।"[1] कोहलीजी ने अपने उपन्यासों में यंत्र-तंत्र वास्तुकला के अनेक उल्लेख प्रस्तुत

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 83

किए है जो तद्युगीन समाज की समृद्ध संस्कृति के परिचालक है।

चित्रकला

चित्रकला एक चित्रकार के हृदय की अभिव्यक्ति है। ललित कलाओं में चित्रकला को अमूर्त कला मानी जाती है। महाभारत कालीन समय में मुख्य द्वारों पर चित्रकारी की जाती थी। इस संदर्भ में कोहलीजी ने 'कर्म' उपन्यास में लिखा है कि - "शिव-भवन वस्तुतः अत्यंत भव्य था। उसके कंगूरे दूर से ही दिखाई देते थे और मुख्य द्वारा किसी नगर-द्वारा के ही समान विशाल और विराट था। उस पर सुन्दर और सुसज्जित चित्रकारी की गयी थी। पुरोचन धूम-धूमकर उन्हें भवन दिखाता रहा। सारे भवन में बडे-बडे आकर के मनोहर भित्ति-चित्र बने हुए थे, जिसमें जीवन के विभिन्न भागों का अत्यंत आकर्षक चित्रण था। झरोखों और गवाक्षों पर पत्थर की बनी हुई मनोहर जालियाँ थी।"[1] नरेन्द्र कोहली जी के अभूत पूर्ण वर्णन से चित्र की नज़ारा हमारे सामने उभर कर आ जाते हैं।

संगीत कला

पौराणिक युग में संगीत के माध्यम से लोग मनोरंजन करते थे। संगीत एक ऐसी कला है जो देव-दानव और मानव तो ठीक, पशुओं को भी वशीभूत करती है। पौराणिक युग के राजा-महाराज

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग -6) पृ. 83

एवं अधिकारी वर्ग के मनोरंजन का एकमात्र सशक्त माध्यम था संगीत। कोहलीजी ने 'कर्म' उपन्यास में इस ओर संकेत करते हुए लिखा है - "धृतराष्ट्र न सिंहासन कक्ष में मिला, न शयन-कक्ष में, वह संगीत कक्ष में संगीत-पान कर रहा था। विदुर को उसे भीतर बुला लिया, आओ विदुर! उसने अपनी हथेली उठाकर संकेत किया। संगीत थम था। गायन रुक गया । कक्ष में शांति छा गयी।"[1]

पांडव विराटनगर में अज्ञातवास केलिए छिपे थे तब अर्जुन ने बृहन्नला का वेश धारणा किया था। इस अज्ञातवास में अर्जुन ने संगीत के ज़रिए भक्ति का मार्ग अपनाया था। 'प्रच्छन्न' उपन्यास में कोहलीजी ने संगीत कला का जीवन्त चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि - "उत्तरा के मंडप के निकट आते ही सैरंध्री के श्रवणों से संगीत लहरियाँ ठकरानें लगीं। कैसा शांतिदायक स्वर था। यह स्वर उत्तरा का नहीं था। इस समय तो स्वयं बृहन्नला ही गा रही थी। उत्तरा तथा उसकी सखियाँ शांति से बैठी सुन रही थी। सैरंध्री ने बृहन्नला को गाते हुए पहले भी सुना था जब वह द्रौपदी थी और वह अर्जुन था। उसे वह किन्नर कंठ कहा करती थी, किंतु अर्जुन का स्वर उसे इतना मनोहारी तो कभी नहीं लगा था। न ही पहले कभी वह इतना तन्मय होकर गाया करता था। कितना भी मग्न होकर

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग -3) पृ. 344

गाए, ध्यान तो बहिर्मुखी ही रहता था। सामने बैठे व्यक्ति को और देखता तो था कि वह उसकी कला पर रीझ रहा है अथवा नहीं। अब तो जैसे वह किसी और केलिए गाता ही नहीं था। बस वह था और उसका संगीत। अपनी आत्मा में बैठे परमात्मा को रिझाना था और उसी के लिए गाता था। कदाचित् वह संगीत के मार्ग से भक्ति की चढ़ाई ही चढ़ रहा था। मानो संगीत के माध्यम से समाधि में चला जाता हो। ऐसे वातावरण में कोई उच्छृंखल विचार भी उसके पास नहीं फटक सकता था।"[1] पौराणिक युग में संगीत कला को अपनी अहं भूमिका थी।

नृत्यकला

नृत्यकला हमारी प्राचीन संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। वैदिक काल में भी आकर्षक वस्त्र पहनकर स्त्रियाँ नृत्य करती थीं। नृत्यकला का उल्लेख करते हुए कोहलीजी ने 'धर्म' उपन्यास में लिखा है ... "नृत्य और संगीत की तैयारी की धूम मच गई। तंबुरु की शिष्य नर्तकियाँ नेपथ्य में व्यस्त हो गई। वाद्य-यंत्रों को बांध कर सुर-ताल में लाया गया। कौन क्या गएगा और किस नृत्य में कौन भाग लेगा यह विवाह भी अपने आपमें बहुत प्रबल था।"[2] पौराणिक युग में नृत्य एवं संगीत कला का कितना महत्व था, जनता कलाकारों को कितना महत्व देती थी, यह इस उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है।

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 379
2. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -6) पृ. 235

कोहलीजी ने 'महासमर' में विभिन्न कलाओं की सृष्टि एवं प्रचार-प्रसार का अनेक जगहों पर उल्लेख किया है, जो उन मानव-समाज के कला प्रेम और संस्कृति का परिचालक है।

गीता का उपदेश एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय संस्कृति का आधार ग्रंथ रामायण है तो भारतीय सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन का मुलाधार महाभारत दोनों ग्रंथ पिछले दो हज़ार वर्षों से भारतीय साहित्य के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इन साहित्यिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक महाग्रंथों से भारतीय जीवन-दर्शन, सांस्कृतिक संदर्भ, धर्मनिरपेक्षता का पता चलाता है। महाभारत की अनेक सूक्तियाँ जन-मानस में रची-बसी है।

गीता जिसे संस्कृत वाङ्मय की अमूल्य निधि माना जाता है - वह महाभारत का ही एक महत्वपूर्ण अंश है। महाभारत को आधार बनाकर हिन्दी साहित्य में बहुत सारे ग्रन्थ लिखे गए हैं। उन सभी में धर्म और अध्यात्म का चिंतन सर्वत्र व्याप्त है। 'महासमर' उपन्यास उन्हीं में से एक है। 'महासमर' के सृजन-चिंतन में लेखक ने आध्यात्मिक, धार्मिक चिंतन को व्यक्त हुए कहा - "मुझे लगता है, महाभारत का नायक युधिष्ठिर पूर्णतः अध्यात्मिक चितों है, फिर कृष्ण भी है। इसलिए धर्म और अध्यात्म पर विचार ही उसमें ज़्यादा हुआ है।"[1]

1. नरेन्द्र कोहली - नरेन्द्र कोहली ने कहा - पृ. 86

'महासमर' व्यक्ति और समाज के विकास यात्रा की कथा है। केन्द्र में तो युद्ध है लेकिन इससे पूर्व की वे परिस्थितियाँ भी है जो युद्ध तक ले जाती है जिसमें मानव सुख और शांति हासिल करने की यात्रा शुरु करता है। संपूर्णकथा के नायक युधिष्ठिर है, फिर भी विभिन्न खंडों में अलग-अलग नायक भी उभरते है। हस्तिनपुरी नगर अधिकारों की प्राप्ति के षड्यंत्रों में उलझ जाता है। राजनीति में अधिकार हासिल करने केलिए होती हिंसा, असहाय लोगों की पीड़ा, सतोगुणी राजनीति और तमोन्मुख रजोगुणी राजनीति इसमें अंतर आदि उपन्यास से स्पष्ट होता है। एक तरफ निर्लज्ज भोग, स्वार्थ तथा दूसरी तरफ अनासक्त धर्म संस्थापना के प्रयत्न में दो पक्ष आमने सामने है - यहीं पर होता है कृष्ण का प्रवेश।

'महासमर' में भगवत्गीता का उल्लेख 'प्रत्यक्ष' (भाग-7) में आता है, जिसमें अध्यात्म एवं कर्म-प्रधानता का वर्णन है। लेखक ने भारी भरकम संस्कृत श्लोकों का सहारा न लेते हुए सरल भाषा शैली की प्रयोग करते हुए गीता सार को सुन्दर एवं सहज भाव से उतारा है। नरेन्द्र कोहली ने प्रकृति के 'विराट रूप में जीवन को प्रकृति के अनुकूल बनाने केलिए आध्यात्मिक साधना की बात कही है। व्यक्ति को अपना अहंकार त्याग कर प्रकृति के अनुकूल बनने की चेष्टा करनी चाहिए। 'महासमर' में कृष्ण गीता के उपदेशों के माध्यम से धर्म एवं नीति की सूक्ष्मतम व्याख्या करते

हैं। वे कहते है - "ईश्वर की शक्ति है-प्रकृति। तुम्हारा यह शरीर प्रकृति ने पंचभूतों से निर्मित किया है, इसलिए यह प्रकृति की संपत्ति है । प्रकृति अपने आप में पूर्ण है। उसका विभाजन अथवा सीमांकन, मनुष्य की अपनी सीमा है, प्रकृति की नहीं। यह मनुष्य का अपना भ्रम है। उसका मोह है। इस मोह के कारण तुम में दृष्टिदोष आ गया है, और तुम अपना धर्म देख नहीं पा रहे हो।"[1] लेखक ने इस को स्पष्ट किया है कि जीवन की आवश्यकताएँ तो बहुत थोड़ी-सी है। प्रकृति उन सबकी पूर्ती कर देती है। किन्तु यदि मनुष्य को अपने धर्म से अलग होना पडे, अपनी मर्यादाओं का उल्लंघन करना पडे, व्यक्ति अपने सत्य का पालन न कर सके तो जीवन एक यातना बन जाए। ऐसे समय सत्य की मार्ग को अपना पडता है।

मनुष्य को कला की साधना केलिए अपना स्वर, मन, तन, आत्मा और चरित्र को शुद्ध रखना होता तभी अध्यात्म साधना करने पर साधक को कुछ सिद्धि प्राप्त हो जाती है। 'महासमर' में जिन देवास्त्रों दिव्यास्त्रों की बात कही गई है, वह आध्यात्मिक स्त्री के आधार पर चित्रित है। जिसने लोभ, स्वार्थ, क्रम मोह, अहंकार आदि विकृत मनोविकारों की जिने लिया है और जिसने तृष्णा एवं वासना को जीता है । उसने मृत्यु को भी जीत लिया है। अर्जुन ने किरात की शिव वाणी सुनी -"मैं तुम्हें अपना पाशुपतास्त्र दे रहा हूँ

1. नरेन्द्र कोहली - प्रत्यक्ष (महासमर भाग -7) पृ. 353

किंतु यह बाहरी शत्रुओं से नहीं, अपने आंतरिक विकारों से युद्ध करने केलिए है। इसे ले जा और अपने मन के विकारों से लड़, अपने क्रोध से लड़स अपने अहंकार से लड़, अपने काम से लड़, अपने राग-द्वेष से लड। अपने मन के पशु को पराजित कर उसे नाशकर जब तू पशुपति बन जाएगा, तो तुझे दिव्य जीवन का अनुभव होगा। वह जीवन भोग का नहीं है, आनंद का जीवन है। तेरे भीतर विकार नहीं होंगे तो बाहर तेरे शत्रु भी नहीं होंगे।"[1] भौतिक रूप से तो उन्होंने वे शस्त्रास्त्र उसे नहीं दिए थे। उन्होंने जो कुछ भी दिया था वह उसकी आत्मा ने ही ग्रहण किया था। अतः स्पष्ट है कि आपके नैतिक गुण ही जीवन पथ पर सही मार्गदर्शन करते हैं और धर्म के पथ पर अग्रसर करते हैं।

सेनाओं के मध्य में खडे हुए अर्जुन ने अपने ही सगे संबंधियों एवं गुरुओं के साथ युद्ध करने से इनकार किया। अर्जुन धर्म-अधर्म के मनोवैज्ञानिक द्वंद्व में फसा हुआ था। क्या करे, क्या न करे की जटिल समस्या थी। उसके अनुसार अपने संबंधियों के अपने वंश के विनाश का कारण बनने की अपेक्षा युद्ध-भूमि छोड देना अधिक उचित जान पडता है। यह जीवन का निषेधात्मक पक्ष है जिसे स्पष्टतः उसके अपने 'आत्म' से समर्थन नहीं मिला। 'आत्म' के रहस्यों का श्री कृष्ण के द्वारा उपदेश दिए जाने के पश्चात जब अर्जुन अपने सच्चे 'आत्म' को जान लेता है तो उसे

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 160

ज्ञात होता है जिन्हें वह पहले अपने सगे संबंधी मान रहा था, वास्तव में वे ही उसके शत्रु थे जिनका वध करना उसका कर्तव्य व धर्म था।

आधुनिक संदर्भ में इसका अर्थ है कि प्रत्योक व्यक्ति को अपनी अनौचित्यपूर्म कामनाओं एवं आवेगों से लडना है और मानव समाज को एक नए मुकाम पर पहुँचना है - यही धर्म है। कृष्ण जानते थे कि अर्जुन की निराशा स्थिति क्षणिक मनोवृत्ति है और अंततः उसे युद्ध करना ही होगा। कृष्ण कहते है "तुम्हें शासन करना होगा। समाज का अनुशासन करना होगा। दुष्ट दलन करना होगा। तुम राजनीति से नहीं भाग सकते। राजनीति में रहकर न युद्ध से बच सकते हो न वध से। तुम राज्य केलिए नहीं न्याय केलिए लडोंगे।"[1] कृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि यह युद्ध क्षेत्र है जिसमें तुम्हें 'अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध युद्ध करना है। कोहलीजी ने अन्य स्थान पर 'कर्म' की बडी ही तर्क संगत व्याख्या प्रस्तुत की है। कृष्ण कहते है - "भक्ति, ज्ञान, कर्म सबमें योग है। सब में आसक्ति रहित उद्यम है। अकर्म से ईश्वर कभी प्रसन्न नहीं होता।"[2] कोहलीजी यह भी आह्वान देते है कि कर्म हमेशा निज स्वार्थ से अप्रभावित एवं अछूते रहना है।

आधुनिक समस्याओं के संदर्भ में कह सकते है कि जब

1. नरेन्द्र कोहली - प्रत्यक्ष (महासमर भाग -7) पृ. 350
2. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -6) पृ. 363

कोई व्यक्ति जन हित केलिए किसी प्रयोजन से लड़ता है तो आरंभ में राजनैतिक दबाव उस पर पडता ज़रूर है लेकिन जन-शक्ति एवं निःस्वार्थ भाव उसे विजय अवश्य दिलाता है। कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिए, अगर हम उन्हें अपने जीवन में उतार ले, तो समाज का स्वरूप ही बदल जाए और आज हम जिन समस्याओं से जूझ रहे हैं, वे सब समाप्त हो जाएँ।

निष्कर्ष

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है, किंतु वह बदलता समय के साथ परिवर्तित होती रहती है। दीर्घ परंपरा वाली यह संस्कृति वर्तमान भारत में काफी परिवर्तित दिखाई देती है और यह स्वाभाविक भी है। किंतु प्रत्येक युग में संस्कृति की धरोहर को अपने निजी स्वार्थों केलिए भ्रष्ट और कलुषित करनेवाले तत्व सक्रिय रहते है। वे महाभारतकाल में भी थे और आज भी है। कोहलीजी ने पौराणिक युग की संस्कृति के विघटनकारी तत्वों को इस प्रकार बेनकाब किया है कि पाठक को वर्तमान संस्कृति के संदर्भ में सोचने केलिए मज़बूर कर देते है और इसी में साहित्य की सफलता और सार्थकता निहित है।

❖ ❖ ❖

अध्याय चार

महाभारत पर आधारित नरेन्द्रकोहली के उपन्यासों का राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य

4.1 प्रस्तावना

राजनीति समाज का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी समाज के उत्थान-पतन में उसका विशेष योगदान होता है। विभिन्न प्रकार के शासक तथा भिन्न-भिन्न समय एवं परिवेश के अनुसार राजनीति के अनेक रूप होते हैं। शासक एवं राज्य-कर्मचारियों की स्वार्थ-वृत्ति व सत्ता लोलुपता के कारण इसमें अनेक विकृतियाँ पायी जाती है। स्वार्थपरता, सत्तालोलुपता, भ्रष्टाचार एवं दलबदल की प्रवृत्ति जैसी अनेक बुराइयों ने भारतीय राजनीति को भ्रष्ट, खोखली एवं नीतिविहीन बना दिया है। ये राजनीतिक बुराइयाँ प्राचीन समय से लेकर आज तक की राजनीति में थोडी बहुत मात्रा में दृष्टिगोचर होती रही है। नरेन्द्र कोहली एक ऐसे प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं जिन्होंने युगीन सत्य को पुराणों के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'महासमर' में समकालीन राजनीति की प्रायः सभी बुराईयों का अंकन किया गया है। इन राजनीतिक गतिविधियों को विश्लेषित और व्याख्यायित करना आवश्यक प्रतीत होता है।

4.2. 'महासमर' में राजनीति का स्वरूप

भारतीय पौराणिक आख्यानों में 'महाभारत' आधुनिक संदर्भों में अधिक यथार्थवादी काव्य है। 'महासमर' महाभारत पर आधारित

उपन्यास है इसलिए 'महासमर' की कथा का आरंभ ही सत्ता लोभ से होता है, जो क्रमशः विकसित होते हुए सत्ता केलिए संघर्ष में परिवर्तित होता है।

'महासमर' में राजनीति का स्वरूप एकदम आधुनिक राजनीति के अनुरूप है। इन उपन्यासों में जिन-जिन राजनीतिक पहलुओं से हम गुज़रते है वे सब पुरानी नहीं बल्कि समकालीन राजनीति की ही है। इसप्रकार महाभारत कथा को प्रासंगिक बनाने के पीछे कोहलीजी की आधुनिक सोच है। नरेन्द्र कोहली ने देश के सभी स्तरों पर उभरी भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को 'महासमर' के माध्यम से प्रस्तुत किया है। समकालीन राजनीति के समस्त अस्तव्यस्त पहलु 'महासमर' में दिखाने का लेखक का उद्देश्य यही है कि किसी भी युग की राजनीति का अपराधीकरण उस युग की प्रगति केलिए नहीं, आनेवाले युग-युगांतरों केलिए भी घातक सिद्ध होता है।

'महासमर' में राजनीति के दो पक्ष का प्रस्तुतीकरण है। एक है धर्म पर आधारित राजनीति एवं दूसरा अधर्म पर आधारित राजनीति। धर्म पर आधारित राजनीति के केन्द्र में युधिष्ठिर है जो धर्म, न्याय, नैतिकता से शासन कर रहा है। दूसरा पक्ष दुर्योधन का है। दुर्योधन के शासन में अधर्म एवं छल-छद्म है। वह अनैतिकता और अन्याय की राजनीति कर रहा है।

हमेशा यह कहते आ रहे थे कि महाभारत युद्ध की कथा है। लेकिन 'महासमर' में कोहलीजी यह व्यक्त करते हैं कि वास्तव में यह शस्त्राशस्त्रों का युद्ध नहीं बल्कि हमारी भीतरी और बाहरी द्वन्द्व का युद्ध है। यानी कि धर्म बनाम अधर्म का युद्ध है। हर एक मनुष्य को धर्म के पक्ष में खड़ा होकर विजय हसिल करना चाहिए।

'महासमर' उपन्यास में एक ऐसी राजनीति की कल्पना की गई है, जिसमें धर्म की सारी मीमांसाओं की संभावनाओं का एक साथ प्रकटीकरण हुआ है। 'महासमर' की दृष्टि में राजनीति जीवन की परिपूर्णता है और उसमें वर्णित घटनाएँ मनुष्य की जय-यात्रा का प्रतीक है। सत्य और मानवीयता के धरातल पर खड़ी 'महासमर' की राजनीति मनुष्य को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करने में पूर्णतया सफल है।

4.3 सत्ता का मद एवं सत्तालोलुपता

सत्ताधारी व्यक्ति जब अधिकार सुख से विवेक खो बैठा है तब उसके मन पर मद, मोह, काम, क्रोध का प्रभाव बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में वह करणीय-अकरणीय कर्म के संदर्भ में सोच नहीं पाता है। वह अनुचित और अनैतिक कार्य करने लगता है। पौराणिक युग से आज तक ऐसे अनेक शासकों के उदाहरण मिल जाते हैं जो

सत्ता के मद में कर्तव्य और न्याय से दूर हटकर अधोगति को प्राप्त हुए थे।

'महासमर' उपन्यास में ऐसे अनेक शासक को हम देख सकते हैं जो सत्ता के मद में अपने दायित्वों को भूलकर शासन में मनमानी करते है। ऐसे शासक प्रजा केलिए नहीं बल्कि अपने आप केलिए या फिर अपनी स्वार्थ सिद्धि केलिए शासन कर रहे हैं। धृतराष्ट्र एक ऐसा राजनीतिज्ञ है जो सत्ता का दुरुपयोग अपनी स्वार्थपरक कार्यों केलिए चलाता है। पांडु के हस्तिनापुर से चले जाने के पश्चात् धृतराष्ट्र ने भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य और विशेषतः विदुर की सलाह से राज्य का संचालन किया है। सत्ता के मद में अंधा राजा प्रजा के हित के बारे में सोच भी नहीं सकता और जब कभी कोई उनका हितेच्छु उसे इस कटु सत्य से अवगत कराता है तो वह भी उसे अपना दुश्मन लगता है। धृतराष्ट्र को विदुर यथा समय उसकी गलती का अहसास कराता रहता है किन्तु धृतराष्ट्र को विदुर का यह व्यवहार पसंद नहीं आता है। अन्ततः वह एक दिन विदुर से अपने संबंध तोडने की बात बताते हुए कहता है - "यह बहुत पहले हो जाना चाहिए था, किंतु मैं उसे सदा बचाता आया। अब मैं इसे इसे और सहन नही कर सकता। मैं तुम्हें त्यागता हूँ विदुर। मेरा तुमसे अब कोई संबंध नहीं है। तुम चाहो तो

हस्तिनापुर छोड़कर जा सकते हो। अब मुझे अपना मुख कभी मत दिखाना!"[1] धृतराष्ट्र यों ही चक्षुहीन था और सत्ता मद में वह विवेक भी खो बैठा है।

धृतराष्ट्र को राजा के कर्तव्यों का ज्ञान तो था किंतु अपने पुत्र दुर्योधन के साथ अंधा प्यार होने के कारण उनका विवेक अन्धा हो जाता था और बाध्य होकर दुर्योधन के अन्याय पूर्ण आचरण का समर्थन करने लगता है। सारथि चिरंतन का वध दुर्योधन द्वारा हस्तिनापुर के मुख्य पथ पर सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में हुआ। यह सूचना स्वयं भीष्म ने धृतराष्ट्र को दी। तब दायित्वहीन राजा के समान धृतराष्ट्र प्रत्युत्तर देता है कि किसी ने उसे सूचित नहीं किया है। तब क्रुद्ध होकर भीष्म पुनः बोले "क्या राजा इस प्रतीक्षा में बैठा रहेगा कि कोई आए और उसे सूचित करे कि उसके राज्य में क्या-क्या अपराध हो रहे है ? क्या यह राजा का दायित्व नहीं है कि वह ऐसी व्यवस्था करे कि उसके राज्य में अपराध न हो, हों तो उसकी सूचना राजा को तत्काल मिले और सूचना मिलते ही अपराधी को बंदी कर उसे दंडित करने की प्रक्रिया आरंभ हो जाए।"[2] किंतु धृतराष्ट्र ने एक राजा के दायित्वों को नहीं निभाया। उसने निरंकुश शासक का परिचय दिया। द्यूत का प्रोत्साहन दिया, मदिरा के व्यवसाय को बढ़ावा दिया। अपने मनमानी शासन के

1. नरेन्द्र कोहली - 'अंतराल' (महासमर भाग -6) पृ. 39
2. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 84

माध्यम से धृतराष्ट्र सिद्ध कर देता है कि राजा और राजकुमार ही सर्वोपरी है; जिन्हें प्रजा की सुरक्षा के प्रति कोई दायित्व नहीं है, जिन पर देश और राज्य का कोई विधान लागू नहीं होता। दुर्योधन के पास राजा या युवराज का कोई पद नहीं है। फिर भी धृतराष्ट्र के शासन पर वह इतना क्रूर और निर्भीक हो चुका है कि हत्याओं से संकोच नहीं करता है। धृतराष्ट्र के शासन काल में सारा परिवेश भय और आतंक से ग्रस्त रहा। दुर्योध का विरोध धृतराश्ट्र का विरोध रहा। इसलिए पांड़वों के अलावा और किसी ने उसका विरोध करने का साहस नहीं किया।

धृतराष्ट्र के संरक्षण में दुर्योधन हमेशा अत्याचार करते रहते है। कोई उसे रोकनेवाला नहीं है। शकुनी उसे षड्यंत्रों की रचना करना सिखाता तो कर्ण, अश्वत्थामा आदि मित्रों की सहायता से साधारण प्रजा पर अमल करता है। ये सब अत्याचार दुर्योधन सत्ता के बल पर ही करते है। धर्म के आधार पर राजसत्ता संभालना दुर्योधन की रुचि के विपरीत है। दुर्योधन के सामने राजवैभव का सुख होने के कारण वह हमेशा पांडवों के साथ अन्याय ही कर रहे हैं।

पाँच पांडवों में भीम दुर्योधन का प्रदिद्वन्द्वी रहा था। इसलिए भीम से दुर्योधन को हमेशा जलन एवं कुंठा रही थी। बचपन में

विष देकर भीम की हत्या करने की कोशिश की है। उसे पूरा यकीन था कि उसके पिता का शासन है इसलिए कोई उसे दोषी नहीं ठहराएगा। पूरी सत्ता उन्हीं के कब्जे में है। लेकिन भाग्य भीम का साथ दिया। विष पीकर भी नाग जाति की चिकित्सा के कारण वह बच जाता है। ऐसी अनेक घटनाओं का लेखा-जोखा 'महासमर' में प्रस्तुत है जिसमें दुर्योधन ने शायद ही कोई अवसर ऐसा छोड़ा हो जिससे पांड़वों को कष्ट पहुँचे।

सत्ता के मद ने दुर्योधन को स्वार्थी ईर्ष्यालु, द्वेषी, क्रोधी और अहंकारी बना दिया। दुर्योधन वर्तमान समय के उस राजनीतिक नेता का प्रतीक है जिसके पास संसार का सारा का सारा वैभव, धन-दौलत राजनीतिक शक्ति मौजूद है। इन राजनीतिक प्रभुत्व से साधारण दीन दयालु लोगों के सारे अधिकार छीनना चाहता है।

पौराणिक युग में शासकों की पत्नी भी सत्ता का दुरुपयोग करती थी। वे किसी का आदर सम्मान करना नहीं जानते थे। जब राजा शान्तनु सत्यवती को राजरानी बनाकर लाते हैं तो वह भी सत्ता के मद में उन्माद हो जाती है। वह अपने राजरानी के घमण्ड में राजा शन्तनु की उचित बात को भी स्वीकार नहीं करती है। शन्तनु जब उनके पुत्रों केलिए भीष्म को गुरु बनाने का प्रस्ताव रखते हैं तो वह कहती है कि मैं अपने पुत्रों को उसकी छाया से भी

दूर रखना चाहूँगी। जब शान्तनु इसका कारण जानना चाहते हैं तो वह कहती है - "क्योंकि मैं अपने पुत्रों को भीष्म जैसा त्यागी-संन्यासी नहीं बनाना चाहती। मैं चाहुँगी, मेरे पुत्र राजकुमार बने, सन्यासी नहीं। मैं चाहूँगी कि वे अपना अधिकार त्यागने के स्थान पर अपने अधिकारों केलिए लड मरें। यह संसार जूझ मरनेवाले लोगों का क्षेत्र है। मैं भीष्म जैसे कापुरुष को अपने पुत्रों का गुरु नियुक्त नहीं करुँगी।"[1] यहाँ कोहलीजी ने बताया है कि सत्यवती जैसी नारी सत्ता के मद में अपने परिवार के हित में भी विचार नहीं कर सकती। सत्ता का घमण्ड उसे अंधा बना देता है।

सत्ता के मद में अंधा होनेवाले शासक प्रजा के मुसीबतों और दुःखों को अनदेखा करता है। सिर्फ अपनी भलाई के बारे में सोचता है। सत्ता मोही शासक न्याय से शासन करने के बदले अन्यास से शासन कर दूसरों को हानी पहुँचाते है।

सत्तालोलुप शासक सिंहासन हो या कुर्सी मृत्यु की अंतिम साँस तक छोडना नहीं चाहता है। पूरे 'महासमर' में सत्ता को बनाए रखने केलिए किए गए शासक वर्ग की बुरी हरकतें देखने को मिलती हैं। 'महासमर' के प्रारंभ ही शंतनु की सत्तालोलुपता से शुरु होती है। मृत्यु के नज़दीक पहुँचे शंतनु सत्ता के प्रति प्रबल इच्छा

---

1. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 450

रखता है। 'बंधन' उपन्यास में शंतनु की सत्ता के प्रति मोह कोहली व्यक्त करते है। शंतनु का चिंतन हैः "सत्यवती ने अभी चालीस वर्ष भी पूरे नहीं किए है। उसके सामने पहाड़ सा जीवन है। दो पुत्र, जो पूर्णतः अबोध है। कैसे संभालेगी वह उनको ? संसार पुष्पों की सेज नहीं है। राजसिंहासन तो वस्तु ही ऐसी है जो सोए पशु को न केवल जगा देती है, उसे सक्रिय भी कर देती है। शंतनु नहीं रहेंगे तो कुडुंबी और सहलोगी भी सत्यवती के जीवन के ग्राहक हो जाएँगे। रक्त पिपासु पशु का लोभ। सत्यवती अब भी बहुत सुन्दर है। उसे प्राप्त कर कोई भी राजा अपना सौभाग्य मानेगा।"[1] पदलोलुपता मनुष्य को स्वार्थांध बना देती है। ऐसे लोगों की नज़र में जीवन के सर्वोच्च आदर्शों की कोई कीमत नहीं होती।

आज सारे देश में यही देखने को मिलता है कि सर्वोच्च पदों से लेकर छोटे-छोटे राजकीय नेता तक यही चाहते हैं कि उनके बाद उनकी पत्नी, पुत्र, भाई शासन पर आए। 'महासमर' में भी वैसी ही स्थिति है। धृतराष्ट्र किसी न किसी षड्यंत्र रचकर पांडवों को हस्तिनापुर से दूर रखता है। ताकि शासन उनके और उनके पुत्र के हाथों में सुरक्षित रहे। अंधा धृतराष्ट्र स्वयं तो अनधिकृत तरीके से राजसिंहासन पर बैठा ही है, परंतु नालायक पुत्र को ही युवराज पद में लाने का पूरा प्रयास कर रहा है। धृतराष्ट्र कहते हैं "किंतु यह

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 121

राज्य मेरा था, दृष्टिहीन होने के कारण मुझे नहीं मिला। अब मेरा पुत्र है जो स्वस्थ है, दृष्टिवान है। हस्तिनापुर उसी का है।"[1] यहाँ कोहली जी ने इस कथन से स्पष्ट करना चाहा है कि धृतराष्ट्रको पांडु की अनुपस्थिति में शासन चलाने का भार सौंपा गया था किंतु धृतराष्ट्र ने अधर्म का सहारा लेकर निम्न कोटि के षड्यंत्र रचकर उसे हासिल करने के तमाम प्रयत्न किए थे।

4.4 कूटनीति

राजनीति में कूटनीति न हो यह तो शायद किसी भी युग में संभव नहीं था। हर युग का राजनीतिक इतिहास इस बात का साक्षी है। 'महासमर' में कूटनीति के अनेक प्रसंग मिलते हैं। कोहली ने महाभारत कालीन राजनीति में आए षड्यंत्रों और कूटनीति को समकालीन परिवेश से जोड़ने का स्वाभाविक एवं सफल प्रयास किया है।

'महासमर' में कूटनीतिज्ञ राजनेताओं में सबसे प्रमुख है धृतराष्ट्र। धृतराष्ट्र हमेशा यह चाहते हैं कि पांडव का विनाश हो और अपने पुत्र दुर्योधन का सर्वऐश्वर्य एवं सुख प्राप्त हो। ऐसे स्वार्थ मनोभाव के फलस्वरूप राज्य का विभाजन होता है, जिसमें धृतराष्ट्र की कूटनीतिज्ञता से राज्य के साथ-साथ प्रजा का भी

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 10

विभाजन होता है। आधा राज्य देने के नाम पर पांडवों को ऊसर भूमि खांडवप्रस्थ दिया जाता है। दुर्योधन को राजधानी हस्तिनापुर देकर उनके भोग विलास को और भी बढ़ावा दिया गया है। खांडवप्रस्थ निर्धन और निर्जीव खंडहर है, जहाँ आजीविकामात्र की ही कठिनाई नहीं वरन् अदमनीय शत्रुओं का संकट भी बना हुआ है। लेकिन इसके बावजूद भी युधिष्ठिर खांडवप्रस्थ को अर्जुन और कृष्ण की सहायता संवारते हैं। युधिष्ठिर के सुशासन के फलस्वरूप खांडवप्रस्थ वैभवयुक्त भूमि बन जाता है। बाद में खांडवप्रस्थ का नामकरण होता है इन्द्रप्रस्थ। उपन्यास में इसका वर्णन है - "इन्द्रप्रस्थ अथवा एक नए राज्य का निर्माण पांडवों की प्रशासनिक क्षमता का भी साक्षी है। वस्तुतः भवन और मार्ग तो कोई भी बनवा सकता है, किन्तु राज्य को सुखी और समृद्ध बनाने केलिए किन्हीं और ही गुणों की अपेक्षा होती है।"[1] युधिष्ठिर की न्यायप्रियता और धर्म के कारण राज्य में सुशासन, शान्ति और सुरक्षा है। इन्द्रप्रस्थ अब वैभव से भरपूर राज्य है, जिसमें प्रत्येक वर्ग को समानता का अधिकार प्राप्त है।

'महासमर' की संपूर्ण राजनीति को शकुनी की धूर्त कूटनीति ने प्रभावित किया है। शकुनी एक ऐसा पात्र है जिसकी न दोस्ती अच्छी न दुश्मनी। दुर्योधन को सारे षड्यंत्र का उपदेश शकुनी ही

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 391

देता है। लेकिन इन सभी के पीछे शकुनी का स्वार्थ लाभ रहा था। अपना देश गांधार छोड़कर बहन गांधारी के घर पर वह बेकार नहीं आया है। वह गाँधारों की पराजय का बदला लेने, कौरवों का समूल नाश करने केलिए हस्तिनापुर आए थे। वास्तव में कुरुओं का नाश केलिए शकुनी दुर्योधन का ही इस्तेमाल करता है। वह विषैली साँप बनकर विनाश करने केलिए नियुक्त किया गया था। यह भी उसके पिता की कूटनीति थी अपने दुश्मन कुरओं को मिटाने केलिए। "विदाई के समय पिता ने शकुनी से कहा था, पुत्र! तुझे शकुनी तब मानूँगा जब तू गांधारों की इस पराजय को कौरवों के यम-फांस में परिणत कर दे। संभवतः हमारी पराजय का यह क्षण गाँधारों के अभ्युत्थान के लिए ही आया हो। तुम उसी का प्रयत्न करना। कौरवों के शासनतंत्र में तुम्हारी गति जितनी ही बढाती जाएगी, मुझे उतने ही प्रसन्नता होगी।"[1] हस्तिनापुर के विनाश का एकमेव कारण शकुनी के षड्यंत्र पर आधारित कूटनीति है।

4.5 राजनीतिक अपराधीकरण

महाभारतकालीन राजनीति समकालीन राजनीति के समान राजकीय दोषों और अपराधों से युक्त थी। नरेन्द्र कोहली को आज के राजनीतिक दूषित वातावरण में पौराणिक कथा को फिर से नए

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग- 1) पृ. 319

रूप में लिखने की आवश्यकता महसूस हुई। राजनीतिक नेताओं के आचार मात्र उसके कुल को ही नहीं प्रभावित करते अपितु उनका संबंध राज्य, देश, समाज से जुडा रहता है।

स्त्री का अस्तित्व हमेशा खतरों के घेरे में है, चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र में हो या फिर सामाजिक क्षेत्र में हो। पुरुष अपने राजनीतिक प्रभुत्व के सामर्थ्य में नारी का शोषण करते रहते है। 'महासमर' में नरेन्द्र कोहली ने ऐसे अनेक नारियों की दर्दभरी कहानियाँ प्रस्तुत किया है जिनकी ज़िन्दगी राजनीतिज्ञों के अपराधों से बरबाद हो गई है। चित्रांगद की मृत्यु के बाद विचित्रवीर्य केलिए पत्नी जुटाने का कार्य सत्यवती भीष्म को सौंपती है। भीष्म काशीनाथ की तीन पुत्रियों अंबा, अंबिका, अंबालिका का अपहरण कर लिया है। अंबा सबसे बड़ी थी। उसने विरोध किया और कहा कि वह अन्य किसी से प्रेम करती है इसलिए भीष्म उसे बाँध नहीं सकते। भीष्म ने उसे मुक्त कर दिया परंतु अन्य पुरुष से अपहरण करने की बात कहकर प्रेमी द्वारा अंबा को तिरस्कृत कर दी गयी और आजीवन अपहरण का कलंक लेकर तड़पती रही है। अंबा अपने मन की विह्वलता अंबिका से प्रकट करती है। वह कहती है "क्या नारी होना ही अपने आप में असमर्थता का पर्याय है? क्या पराधीन होना, शोषित होना, कष्ट सहना, चुप रहना यही नारी की नियति

है? मुझे महाराजकुमार भीष्म पर बहुत क्रोध आता है। उन्होंने क्या यह भी प्रतिज्ञा कर रखी है कि संसार में सबको वेट ही पत्नियाँए उपलब्ध कराएँगे? साम्राट शांतनु केलिए भी वे ही पत्नी लायेंगे और सम्राट विचित्रवीर्य केलिए भी। समय से अपना विवाह किया होता तो अपनी संतान होती। किसी केलिए पत्नी जुटाने की चिंता ही न होगी ।

अंबा अपने मन की बात कहकर पुरुषमेधा समाज से उसकी नफरत व्यक्त करती है। नारी अपहरण की अधिकांश घटनाओं के सूत्र संचालक राजसत्ता से जुडे पदाधिकारी और उसके रिश्ते-नातेदार हुआ करते है। क्योंकि वे जानते हैं कि कानून उनकी ताकत के अंतर्गत है। भीष्म तीन कन्याओं के अपहरण को धर्म संगत मानकर बैठते है। लेकिन वे कदापि तीन युवतियों की इच्छाओं के बारे में सोचते नहीं है। उन्हीं को भी शादी के संबंध में अपने अपने सपने होंगे। कोई भी युवती विचित्रवीर्य जैसे आलसी, निकम्मे और मद्यपानी को अपने पति के रूप में स्वीकारना नहीं चाहती है। लेकिन पुरुष मेधा समाज में नारी की इच्छाओं केलिए कोई जगह नहीं है।

भीष्म ने धर्म के नाम पर अधर्म ही किया है। भीष्म के हठ का नतीजा अंबा, अंबिका और अंबालिका को ज़िन्दगी भर में भुगताना पडा। फिर भी किसी ने भीष्म को दोषी नहीं ठहराया है।

ये तीन युवतियाँ उनकी ज़िन्दगी में जो कुछ हुआ वह अपनी नियति समझकर जीते हैं। लेकिन यह स्त्री की नियति नहीं है बल्कि पुरुष मेधा समाज द्वारा बनाई गई बेडियाँ है। ये सब नियंत्रणों को बेडियाँ पहचानकर उसे तोडने की ताकत हर एक स्त्री को होता है। यही है 'महासमर' उपन्यास में ऐसी नारी समस्याओं का चित्रण करते ही कोहली जी का मकसद।

'महासमर' के छठे भाग 'प्रच्छन्न' में कीचक नामक सेनानायक का चित्रण है जो सत्ता को निजी स्वार्थों केलिए दुरुपयोग करते थे। ऐसी परिस्थिति में न राजा सुरक्षित रहता था न प्रजा। विराटनगर में सेनापति कीचक का आतंक दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता था। राजा विराट का कोई अनुशासन नहीं रह गया था। सारी सत्ता सेनापति कीचक के हाथों में थी और वह सत्ता एवं राजसंपत्ति का दुरुपयोग कर रहा था। कीचक अपनी बहन सुदेष्णा की दासी सैरंध्री (द्रौपदी) को उनकी कामवासना का पात्र बनाना चाहता है। कीचक सत्ता के मद में बडी उच्छृंखलता से सुदेष्णा से कहता है - "सैरंध्री को तुमने अपने श्रृंगार केलिए रखा है, किंतु इतना तो तुम भी समझती ही हो कि वह तुम्हारी अपेक्षा मेरे लिए कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। वह मेरे लिए अधिक काम की चीज़ है।"[1] कीचक को राजा और संविधान का कोई खौफ नहीं है।

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग - 6) पृ. 368

कीचक ने सैरंध्री पर बलात्कार करने की कोशिश की। सैरंध्री कीचक से बचकर राजसभा में भागकर आ गयी। कीचक राजा विराट के सामने से सैरंध्री (द्रौपदी) को लात मारी। उसने सैरंध्री का इतना अपमान किया, उसे पीडा दी और उसे किसी ने दंड नहीं दिया। कीचक सत्ता का प्रयोग अमानवीय और अनैतिक कार्यों केलिए करता है। आज भी कीचक जैसे राजनीतिज्ञ हमारे सामने है तो राजकीय अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं।

राजा और उसके सगे संबंधी अधिकारी सभी सत्ता और अधिकार के मद में नारी यौन उत्पीड़न को एक महज सामान्य मनोरंजन की वस्तु समझते हैं । 'महासमर' में ऐसी अनेक घटनाएँ मिलते है जहाँ पुरुषमेधा समाज नारी को सिर्फ शरीर या फिर भोगने की वस्तु समझते हैं। उपन्यास में द्रौपदी के साथ पुरुष मेधा समाज अन्याय ही करते रहते हैं। पाँच पतियों की पत्नी होने के कारण द्रौपदी पुनः पुनः लोगों के अश्लील तानों की शिकार हुई। इसी बात को लेकर कर्ण ने द्रौपती को वेश्या कहा है। द्यूत खेल में सभी संपत्ति खोकर हारने के बाद युधिष्ठिर द्रौपदी को दाँव पर रखा है। युधिष्ठिर में कितने भी सद्‌गुण होने पर भी नारी स्वत्व के संबंध में उनका दृष्टिकोण संकुचित और नकारात्मक है। द्रौपदी को महज एक वस्तु समझकर युधिष्ठिर उसे नीच दुर्योधन के आगे

दाँव पर रखा है। द्यूत के उपरांत भरी सभा में कर्ण, दुर्योधन और दुःशासन ने द्रौपदी का घोर अपमान किया है। दुर्योधन ने काम निमंत्रण किया था, दुःशासन ने उसे निर्वस्त्र करने की कोशिश की थी। द्रौपदी की निंदा करते हुए कर्ण ने कहा "द्रौपदी कुलवधु नहीं है। पाँच पतियों की भार्या कुलवधु कैसे हो सकती है ? वह कुलटा है। वह वेश्या है। उसे चाहिए कि अब वह अपने हारे हुए इन दास पतियों को त्यागकर अपने लिए कोई नया पुरुष खोज ले। दुःशासन ! तुम पांडवों के सामने इस वेश्या के भी वस्त्र उतार, उसे निर्वस्त्र कर दो।"[1] दुर्योधन की वासना को कर्ण के वाक्य से बल मिला। वह अपनी जंधा से वस्त्र हटा दिया और द्रौपदी को अपनी जंघा पर बैठने का निमंत्रण दिया। द्रौपदी को दी गयी यह पीडा वह आजीवन भूल नहीं पायी।

समकालीन राजनीति में भी यह सत्य है कि सत्ता और शक्ति का नशा व्यक्ति को राक्षस बना देता है। इस नशा का दुष्परिणाम सबसे ज़्यादा नारी को ही भुगताना पडा है। नारी को पुरुष मेधा समाज अबला और असहाय समझते हैं। पुरुष यह सोचता है कि स्त्री सभी अन्याय को सहन करेगी। स्त्री पर अन्याय करते पर कोई पूछनेवाला नहीं होंगे। उपन्यास में नारी समस्याओं को चित्रित करके कोहलीजी यह आह्वान नारी वर्ग को देते हैं कि जो कुछ

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) - पृ. 411

अन्याय नारी पर हो रही है उन सबको पूरी ताकत से प्रतिरोध करना है। पुरुष समाज यह दिखाना है कि नारी अबला नहीं है। कोई उसे परास्त नहीं कर देंगे।

4.6 राजनीतिक दायित्व हीनता

राजपुरुषों के आचार मात्र उसके कुल को ही नहीं प्रभावित करते बल्कि उनके देश और संबंधित राजनीतिक समाज को भी प्रभावित करते है। अपने दायित्व का निर्वाह करने केलिए शासक को अपनी इच्छाओं का दमन करना पडता है।

'महासमर' में ऐसी अनेक घटनाओं का चित्रण है जिसमें शासन की व्यवस्था भलि-भाँति नहीं चल रहा है। पूरा हस्तिनापुर धृतराष्ट्र के शासन से दम घुटता है। प्रजा के कल्याण के संबंध में वे ज़रा भी चिंतित नहीं है। उनके लिए सब कुछ अपने पुत्र की अधिकार प्राप्ति है। कुरु साम्राज्य में पांडु की मृत्यु के उपरांत धृतराष्ट्र अपने को पूर्ण अधिकारप्राप्त शासक समझने लगा था। भीष्म और विदुर दोनों ही उन्हें उसी रूप में मान्यता भी देने लगे थे। इसी के साथ धृतराष्ट्र की अदम्य इच्छा थी कि युधिष्टिर का युवराज पद भीष्म और विदुर की सहमति से दुर्योधन को किसी तरह मिल जाए। जिस दिन ऋषियों ने पांडु के पाँचों पुत्रों और राजमाता कुंति को हस्तिनापुर राजमहल में पहुँचाया था उसी दिन

भीष्म को युधिष्टिर के अभिषेक केलिए विदुर को आदेश देना चाहिए था। किंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। यह वह राजनीतिक बिंदु है जहाँ पर हस्तिनापुर के राजमहल में उत्तराधिकार संबंधी विवाद जन्म लेता है। उन्होंने अपने राजनीतिक दायित्व का निर्वहण न करके उत्तराधिकार के प्रश्न को सबसे सामने पेश किया था। उनकी यह दायित्वहीनता किसी स्वस्थ राजनीतिक चिंतन का द्योतक नहीं है।

युधिष्ठिर के राज्याभिषेक की तत्काल कोई कार्यवाही न किए जाने का लाभ धृतराष्ट्र और उनके पुत्र दुर्योधन आदि को मिला । वह अपने पुत्र दुर्योधन के माध्यम से पांडवों के विनाश केलिए षड्यंत्र रचते रहे है। राजपद केलिए अनेक प्रकार के षड्यंत्र अति प्राचीन काल से आज तक चलते आ रहे हैं। पुत्रमोह में अंधा धृतराष्ट्र संपूर्ण राजनीति को चकनाचूर करते है।

राजकीय नेताओं की, सम्राटों की दायित्वहीनता का दुष्परिणाम आम जनता को भुगतने पडता है। वारणावत अन्न अग्निकांड से बच जाने के उपरांत पांडवों ने बहुत समय जंगलों में अज्ञात रहकर बिताया है। दुर्योधन से छिप जाने केलिए वनवासी संन्यासियों के वेश में पांडव द्रौपदी के स्वयंवर में शामिल हुए है। उसी समय उन्हें साधारण जनता के बीच बैठना पड़ा। आम जनता की चर्चाएँ उन्हें

सुनने को मिली जिसमें राजपरिवारों के प्रति जनता की घृणा और सच्चाई का बयान है। स्वयंवर में सम्मिलित राजाओं के बारे में एक ब्राह्मण अपने साथी को समझ रहा था "जो सामने दिखाई देता है वही सत्य नहीं है। कई बार देखा गया है कि मलिन आत्माओं को छिपाने केलिए चमकीला और भड़कीला वेश धारण किया जाता है और मलिन वेश में एक से एक उज्वल, द्युतिमान आत्माएँ मिल जाती है।"[1] यहाँ कोहली ने समकालीन राजनीतिज्ञों के खोखलेपन का पोल खोलकर रखा है।

राजनीतिज्ञों की दायित्वहीनता के चक्कर में आम जनता फँस जाते हैं। ऐसी एक घटना का अंकन 'धर्म' उपन्यास में कोहलीजी ने किया है। युधिष्ठिर के नेतृत्व में पांडव इन्द्रप्रस्थ में धर्मराज्य की स्थापना की शुरुआत करते है। युधिष्ठिर आने से पहले वहाँ शासन जैसा कुछ नहीं था। चोरी करने के जुल्म में एक लेखक को पकड़ा गया है। अपनी दयनीय ज़िन्दगी के बारे में लेपक युधिष्ठिर से कहता है - "यहाँ सुशासन होता तो मेरी ही समान यहाँ सहस्त्रों की ऐसी दुर्गति क्यों होती?"[2] यहाँ कोहलीजी यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि राजनीतिज्ञों का निरंकुश शासन जनता को अपराध करने को प्रेरित करता है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग- 3) - पृ. 290
2. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग-6) - पृ. 187

हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र नाम मात्र केलिए राजा है। वास्तविक सत्ता और शासन दुर्योधन के हाथों में है। दुर्योधन सत्ता और संपत्ति के मद में राज्य संपत्ति का खुलकर भोग और ऐश्वर्य में डूबा रहता है। दुर्योधन ने अपने मित्र कर्ण को अंग देश का संपूर्ण राज्य दे दिया है। यह भी दायित्वहीनता ही है। यह राष्ट्रीय संपत्ति का खुला दुरुपयोग है।

दायित्वहीन राजनेता देश केलिए अभिशाप है राजनीतिज्ञ अपने निरंकुश शासन से प्रजा को विपत्तियों के जाल बिछता है। जो शासक अपने प्रजा का रक्षक बनना चाहिए था वे ही अपने राजकीय अधिकारों का दुरुपयोग करके प्रजा का भक्षक रह जाता है।

4.7 राजनीतिक बदचलन

आजकल शासन के केन्द्र में गुंडे लोगों का जमावड़ा है। ये लोग सत्ता का प्रयोग अमानवीय और अनैतिक कार्यों केलिए कर रहे हैं। वे लोग अपनी ही जीत या फिर अन्य स्वार्थ लोभ केलिए बलप्रयोग से सारी जनता का शोषण कर रहे हैं। ऐसी समकालीन सच्चाई का बयान नरेन्द्र कोहली 'महासमर' उपन्यास में दिखाते हैं।

'महासमर' में दो बातों की ओर विशेष ध्यान आकृष्ट होता

है। एक तो राजनीति का अधिक से अधिक उपराधीकरण और दूसरे अपराधियों का सत्ता के केन्द्र में आ जाना। राजा शंतनु की मृत्यु के पश्चात् ही हस्तिनापुर में गुंडाशाही का प्रवर्तन हो चुका था। अहंकारी और संस्कारविहीन चित्रांगद के शासनकाल से ही कुरु साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया था। महामंत्री ने भीष्म से राजकीय स्थिति के दर्शन होते हैं। महामंत्री बोले "किसी वयोवृद्ध, किसी तपस्वी, ब्राह्मण, किसी विद्वान शुभचिंतक, किसी वीर योद्धा को अपशब्द कर देना, किसी का राजसभा में खड़े-खड़े पानी उतार देना, नए सम्राट केलिए तनिक भी असहज नहीं है। विद्या, ज्ञान, तपस्या, चरित्र, शूरता, स्वामिभक्ति.... किसी को भी वे नमस्य नहीं मानते। उद्धतता का साम्राज्य है हस्तिनापुर में।"[1] चित्रांगद सत्ता के मद में प्रजा पालन और धर्म संगत शासन चलाने से विमुख होकर निजी सुख सुविधा में खो बैठता है।

धृतराष्ट्र, शकुनी, दुर्योधन आदि ने सत्ता का दुरुपयोग किया है। दुर्योधन एक एक पांडव को अपने रास्ते से हटाने केलिए बेचैन है। दुर्योधन की सहायता केलिए धृतराष्ट्र और शकुनी षड्यंत्र रचते है। धृतराष्ट्र के शासनकाल में धार्मिक मूल्यों केलिए कोई जगह नहीं रहा था। धृतराष्ट्र के शासन में चिंतित होकर विदुर कुंति से कहता है - "इस राजसभा में उपस्थित रहना प्रतिदिन कठिन

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) - पृ. 127

होता जा रहा है। स्वयं धृतराष्ट्र, उसका साला शकुनी और इनके मंत्री जिस प्रकार की बातें करते हैं उनमें मेरा दम घुटता है। कुरुओं की राजसभा में अब न प्रजापालन की चर्चा होती है न सत्य की, न दर्शन की, न मानवहित की। वहाँ होती है नीतिविहीन राजनीति। इच्छा होती है कि सब कुछ छोड़कर कहीं और चला जाऊँ।"[1] धृतराष्ट्र यों ही चक्षुहीन है लेकिन सत्ता के मद में वह विवेक भी खोकर बैठता है। पुत्र और सत्ता -मोह में धृतराष्ट्र ने अनेक अन्याय किया है। समसामयिक परिस्थितियों में सत्तालोलुप और सत्ता मोह में अन्धे अनेक धृतराष्ट्र सत्ता के गलियारों में भटकते देखे जा सकते हैं।

4.8 अवसरवादिता

पुराण काल से लेकर आज तक राजनीति और अवसरवादिता पर्यायवाची शब्द के रूप में एक साथ चल रहा है। 'महासमर' में यत्र तत्र अनेक प्रसंग अवसरवादिता को उजागर करते हैं। अपना अस्तित्व, सत्ता और महत्व बनाए रखने केलिए धृतराष्ट्र, गांधारी, दुर्योधन, शकुनी, सत्यवती जैसे अनेक पात्र अवसर की तलाश में छल-छद्म करते हुए दिखाए गए हैं।

'महासमर' में चित्रित राजनीति राज-रजवाडों में खेली गई

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग - 3) - पृ. 424

राजनीति है जिसकी आधार शिला के केन्द्र में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका है, यह राजनीति वस्तुतः राजा शन्तनु के राजमहल से शुरु होती है, जहाँ सत्यवती विराजमान थी। शन्तनु एक निर्बल एवं अस्वस्थ चक्रवर्ती है जिन पर शासन करना सत्यवती केलिए एक आसान काम था।

राजनीति की नींव रखनेवाले थे - सत्यवती के पिता दासराज। दासराज ने देवव्रत को अखण्ड भीषण प्रतिज्ञा लेने केलिए बाध्य किया, जिस कारण देवव्रत ने प्रतिज्ञा की कि हस्तिनापुर पर सत्यवती का जयेष्ठ पुत्र राज करेगा और देवव्रत आजीवन अविवाहित रहेगा। दासराज ने सत्यवती से कहा "मैं इस सौदे में से ही अधिक से अधिक कमाना चाह रहा हूँ बेटी! मैं ने उनसे कहा है कि यदि वे वचन दें कि उनके पश्चात पुत्र हस्तिनापुर का राजा होगा, तो मैं तुम्हारा विवाह उनसे कर सकता हूँ।"[1] दासराज की अवसरवादिता ने महाभारत की कथा को बहुत भीतर तक प्रभावित किया है।

विवाह से पहले सत्यवती ऋषि पराशर से प्रेम करती है और एक कानीन पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम था-कृष्ण द्वैपायन व्यास। किंतु समाज के भय एवं अपने पिता की इच्छा पूर्ति केलिए शन्तनु से विवाह करती है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) - पृ. 43

दासराज को सत्यवती नदी में बहुती हुई मिली थी, वह उसकी अपनी संतान नहीं थी। चूँकि दासराज का मानना था कि सत्यवती क्षत्रिय कन्या है, इसलिए वह उसे श्रत्रिय राजा के यहाँ ही भेजना चाहता था। सत्यवती के वर्तमान और भविष्य को सुरक्षित करने केलिए दासराज ने शन्तनु के समक्ष शर्त रखी। भीष्म की प्रतिज्ञा के बाद दासराज ने अपनी पुत्री को विदा करते हुए कहा है कि "बेटी मैं आजीवन अपने घर में नहीं रख सकता था। तुझे किसी क्षत्रिय राजा या राजकुमार के साथ जाना ही था। स्वेच्छा से न भेजता तो वे बलात् ले जाते।"[1] इस संवाद में एक साथ सामाजिक-राजनीतिक स्थिति दिखाई दी गई है। साथ ही इससे यह भी स्पष्ट है कि दासराज की शर्त सोची-समझी रणनीति की तहत रखी गई है। भीष्म के त्याग को देखकर उसकी प्रशंसा करते हुए भी दासराज अंत में सत्यवती को मूलमंत्र यही देता है कि, "संसार में न सज्जनों का अभाव है, न दुष्टों का। कौन जाने देवव्रत से किस सुख के प्रलोभन ने ऐसे त्याग की प्रतिज्ञाएँ करवाई है। बस तुम अपना अधिकार मत छोड़ना।"[2] दासराज और सत्यवती का यह वार्तालाप दिखलाता है की भीष्म का उत्तराधिकार छीननेवाले दासराज 'महासमर' की राजनीति के सूत्रधार है।

निर्धनता से सत्यवती को हमेशा भय लगा, इसलिए उसने

---

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 36
2. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 44

शन्तनु को दान-धर्म न करने की सलाह दी। वह अपने दोनों पुत्रों को भी राजसी सुख-वैभव से दूर नहीं करना चाहती थी, इसलिए उसने उनकी शिक्षा की व्यवस्था भी राजमहल में करवाई। भीष्म को वह हमेशा राजपरिवार एवं अपने बच्चों से दूर रखती रही। भीष्म को वह अपने पुत्रों का गुरु न बना सकी, लेकिन शन्तनु की मृत्यु के पश्चात् अपने पुत्रों का संरक्षक बनाया है।

सत्यवती ने परिवार में भी राजनीति खेली। विचित्रवीर्य एवं चित्रांगद की मृत्यु के पश्चात् वंश वृद्धि केलिए उसने अपने कानीन पुत्र वेदव्यास को नियुक्त किया। भीष्म की शक्ति एवं बुद्धि का प्रयोग उसने अपनी हर इच्छा की पूर्ति केलिए किया। वह भी इसप्रकार कि स्वयं भीष्म को भी पता नहीं चला कि उसका प्रयोग किया जा रहा है।

अंबिका एवं अंबालिका द्वारा पुत्र प्राप्ति की इच्छा सत्यवती केवल अपने कानीन पुत्र द्वारा ही पूरा करना चाहती थी। कहीं उसके राज सिंहासन पर स्वयं भीष्म या किसी बाह्य व्यक्ति का अधिकार न हो, इसलिए उसने अपने ही कानीन पुत्र का चयन किया। सत्यवती को शन्तनु की मृत्यु का इतना दुःख नहीं था जितना कि उसे इस बात का हर्ष था कि अब वह अपने निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकती थी। अपनी कुलवधुओं पर सत्यवती का

पूर्ण नियंत्रण रहा किंतु गांधारी राजनीति में उससे अधिक आगे रही। इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि वैयक्तिक स्तर पर होनेवाली राजनीति, सामूहिक राजनीति बन कर वंश का विनाश एवं विकास तय करती है।

4.9 ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिहिंसा

मानव मन की दुष्पवृत्तियों में से 'ईर्ष्या' वह प्रवृत्ति है, जो यदि मानव मन में घर कर जाए तो संपूर्ण जीवन अशांत बना रहता है। दुर्योधन के पास राज्य एवं समस्त ऐश्वर्य था किंतु मन में पांडवों के प्रति ईर्ष्या का भाव इतना प्रबल था कि संपूर्ण प्रयत्न किसी न किसी प्रकार उन्हें नीचा दिखाने केलिए रहते थे ।

पाँडवों के इन्द्रप्रस्थ में वैभवपूर्ण ज़िन्दगी दुर्योधन को सहन नहीं पाता है। हस्तिनापुर लौटकर वह धृतराष्ट्र को पांडवों के ऐश्वर्य का वर्णन करते हुए कहता है "जिन्हें मैं कंगाल समझता था, जिन्हें भीख मांगने केलिए हस्तिनापुर से निर्वासित करके छोड़ दिया गया था - वे सम्राट हो गए है। मैं ईर्ष्या से जल रहा हुँ।"[1] दुर्योधन स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है कि वह अभावग्रस्त नहीं, ईर्ष्याग्रस्त है। वह पांडवों का वैभव सहन नहीं सकता है।

वनवास के दौरान पांडवों की कष्टतापूर्ण ज़िन्दगी देखकर

---

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 346

तुष्टि मिलने केलिए दुर्योधन गए। द्वैतवन में वन-विहार की योजना भी उसकी इसी ईर्ष्या का एक अंग थी। वह अपने मित्र कर्ण से कहता है - "कंगले पांडवों के सम्मुख महाराज दुर्योधन का वैभव प्रदर्शन। उस वैभव की सार्थकता ही क्या थी, यदि उसे देखकर पांडवों के वक्ष पर साँप न लोटें। अधिक क्रय वहीं करे-उस पांचाली के सम्मुख। उसके सम्मुख इतना क्रय-विक्रय व्यापार हो कि वह स्वयं को विस्मृत कर किसी मुल्यवान पदार्थ केलिए अपने पतियों से अनुरोध कर बैठे। यदि मैं द्रौपदी का ऐसा असफल अनुरोध और उस धर्मराज का असामर्थ्य में लटका हुआ चेहरा देख पाया, तो समझ लो मित्र कि मुझे एक राजसूय यज्ञ की पूर्णता का सा सुख मिल गया।"[1] ईर्ष्या से जलने के कारण वह पांडवों की भलाई नहीं देख पाता है। दुर्योधन की ईर्ष्या को बढ़ाने में कर्ण एवं शकुनी का भी सहयोग रहता है।

साम्राज्य और अधिकार की लड़ाई में 'महासमर' का प्रत्येक पात्र द्वेषाग्नि में जलता हुआ प्रतीत होता है। कुरुवंश के राजकुमारों को शास्त्रविद्या सिखानेवाले गुरुदेव द्रोणाचार्य का हस्तिनापुर में आगमन होते ही ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिहिंसा की अग्नि हृदय में लिए हुए ही था। द्रुपद द्वारा हुए अपमान से आहत द्रोण बदले की भावना लेकर ही हस्तिनापुर में आए थे। द्रोण बोले, "मैं हस्तिनापुर जाऊँगा।

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -7) पृ. 52

इसलिए नहीं कि कौरवों का राज्य अत्यंत वैभवशाली है, इसलिए नहीं कि हस्तिनापुर में कृपाचार्य है, वरन् इसलिए कि पांचाल द्रुपद के सबसे बड़े शत्रु कौरव ही है। मैं अपने शत्रु के शत्रुओं का मित्र बनने का प्रयत्न करूँगा।"[1] द्रोण अपने मन के द्वेष और घृणा तब तक छिपा कर रखते हैं जब तक अपने शिष्यों का प्रयोग करते हैं। गुरु दक्षिणा के रूप में वे द्रुपद को बन्दी बनाकर लाने को कहते है। द्रोण अपने अपमान का बदला तो लेते हैं, क्योंकि अर्जुन-द्रुपद को बन्दी बनाने में सफल हो जाता है, लेकिन साथ ही द्रुपद के मन में हस्तिनापुर को तबाह कर अपने अपमान का बदला लेते की योजना बनाता है। अपने पिता की इच्छापूर्ति केलिए द्रुपदकन्या द्रौपदी और पुत्र धृष्टद्युम्न यज्ञ-कुंड से उत्पन्न होते है। द्रौपदी और धृष्टद्युम्न हस्तिनापुर के विनाश करने का संकल्प लेते हैं। 'महासमर' के सर्वनाश का ज़बरदस्त बीजारोपण द्रोण की क्रूर, अहंकारी प्रतिहिंसाजनित मनोवृत्ति में निहित है।

4.10 झूठा राजकीय अहंकार

'महासमर' सभी की जानी-पहचानी कथा है। इस अर्थ में यह उपन्यास श्रृंखला जानी या पढ़ी हुई कहानी को मात्र फिर से जानता या पढ़ना नहीं है, बल्कि हस्तिनापुर को अपनी आँखों से नए दुष्परिणामों से देखना भी है। कोहलीजी ने बहुत धैर्य एवं परिश्रम

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 133

से एक-एक पात्र की मानसिकता में प्रवेश कर उसे समकालीन बोध से जोड़ा है। वर्तमान राजकीय सभाओं अथवा राजकीय आयोजनों में इकट्ठे हुए नेताओं का बर्ताव, मनोवृत्तियाँ एवं आपसी व्यवहार का यदि ऊपरी तौर पर अध्ययन किया जाए तो 'महासमर' का दृष्य आम तौर पर दृष्टिगोचर होता है।

'महासमर' में धृतराष्ट्र का पक्ष न्याय का पक्ष नहीं है इसलिए धर्म और लोकमत उसके साथ नहीं है। जन्मांध धृतराष्ट्र के व्यवहार में पाखंड आरंभ से ही सर्वोपरी रहा थआ। सत्य का साक्षात्कार वह नहीं करना चाहता है। धूर्त-नीति उसके व्यक्तित्व में इस प्रकार सम्मिलित हो गई थी कि माँ अंबिका का चिंतन न उसे अनुशासित रख सका, न उसके व्यवहार को नियंत्रित। राज-मद और राज-मोह के कारण धृतराष्ट्र बचपन में अपनी माँ से कहता है - "तुम नहीं चाहती थीं कि मेरा जन्म हो। तुमने भूखी रह-रह कर और कष्ट सह-सहकर मुझे अंधा कर दिया। तुम्हारे सारे प्रयत्नों के पश्चात भी मैं जीवित रहा माँ और तुम देखना तुम्हारे, मौसी अंबालिका के, पांडु के और स्वयं भीष्म के प्रयत्नों के पश्चात् भी मैं हस्तिनापुर पर राज्य करुँगा। मुझे कोई नहीं रोक सकेगा।"[1] बचपन से लेकर अधिकार की मादकता में धृतराष्ट्र विवेक खोकर बैठता है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 291

धृतराष्ट्र ने पांडु की हस्तिनापुर में अनुपस्थिति का पूरा लाभ उठाया। राजा न होने पर भी उसे राजा के सारे अधिकार प्राप्त हुए। गाँधारी ने उसे पूर्ण सहयोग दिया और अपने ज्ञान और कुटिल बुद्धि से धृतराष्ट्र को पूर्णतः जीत लिया। गांधारी धृतराष्ट्र से कहती है - "राज्य पितृत्य भीष्म का नहीं आपके पिता साम्राट विचित्रवीर्य का था। शकुनी कहता है कि राज्य मिलता नहीं, उसे प्राप्त किया जाता है। राजनीति का पहला धर्म है - उद्यम। सफलता संपूर्ण अधिकारों की कसौटी है। जो अपने उद्यम में सफल हो जाता है, अधिकार स्वतः उसके अनुकूल हो जाता है।"[1] पांडु के हस्तिनापुर से चले जाने के पश्चात धृतराष्ट्र ने भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य और विशेषतः विदुर की सलाह से राज्य का संचालन किया। उसे राजा के कर्तव्यों का ज्ञान तो था किंतु पुत्र मोह के कारण उसका विवेक अंधा हो जाता है और बाध्य होकर दुर्योधन के अन्यायपूर्ण आचरण का समर्थन करने लगता है।

4.11 अंतराष्ट्रीय राजनीति का प्रभाव

नरेन्द्र कोहली ने खाण्डव प्रस्थ के माध्यम से आतंकवाद की उस समस्या को उठाया है, जो आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की गंभीर समस्या है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -1) पृ. 331

पांडवों को राज्य के रूप में खांडवप्रस्थ मिला है, जहाँ न कृषि हे न व्यापार। संपूर्ण क्षेत्र में अराजकता फैली है। अपराधियों और महाशक्तियों की वाहिनियाँ अपने षड्यंत्रों में लगी हुई है। उनका केन्द्र है खांडव वन, जिसकी रक्षा स्वयं इंद्र कर रहा है। युधिष्ठिर के सम्मुख धर्म संकट है। वह नृशंस नहीं होना चाहता, किंतु अनृशंसता से प्रजा की रक्षा नहीं हो सकती। पांडवों के इतने साधन भी नहीं है कि वे इंद्ररक्षित खांडव वन को नष्ट कर उसमें छिपे अपराधियों को दंडित कर सकें। तभी दूसरी देवशक्ति अग्नी पांडवों की सहायता से इस आतंकवादी शिविर को ध्वस्त करने में मदद करते है। खांडवप्रस्थ में चारों ओर अराजकता फैली हुई थी। अपराधियों और महाशक्तियों की वाहिनियाँ षड्यंत्र में लगी हुई थी। इन्द्र इन समस्त आतंकवादी गतिविधियों का नेतृत्व कर रहा था।

इंद्र एक ऐसी ही महाशक्ति है जो देव, असुर, गंधर्व, मनुष्य सभी पर अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहता है। छोटे छोटे राजाओं के आपसी युद्धों में उसे खास दिलचस्पी है। इसीप्रकार आज भी आतंकवादी संगठनों को विकसित देशों का संरक्षण प्राप्त है। वह इन संगठनों को उच्चकोटि के शस्त्र और पर्याप्त मात्रा में धन प्रदान कर रहे है।

अमेरिका जैसी महाशक्ति द्वारा छोटे देश को लाचार बनाना बहुत आसान है। समय-समय पर हर तरह की मदद देकर उसने उसे खरीद लिया है। इन छोटे राष्ट्रों की असमर्थता इन शक्तिशाली देशों की ताकत है। कोहलीजी ने इन परिस्थितियों को बड़ी ही कुशलता से प्रस्तुत किया है। इन्द्रप्रस्थ की हालत देखकर युधिष्ठिर ने नकुल से कहा "छोटे छोटे राज्य इन देवशक्तियों के अनुकूल पड़ते है। राज्य जितना छोटा और असमर्थ होगा उतना ही महाशक्तियों पर निर्भर होगा। तो महाशक्तियाँ क्यों चाहेंगी कि कोई राज्य अपने आप में समर्थ और सबल हो।"[1] यहाँ अंतर्राष्ट्रीय शास्त्रास्त्रों का आपस में आदान-प्रदान प्रस्तुत कर वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय राणनीति की ओर ईशारा किया गया है। महाशक्तियाँ, आतंकवादी, अपराधी समूहों को उद्देश्यपूर्वक प्रोत्साहन देकर संरक्षण भी देती रही हैं ताकि वक्त आने पर अथवा समय समय पर पडोसी अथवा दुश्मन राष्ट्रों को परेशान किया जा सके।

4.12 युद्ध की विभीषिका

राजनीतिक समकालीन बोध के अंतर्गत राजा आज नहीं रहे, किंतु राज्य, राज्यव्यवस्था और राजनीति तो है। केवल सत्ता के नाम और रूप बदले है, मनुष्य वही है। चुनौतियाँ भी वही हैं। 'महासमर' की कथा मनुष्य के उस अनवरत युद्ध की कथा है जो

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 235

उसे अपने बाहरी और भीतरी शत्रुओं के साथ निरंतर करना पड़ता है। मनुष्य उस संसार में रहता है जिसमें चारों ओर लोभ और स्वार्थ की शक्तियाँ संघर्षरत रहती है।

मनुष्य सिर्फ लोभ, स्वार्थ, ईर्ष्या और अधिकार की रक्षा केलिए ही युद्ध नहीं करता, बल्कि उसे बाहर से अधिक अपने भीतर लडना पडता है। परायों से अधिक उसे अपनों से लडना पडता है। 'महासमर' का संपूर्ण युद्ध एक ही परिवार के विनाश है।

युद्ध मूलतः राजनीतिक समस्याओं के कारण होते, लेकिन युद्ध का तत्काल घातक प्रभाव सामाजिक जीवन पर सबसे अधिक पड़ता है। युद्ध के कारण महँगाई अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाती है। 'महासमर' में युद्ध वर्णन समकालीन बोध के साथ चित्रित हुए है।

युद्ध विराम के बाद शांति के नारे लगाए जाते हैं। मैत्रि और सद्भावना केलिए गोष्ठियाँ आयोजित की जाती है। किंतु उसपर कोई ध्यान नहीं देता है कि कितने घर उजड़े हैं। कितना धन बर्बाद हुआ है। किंतु जहाँ स्वार्थ ठकराएगा वहाँ युद्ध की आवश्यकता है। कोहीलीजी ने 'महासमर' में इस सच्चाई की ओर ईशारा किया है। कृष्ण ने भीष्म से कहा "जहाँ किसी को नैसर्गिक अधिकारों से

वंचित किया जाएगा वहाँ युद्ध होगा। जहाँ वंचना पाखंड और षड्यंत्र होंगे वहाँ संघर्ष अनिवार्य है।"[1] यहाँ अन्याय के विरुद्ध लडने का, संघर्ष का समर्थन करते है।

शक्ति, धन, सत्ता राज्य और भाग सिर्फ राजनेताओं में ही नहीं होती, बल्कि बुद्धिवादी वर्ग भी इस होड़ में पीछे नहीं होता। आचार्य द्रोण भी इसी युद्धनीति में पर्याप्त विश्वास रखते है। द्रोण की राजनीति में तो युद्ध प्रमुख था। उनके अनुसार युद्ध की जय-पराजय तो बाद की राजनीति को जन्म देती है। दुर्योधन के बारे में द्रोण का चिंतन ध्यातव्य है - "दुर्योधन कुशल राजनीतिज्ञ है। उसका अपना तो धर्म, नियम, आदर्श और सिद्धांत नहीं। वह केवल अपना स्वार्थ समझता है। शक्ति, धन, सत्ता, राज्य, भोग-सब कुछ चाहिए उसे केवल अपने लिए। उसके पास सब कुछ हो और किसी अन्य के पास कुछ न हो। इसलिए वह युद्धों को जन्म देता है। युद्ध की स्थितियाँ पैदा करता है।"[2] द्रोण का चिंतन आज के स्वार्थी राजनीतिज्ञों का ही है।

युद्धों की विभीषिका सामान्य नागरिकों के संपूर्ण जीवन को तहस-नहस करके रख देती है। युद्धोपरांत ही तेज गति से राजकीय परिवर्तन होते है। चाहे वे अच्छे हों या बुरे।

---

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग -3) पृ. 379
2. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 133

4.13 राजनीतिक संधियाँ एवं षड्यंत्र

पौराणिक युग में विवाह संबंधी निर्णय राजनीतिक धरातल पर ही लिए जाते थे। उस समय प्रत्येक कमज़ोर राजा अपने राज्य की सुरक्षा केलिए कन्याओं का स्वयंवर रचकर जामाता के रूप में शक्तिशाली पुरुष या राजा के साथ अपनी कन्याओं के विवाह करवाते थे। 'महासमर' में भी ऐसी अनेक घटनाओं का अंकन किया गया है। मणिपुर का राजा चित्रवाहन भी यही चाहता है। किन्तु वह विवाह के बाद भी अपनी पुत्री और जामाता को अपने पास ही रखना चाहता था। क्योंकि उसकी एक ही पुत्री थी। जब पुत्र चित्रांगदा के साथ विवाह का प्रस्ताव रखता है तो चित्रवाहन भी उसके सामने एक शर्त रखता है- "चित्रांगदा के साथ विवाह का प्रस्ताव रखता है तो चित्रवाहन भी उसके सामने एक शर्त रखता है - "चित्रांगदा का पुत्र धर्मतः मेरा पुत्र माना जाएगा। वह मेरे स्थान पर मणिपुर पर राज्य करेगा। अपना पहला पुत्र मुझे दे सकेंगे? यह चित्रांगदा के साथ विवाह का शुक्ल है।"[1] पारिवारिक संबंध भी राजनीतिक मोह के लिए प्रयुक्त करता है।

दुर्योधन भी अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए नए राजाओं को मित्र बनाना चाहता है। वह अपनी पुत्री लक्ष्मण का स्वयंवर रचकर

---

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 133

नए संबंध स्थापित करना चाहता है। लक्ष्मण के स्वयंवर के बारे में वह कर्ण और दुशासन को अपना षड्यंत्र समझाए हुए कहता है - "यह समझ लो कि मेरी और लक्ष्मण की आँखें, प्रत्येक राजकुमार को साथ-साथ देखेंगी, और मेरे संकेत के बिना वह किसी के कंठ में वरमाला नहीं डालेगी। विवाह तो एक राजकुमार से होता और अनेक राजा तथा राजकुमार हमसे रुष्ट हो जेते कि हमने अपने जामाता के रूप में उनका चयन क्यों नहीं किया। यह स्वयंवर नँ मित्र बनाने केलिए, राज समाज रुष्ट करने केलिए नहीं। स्वयंवर के माद्यम से हमने उन्हें जता दिया है कि हम उन्हें इस योग्य तो समझते ही हैं कि वे हमारे संबंधी हो सके।"[1] पौराणिक युग में राजा अपनी सत्ता को कालम रखने केलिए स्वयंवर का आयोजन किया करते थे।

जब पांडु राजा थे तब धृराष्ट्र पांडु को बार-बार उकसाकर हस्तिनापुर से बाहर रखता है। वह पांडु को भ्रमण, युद्ध, आखेट और स्वयंवर का बहाना बताकर बाहर रखता है। उसके पीछे यह षड्यंत्र रहा था कि राज्य पाण्डु करते रहे, और उसका भोग करे धृतराष्ट्र। पाण्डु की मृत्यु के बाद वह उसके पुत्रों को भी हस्तिनापुर से दूर रखता है। जब युधिष्ठिर का युवराज्याभिषेक होता है तो उसके बाद भी धृतराष्ट्र उसको कोई सत्ता नहीं सौपता है और

1. नरेन्द्र कोहली - अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 184

षड्यंत्र रचकर पाण्डु की तरह उन्हें भी हस्तिनापरु से दूर रखने का रास्ता निकालता है। सभी प्रकार के प्रयत्नों के बावजूद भी जब कौरव पाण्डवों को जीतने में असफल रहते है तो वे द्यूत के बहाने उनका सर्वस्व हरण करने का षड्यंत्र बनाता है। वह पांडवों को द्यूत खेलने केलिए आमंत्रित करते हैं। द्यूत में युधिष्ठिर अपना सर्वस्व हार जाता है। लेकिन धृतराष्ट्र और दुर्योधन का यह षड्यंत्र उसे महायुद्ध की ओर धकेल देते हैं।

'महासमर' में अपनी सत्ता का क्षेत्र विकसित करने केलिए या फिर अपने आप का महत्व बनाए रखने केलिए राजा, मंत्रि और उनके सहयोगी अपने अपने पक्ष की शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न करते थे। भीष्म स्वेच्छा से हस्तिनापुर का सिंहासन त्याग चुके थे। फिर भी वे सदा यही प्रयत्न कर रहे थे कि हस्तिनापुर की राजशक्ति हमेशा बढ़ती रहे। द्रोण पांचालों से निराश होकर हस्तिनापुर आए तो भीष्म चाहते हैं कि उनसे संधि करके सदा केलिए हस्तिनापुर में ही रहना चाहिए। विदुर भीष्म से कहते हैं कि यह अपना स्वार्थंध है तब भीष्म विदुर से राजनीति समझाते हुए कहते है - "राजनीति में हम सदा यह सोचते हैं कि हम अपने शत्रु की शक्ति कैसे कम कर सकते हैं, कैसे उसे दुर्बल बना सकते हैं, कैसे उसे पराजित कर सकते हैं। जिसने अवसर का लाभ नहीं उठाया, वह राजनीति के

क्षेत्र में सदा ही हारा है।"[1] इन सारे के सारे षड्यंत्र एवं सांधियों में सत्ता के प्रति अथाह इच्छा रहता है।

4.14जन कल्याण की लुप्त होती भावना

जब शासक के मन पर निजी स्वार्थ हावी हो जाता है तो उसके मन में से प्रजा कल्याण की भावना लुप्त होती जाती है। 'महासमर' में धृतराश्ट्र ऐसा राजा है जो प्रजा के कल्याण के बारे में काम सोचते थे। वे स्वयं सत्ता को अधिक महत्व देते थे। जिस राज्य में राजा भोग-विलास में डूबा वहाँ धूर्त लोग अपनी जड़ें मज़बूत करते जाते है। धृतराष्ट्र की विलासिता और स्वार्थवृत्ति से फायदा उठाकर शकुनी हस्तिनापुर में द्यूत का प्रचार और प्रसार कर रहा था। धृतराष्ट्र का प्रजा कल्याण की ओर से इसप्रकार विमुख होने का एक कारण शकुनी का उदासीन पूर्ण दृष्टिकोण है।

वेदव्यास के कहने पर युधिष्ठिर अपने भाईयों और माता सहित एकचक्रा नगरी में देवप्रसाद के घर में आश्रय केलिए पहुँचते हैं। देवप्रसाद की पत्नी का व्यवहार उन्हें उचित नहीं लगता है। पत्नी की अनुपस्थिति में देवप्रसाद युधिष्ठिर से कहता है-"आप लोग उसके व्यवहार से तनिक भी कुंठित न हो। वह मन की बुरी नहीं। एकचक्रा नगरी में अराजकता बहुत बढ़ गयी, इसीसे आशंकित

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 151

है। राजा यहाँ रहता नहीं। आपके पास धन और बल हो तो आप कुछ भी कर सकते हैं। कोई पूछनेवाला नहीं, कोई दण्डित करने वाला नहीं। अनेक घटनाएँ इस प्रकार की हो गयी है, इसलिए सरस्वती अत्यंत भयभीत है।"[1] राजा के निरंकुश शासन का परिणाम आम जनता को भुगताना पडता है।

धृतराष्ट्र युधिष्ठिर को शासन करने केलिए खाण्डवप्रस्थ दिया जाता है। वहाँ जाकर पांडव देखते हैं कि उनके पूर्वजों का वह राज्य खण्डहर बनकर रह गया था। वहां कोई शासन नहीं रह गया था। वैसी बस्ती में कृष्ण सहित पाण्डव पहुँचते हैं तो एक वृद्ध आदमी पांडवों से कहता है - "जहाँ न कृषि हो, न व्यापार, न कोई उद्योग, जहाँ कोई आजीविका ही न हो, वहाँ प्रजा से कर उगाहने केलिए कोई राजपुरुष भी आएगा, तो दस्यु का ही रूप धारण करेगा। जो कोई भी ग्राम में आता है, चाहे वह राजपुरुष हो, दस्यु हो, कोई तपस्वी हो अथवा यात्री उसके ठहरने और खाने-पीने की व्यवस्था तो ग्रामवासियों को करनी ही पड़ती है। कुछ नहीं मिलता तो स्त्री, धन ओर गोधन को ही हाँकने लगता है।"[2] ग्रामीण वृद्ध की ये पंक्तियाँ वहाँ की प्रजा पर शासक द्वारा किए जानेवाले अत्याचारों, शोषण, दमन तथा अराजकता की यथार्थ अभिव्यक्ति करती है, प्रजा की मज़बूरियों और व्यथा को व्यक्त करती है।

---

1. नरेन्द्र कोहली - कर्म (महासमर भाग -3) पृ. 219
2. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 17

4.15राजनीति और नारी

'महासमर' में नारी भी सत्ता केलिए कठोरतम संघर्ष करती हुई देखी गई है। कुंति ऐसे एक सशक्त नारी का प्रतिनिधि पात्र है। कुंति भालीभाँति जानती है कि उसे कब अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है और कब अपने अधिकार का। राजनीतिक दबाव के कारण धृतराष्ट्र को युधिष्ठिर का वास्तविक अधिकार देना ही पड़ा और उसे युवराज घोषित किया गया। युधिष्ठिर का उदार हृदय दुर्योधन और उसके भाइयों को पांडवों से होनेवाली असुविधाओं के चलते, हस्तिनापुर को छोडकर पुनः शतश्रृंग के आश्रम लौट जाना चाहता है, किन्तु कुंती उसे समझाती है "यह हस्तिनापुर का राजप्रासाद है पुत्र। हस्तिनापुर का राजा इसी में रहता है। तपस्या केलिए जाने से पूर्व मैं और तुम्हारे पिता इसी प्रासाद में रहते थे। अपने पिता के उत्तरादिकारी के रूप में तुम्हें इसी प्रासाद में रहना है। हस्तिनापुर के युवराज को यहाँ से हटकर कहीं नहीं जाना है। भावी सम्राट यदि अपना प्रासाद भी छोड देगा तो राज्य त्यागते में उसे कितना समय लगेगा?"[1] कुंति ने राजनीति में भाग तो लिया लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से एवं सत्य के सहयोग से। अपने पुत्रों को उसने अपने वास्तविक अधिकारों को पाने की लड़ाई तो सिखाई, लेकिन अधर्म को छुआ नहीं। धर्मतः जो अधिकार पांडवों के थे

1. नरेन्द्र कोहली - अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 11

उन्हें प्राप्त करने केलिए उसने मुख्यतः युधिष्ठिर को प्रेरित किया और वहीं भीम के आवेश पर हमेशा नियंत्रण रखा है।

महाभारत काल में भी नारी अपने वैयक्तिक प्रेम को महत्व न देकर सत्ता को अधिक महत्व देती थी। दासराज की पुत्री सत्यवती तपस्वी पराशर से प्रेम करती थी और उसके एक पुत्र को भी जन्म देती है किंतु जब उसके सामने हस्तिनापुर की रानी बनने का प्रस्ताव आता है तो उसको पाने केलिए वह इच्छुक थी। नरेन्द्र कोहली ने 'बंधन' उपन्यास में सत्यवती की मनःस्थिति को अभिव्यक्ति दी है - "आज तक यह शरीर सुख का माध्यम था - उसके लिए भी और तपस्वी केलिए भी। उस 'सुख' के साथ न समाज था, न पद, न धन, न भविष्य, कुछ नहीं। पर आज इस शरीर का रूप बदल गया है। वह स्वयं सुख पाये, न पाए पर यदि राजा को सुख दे सके तो हस्तिनापुर का राज्य उसी का है।"[1] यहाँ नरेन्द्र कोहली ने इस कटु सत्य पर प्रकाश डालना चाहा है कि क्या शन्तनु की रानी बनना ही उसके लिए हितकर था? शायद नहीं। दासराज के ही समान सत्यवती के मन में भी कहीं गहरे वैभव और सत्ता की भूख थी। प्रकृति ने उसे वही दिया, जो सत्यवती ने चाहा था। कुछ पाने केलिए उसका मूल्य भी चुकाना ही पड़ता है । सत्यवती ने सुख-सुविधाओं के लिए अपने प्रेम की आहुति दे दी थी।

---

1. नरेन्द्र कोहली - बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 73

4.16 कालाबाज़ारी

अर्थतंत्र की मौजूदा व्यवस्था ने प्रतियोगिता की भावना को तेज़ गति दी है। आदमी की प्रतिष्ठा धन-दौलत से आँकी जा रही है। इसकेलिए काला धंधा, लूट और चोरी-रिश्वतखोरी का माध्यम अपनाकर पूँजीपति बनने की होड़ भी लग गई है। ईमानदारी से कमाया हुआ धम खाने-पाने से ज़्यादा नहीं होता। ऐसी स्थिति में धनार्जन के कि वही काम करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त होता जा रहा है जिसमें गलत तरीके से धन कमाने का प्रयास अवसर हो। इन शर्मनाक परिस्थितियों को कोहलीजी 'महासमर' में खुलकर प्रस्तुत करते हैं। हस्तिनापुर की हालत का बयान करते हुए विदुर कहता है- "राजा भोगी और विलासी होते जा रहे है। एक से अधिक पत्नियाँ, अधिक से अधिक भोग। नगर से निरंतर खेदजनक समाचार आ रहे हैं।

शासनतंत्र ढ़ीला हो गया है। भीतर और बाहर से शत्रु सिर उठाने लगे हैं। मानव की पशुवृत्तियाँ गौरवान्वित हो रही हैं। समाज में जो हिंस हैं, दुष्ट हैं वे ही प्रसन्न हैं, सुखी हैं। सेनानायक और सैनिक लुटेरे हो गए हैं। राजस्त्री व्यवस्था की इस सडाँध में अपराध के सहस्त्रों कीटाणु रोज़ जन्म ले रहे है। साधारण प्रजा कितनी दुःखी है। नगरों तक में खाद्य सामग्री उपलब्ध नहीं है। कहीं

दुर्भिक्ष है, कहीं बाढ़ है। लोग कीडों-मकडों के समान भूखे मर रहे हैं और सारा अन्न श्रेष्ठियों के भंडारगृहों में पडा है। व्यापारी धन कमाकर शासक को उपहार दे देकर अपने वश में कर लेता है, परिणाम स्वरूप शासन अत्याचार का समर्थन करने लगता है।"[1] हस्तिनापुर की यह हालत आज हमारी दुनिया की ही हालत है। बेइमान लोगों की प्रतिष्ठा धन के कारण बढ़ रही है। और ईमानदार व्यक्ति आर्थिक पीडा सहता हुआ अपमानित हो रहा है। समकालीन रचनाकार काले धंधे करनेवाले बेईमान लोगों का प्रबल विरोध करना अपना दायित्व समझता है। इसलिए 'महासमर' उपन्यास में कोहलीजी ने एक ओर ईमान्दार, नैतिक, दायित्वबोध संपन्न चरित्रों को पेश किया है तो दूसरी ओर भ्रष्टाचार, बेईमानी में डूबे चरित्रों का पर्दाफाश भी किया है।

4.17 निष्कर्ष

समय, स्थान और समाज के अनुरूप राजनीति अपने बाह्य रूप को बदलती रही है, किन्तु उसके मूल तत्व और तथ्य वहीं के वहीं है। महाभारत युग की राजनीति में जो विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ थीं वही स्वतंत्र भारत की राजनीतिमें भी विद्यमान है। उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली एक उत्कृष्ट कलाकार हैं, जिन्होंने

---

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 153

भारतीय जनमानस पर स्पष्ट और दृढ रूप से अंकित पौराणिक कथाओं को माध्यम बनाकर स्वतंत्र भारत की राजनीति को उसकी सभी सुरुपताओं और कुरुपताओं के साथ उकेरने का स्तुत्य प्रयत्न किया है। कोई भी साहित्य रचना उसके वर्ण्य-विषय के कारण जितनी लोकप्रिय होती है, उससे कहीं ज़्यादा उसकी अभिव्यक्ति-कला के कारण प्रसिद्ध होती है। यह बात कोहलीजी भली-भाँति जानते हैं यही कारण है कि उन्होंने वर्तमान भारत की राजनीतिक परिसथितियों को अभिव्यक्ति देने केलिए पौराणिक कथ्यों का मिथकीय प्रयोग किया है।

❖ ❖ ❖

अध्याय पाँच

महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का शैल्पिक विश्लेषण

5.1 प्रस्तावना

एक रचना में जितना महत्व उसके कथ्य का है, उतना ही महत्व संरचना या शिल्प पक्ष का भी है। रचनाकार के भाव और आशय का संप्रेषक तत्व है शिल्प। इसी कारण से रचना की सफलता शिल्प में भी निर्भर है। रचना की विषयवस्तु शिल्प के ज़रिए रूप पा लेता है। लेखक की अभिव्यक्ति क्षमता के अनुसार शिल्प विधान में बदलाव आता है। अधिकतर विद्वानों ने 'शिल्प' शब्द को रचना, क्रिया कौशल एवं कलाकैशल के अर्थ में ही स्वीकार किया है।

उपन्यास के संबंध में शिल्प उसका अंतरंग है। वह वर्ण्यविषय को सही ढंग से प्रस्तुत करता है। 'महासमर' का शैल्पिक विश्लेषण करना इस अध्याय का उद्देश्य है। इस अध्याय में 'महासमर' की भाषा और शैली का विश्लेषण किया गया है।

5.2 'महासमर' की भाषा का स्वरूप

भाषा और शिल्प दोनों किसी भी साहित्यिक कृति का अनिवार्य तत्व है। जीवन्त भाषा साहित्यिक कृति को सार्थक एवं सफल बना देता है। अन्य साहित्यिक कृतियों की भाँति उपन्यास की रीढ की हड्डी भाषा ही है। उपन्यास जीवन की यथार्थता को

अभिव्यक्ति प्रदान करता है, अतः यह आवश्यक है कि उपन्यास की भाषा जीवन व्यवहार की भाषा के निकट हो। उपन्यासकार जिस युग-विशेष के परिवेश को अपने उपन्यास में जीवन्त करना चाहता है, उसके अनुरूप भाषा-विन्यास आवश्यक हो जाता है। पात्र और प्रसंग के अनुरूप भाषा-प्रयोग में शब्द-चयन विशेष महत्वपूर्ण होता है। भाषा को जीवंतता प्रदान करने केलिए लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग आवश्यक होता है।

नरेन्द्र कोहली भाषा के विषय में अत्यंत सजग रहे हैं। 'महासमर' की भाषा देशकाल, पात्र और वातावरण के अनुकूल होने के साथ ही सरल एवं सहज ही होती है। 'महासमर' पौराणिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है। इसलिए उपन्यास की भाषा भी इस पृष्ठभूमि के अनुकूल है। भाषाचतुर नरेन्द्र कोहली ने पात्र और उनके भाव के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है।

कोहली जी ने 'महासमर' उपन्यास केलिए वैविध्यपूर्ण पृष्ठभूमि निर्धारित की है। इस उपन्यास श्रृंखला में हास्य-व्यंग्य, सामाजिकता, राजनीतिक चेतना जैसे पक्ष को उजागर किया गया है। हर एक आयाम केलिए भिन्न-भिन्न भाषा शैली का प्रयोग होना ज़रूरी है। कोहलीजी के समृद्ध शब्द भण्डार इस आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। उन्होंने प्रत्येक पक्ष में इसके अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है।

'महासमर' के विश्लेषण से कोहलीजी की भाषापरक जीवन्तता का परिचय हमें मिलता है।

उपन्यास में संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया गया है। संस्कृत शब्द का प्रयोग करते हुए भी कोहलीजी ने शब्दों की सरलता का पूरा ध्यान रखा है। किसी ऐसे शब्द का प्रयोग नहीं किया जिसका अर्थ पाठक की समझ में न आया हो। शब्द की इस सरलता के कारण उपन्यास में प्रवाहमयता आई है।

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विशिष्ट माध्यम है। भावों एवं विचारों की सफलतम अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है। साहित्य का आधार है भाषा। साहित्यकार के भावों तथा विचारों का संवाहन भाषा के द्वारा होता है। औपन्यासिक संरचना में भाषा का प्रयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। कथा कृतियों में भाषा की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब साहित्यकार की भावना जन सामान्य की भाषा में प्रस्तुत की जाती है।

5.2.1 'महासमर' में प्रयुक्त शब्दों की विशेषताएँ

कोहलीजी के उपन्यासों की एक विशेषता उनमें निहित शब्द भण्डार है। शब्दों का विशिष्ट चयन 'महासमर' को नवीन तथा आकर्षक बना देते है। विभिन्न भाषाओं से स्वीकृत अनेक शब्दों

को अपने पात्रों केलिए कोहलीजी ने प्रयुक्त किया है। देशकाल, परिस्थिति तथा पात्र आदि के अनुरूप शब्दों का प्रयोग 'महासमर' में पाया जाता है ।

नरेन्द्र कोहली ने 'महासमर' में तत्कालीन परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। पौराणिक उपन्यास श्रंखला में परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है। उपन्यास में संस्कृत शब्दों का बाहुल्य दिखाई पडता है जो विषयानुरूप ही है। संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता के साथ-साथ तद्भव एवं कहीं कहीं अरबी-फारसी के शब्द भी प्रयुक्त हुए है।

कोहीलीजी भाषा में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली के कुछ उदाहरण संस्कृति, अध्यात्म, प्रशासन, पुत्रेष्ठ, अभिशाप, कर्म, स्वधर्म, उपाधि, विद्वान, राजा-परिषद्, खंडित, आश्रय, संकोच, मूल्य, तटस्थ, कपाट, निष्ठूर, विद्या, ग्राम, शिक्षा, आचार्य, विवाह, प्रवृत्ति, मस्तिष्क, व्याकुल, प्रकृति आदि।

कोहलीजी के पात्रों के संबोधन संस्कृत भाषी समाज के सर्वथा अनुरूप ही हैं जैसे-सारथे, ऋषिवर, वत्स, आर्य, आर्यऋषि, ऋषिश्रेष्ठ, मुनिश्रेष्ठ, राजन, महर्षि, कृष्णे इत्यादि।

कोहलीजी की भाषा में यत्र-तत्र तद्भव शब्द भी दिखाई

पड़ते हैं, जैसे-आँख, कुआँ, दूध, खेत, गाय, तुरंत, हाथ, रात, रानी, लोग, बहुत, नींद आँसु, बात सूखा, बहिन, नया, आज आदि ।

'महासमर' में यत्र तत्र कुछ देशज शब्द का प्रयोग भी मिलता है। जैसे-पडोस, पेड, छोटा, लोटा, झोला धमक्कड़ आदि।

कोहलीजी ने पौराणिक परिवेश के अनुरूप संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है, फिर भी कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्दों की झलक भी दिखाई देती है। कुछ उदाहरण खैर, ज़रा, पसंद, हवा, खून, साफ, दरबार, चेहरा, ईमानदारी, शायद, लापरवाही, खबर, मज़ा इधर-उधर, इत्यादि।

5.2.2 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

उपन्यासकार अपने उपन्यास में अभिव्यक्त भावों को स्पष्ट एवं प्राणवान बनाने केलिए उपयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग द्वारा कोहलीजी ने भाषा शैली को अत्यंत समर्थ एवं सर्जनात्मक बना दिया है। इनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित है।

'महासमर' में मुहावरों का प्रयोग पर्याप्त मात्र में हुआ है। उपन्यास में प्रयुक्त कुछ मुहावरे हैं: जाल में फँसना, सिर चकराना, नाक रगड़ना, बातों में बहना, आँखें चौंधिया जाना, पैर उखड़ जाना, दाँत पीसना, रेत की भित्ति सिद्ध होना, आकाश पाताल एक

करना, काठ मार जाना, फूला नहीं समाना, हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना, तिलांजलि देना, मार्ग का रोड़ा होना, बाल की खाल निकालना, ईंट का जवाब पत्थर से देना, पल्ला झाड़ना, गहरी नींद सो जाता।

'महासमर' में लेखक ने विभिन्न प्रसंगों में लोकोक्ति का प्रयोग कर भाषा को सौंन्दर्य प्रदान किया है। उपन्यास में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियाँ हैं छोटा मुँह बडी बात, साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे, फल शाखा से टूटकर नीचे न गिरे तो कंगाल की झोली कैसे भरे, काठ का लौंदा, आ बैल मुझे मार, न उगलते बने न निगलते आदि।

उपन्यास जीवन की यथार्थता को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अतः यह आवश्यक है कि उपन्यास की भाषा जीवन-व्यवहार की भाषा के निकट हो। कोहलीजी की उपन्यास शृंखला 'महासमर' में प्रयुक्त मुहावरों और लोकोक्तियाँ इस बात का प्रमाण है।

5.2.3 'महासमर' में भाषा के कलात्मक प्रयोग

भाषा को आकर्षक एवं सजीव बनाने केलिए प्रतीक, बिंब अलंकार जैसे भाषा को अलंकृत करनेवाले कई उपकरण भी अनिवार्य है। प्रतीक, बिंब आदि के प्रयोग से भाषा प्रभावपूर्ण और कलात्मक बनती है। नरेन्द्र कोहली भाषा को लेकर अत्यंत सजग

रहे हैं। 'महासमर' में प्रसंगों के अनुरूप बिंबों, प्रतीकों को जोड़कर भाषा को अत्यंत कलात्मक बना दिया गया है।

5.2.3.1 काव्यात्म भाषा

'महासमर' की भाषा में कहीं-कहीं कवित्व की हल्की सी झलक मिल जाती है। उदाहरणार्थ 'धर्म' उपन्यास के निम्न लिखित प्रसंग देखिए- "गंगा को जल को अंजुलि में लेकर अर्जुन को लगा, जैसे उसने अपने किसी अत्यंत प्रिय व्यक्ति का स्पर्श किया हो। हस्तिनापुर में भी वे लोग वर्षों गंगा के निकट रहे थे। गंगा-जल पिया था, उसी में स्नान किया था और प्रहरों-प्रहर उसमें क्रीडाएँ करते रहे थे। किंतु आज एक अंतराल के पश्चात् फिर से गंगाजल को अंजुलि में लेते ही अर्जुन को जैसे रोमांच-सा हो आया था। उसने अंजुलि मुख से लगाई और उसका जल पी गया। एक के पश्चात् एक कर कितनी ही अंजुलियाँ गंगा-जल पिया और फिर दूर तक फैले हुए गंगा-जल पर दृष्टि दौडाई।"[1]

इसी उपन्यास में अर्जुन के इस संवाद में कवित्व की हल्की आभा दिखाई पड़ती है - "राजकुमारी! तुम मेरे लिए कुटिया बनाने का कष्ट मत करो। मैं अपनी पलकों से एक-एक पत्ता चुनकर तुम्हारे सपनों के समान सुन्दर और कोमल कुटिया बनाऊँगा।"[2]

1. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 86
2. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 131

इसप्रकार कई वर्णनों और संवादों में कोहलीजी की भाषा कहीं-कहीं कवित्व का स्पर्श करती है।

5.2.3.2 'महासमर' में अलंकारों का पयोग

पद्य के समान गद्य में भी अलंकारों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण तथा क्रिया का तीव्र अनुभव कराने में अलंकार सहायक सिद्ध होते है। नवीन और उपयुक्त उपमानों के प्रयोग से भाव या वर्ण्य-विषय को रमणीय, संप्रेषणीयता को बढ़ा दिया है। 'महासमर' में प्रयुक्त भाषा के प्रयोग में स्वाभाविकता है, जिससे भाषा के सौन्दर्य में अभिवृद्धि हुई है तथा व्यक्त भाव अधिक स्पष्ट बन गए है। कोहलीजी ने स्वाभाविक रूप में अलंकारों का प्रयोग किया है। दृश्यों, स्थितियों व पात्रों की मनोदशा के चित्रण में अलंकार युक्त भाषा का प्रयोग सहज दृष्टिगोचर होता है। 'महासमर' उपन्यास शृंखला में प्रयुक्त अलंकारों के कुछ उदाहरण दृष्टव्य है।

गाँधारी की शाद के बाद जब हस्तिनापुर आए तब सत्यवती सोचने लगी 'कैसा गौर वर्ण है उसका, जो कभी नवनीत जैसा लगता है, कभी सिंदूर जैसा। काला कैसी लंबी है जैसे देवदारु का वृक्ष हो।"[1]

---

1. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 306

और एक उदाहरण यह है कि जब अर्जुन ने स्वयंवर के समय द्रौपदी को देखा तब इसका रूपवर्णन इसप्रकार करते है - "उसकी अंगकांति नूतन मधूक पुष्पों के समान प्रतीत हो रही थी।"[1]

"रूपक' अलंकार के कुछ उदाहरण भी 'महासमर' में मिलते हैं। जैसे कि देवव्रत की मानसिक अवस्था को चित्रित करते समय कोहलीजी ने व्यक्त किया है कि "देवव्रत के मन में प्रश्नों के हथौडे चलते ही रहते है।"[2] रूपक अलंकार के एक और उदाहरण भी 'प्रच्छन्न' उपन्यास में मिलता है-"गांधारी ने अपनी बात आगे बढ़ाई, अतः उसे अपना जीवनाश्व, विनाश के मार्ग पर सरपट दौडाए लिए जाने की अनुमति नहीं दे सकती।"[3]

विदुर की मानसिक दशा उपन्यास में इसप्रकार चित्रित किया गया है कि विदुर का मन जैसे किसी सागर में डुबकियाँ लगा-लगाकर किसी अमूल्य रत्न की खोज कर रहा था।"[4]

पांडव एवं कौरव में अलगाव बढ़ाने केलिए धृतराष्ट्र द्वारा भिन्न भिन्न रंगशाला का निर्माण करवाए जाते है। उपन्यास में इसका चित्रण इसप्रकार है कि "जिस गति से इस रंगशाला का

1. नरेन्द्र कोहली -धर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 125
2. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 10
3. नरेन्द्र कोहली -प्रच्छन्न (महासमर भाग - 7) पृ. 10
4. नरेन्द्र कोहली -कर्म (महासमर भाग -3) पृ. 121

निर्माण होता जा रहा था, मानो उतनी ही गति से उनके स्वप्न अपनी पूर्णता की ओर बढ़ रहे थे।"[1]

5.2.3.3 'महासमर' में श्ब्दशक्तियों-अभिधा, लक्षण, एवं व्यंजना का पयोग

शब्द और अर्थ की आपसी मेल-जोल अटूट होती है। शब्द और अर्थ के अटूट संबंध को जिस शक्ति द्वारा जाना जा सकता है, उसे ही शब्द-शक्ति द्वारा जाना जा सकता है, उसे ही शब्द-शक्ति कहते हैं अथवा शब्दों के अर्थ को समझने में सहायक शक्ति ही 'शब्द-शक्ति' कहलाती है।

सामान्यताः शब्द की तीन शक्तियों को ही स्वीकार किया गया है। 1. अभिधा 2. लक्षणा तथा 3. व्यंजना। 'महासमर' में इन शब्द शक्तियों का प्रयोग सहज रूप में दृष्टिगोचर होता है।

वाक्य या शब्द के सामान्य अर्थ को अभिधा कहते है। अभिधा शक्ति के द्वारा शब्दों के मुख्यार्थ अथवा संकलित अर्थ का आभास मिलता है। 'महासमर' में अभिधा शक्ति केलिए अनेक उदाहरण पायी जाती है। मनुष्य की कामनाओं के बारे में कोहलीजी ने 'बंधन' उपन्यास में इसप्रकार व्यक्त किया है कि "मनुष्य अपनी आकांक्षा की तीव्रता में भूल जाता है कि उसका हित किसमें है।

1. नरेन्द्र कोहली -अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 244

वह नहीं जानता कि जिस इच्छा की पूर्ति केलिए वह सिर झुकाए वनैले सुअर के समान दौड़ लगा रहा है, उस इच्छा की पूर्ति उसे कितना सुख देगी और कितना दुःख।"[1] एक और उदाहरण देख सकते हैं। क्रोध के बारे में 'अधिकार' उपन्यास में इसप्रकार बताया गया है "क्रोध क्रोध अन्याय के विरुद्ध होता है। अन्याय का दमन करने केलिए उससे घृणा की जाती है, इसलिए मनुष्य को अपने मन में अन्याय के प्रति घृणा की जाती है, इसलिए मनुष्य को अपने मन में अन्याय के प्रति घृणा को स्थान देना चाहिए। सायास घृणा का पोषण करना चाहिए।"[2]

एक और उदाहरण है - "वायु की आवश्यकता हमें हर क्षण रहती है, और वह हर क्षण में उपलब्ध भी है; किंतु उसी आवश्यकता का हमें अनुभव नहीं होता, अतः हम उसे प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करते। जल उपलब्ध होता है, किंतु उसकी आवश्यकता का अनुभव होने पर ही हम सरिता के तट पर जाते है।"[3] इसी तरह कोहलीजी ने अभिधा शक्ति का प्रयोग कर 'महासमर' को समृद्ध बना दिया है।

जो शब्द शक्ति के मुखार्थ को दबाकर किसी अन्य अर्थ को व्यक्त करती है, उसे लक्षण कहते है। 'महासमर' में अनेक जगह

1. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 28
2. नरेन्द्र कोहली -अधिकार (महासमर भाग - 2) पृ. 353
3. नरेन्द्र कोहली -अंतराल (महासमर भाग - 5) पृ. 366

लक्षण शक्ति हमें तो दृष्टिगोचर है।

निर्बंध' नामक उपन्यास में कोहली द्वारा प्रयुक्त लक्षण शब्द शक्ति का उदाहरण इसप्रकार है - "राजनीति नहीं समझते थे मूर्ख। नहीं जानते थे कि राजनीति में वचन और आश्वासन देते समय भी यह सबको ज्ञात होता है कि उनका पालन नहीं किया जाएगा।"[1]

'अंतराल' नामक उपन्यास में लक्षणा शक्ति के प्रयोग का उदाहरण है - "कीचड में विलबिलाते एक कीड़े और स्वच्छ वायुमंडल में जीनेवाले एक जीव में कोई अंतर तो होगा।"[1] 'निर्बंध' उपन्यास से लिया गया एक और उदाहरण ध्यातव्य है - "तुम अपने मुख में विष लेकर अमृत के सागर में भी तैरोगे तो उस अमृत का तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। दूसरी ओर, यदि मुख में अमृत का एक घूँट भी हो तो विष का सागर सुरक्षित रहकर तैरा जा सकता है।"[2] इस प्रसंग में ऋषि वेदव्यास द्वारा धृतराष्ट्र को उपदेश देते हैं कि पांडवों को पूरे दिल से प्यार करो। उसे प्यार करने में मन में कोई शंका न प्रकट करे।

इसी प्रकार लक्षण शब्द शक्ति के द्वारा 'महासमर' को मनोरम बना दिया गया है।

---

1. नरेन्द्र कोहली -अंतराल (महासमर भाग - 4) पृ. 163
2. नरेन्द्र कोहली -निर्बंध (महासमर भाग - 5) पृ. 163

जब वाच्यार्थ या लक्षणार्थ के अभाव में अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, तब वहाँ व्यंजना शक्ति मानी जाती है। इस शक्ति से जो अर्थ संकेतित होता है, उसे व्यंग्यार्थ कहते हैं।

कोहलीजी के उपन्यासों में ऐसे अनेक व्यंग्य कथन देखे जा सकते हैं, जो युगीन परिवेश की विसंगतियों और विद्रूपताओं को बेनकाब करने में समर्थ हुए है। पांडव कृष्ण के साथ खाण्डवप्रस्थ में अपना नया नगर और राज्य स्थापित करने आते हैं तब वहाँ का एक ग्रामीण वृद्ध कुरु-शासन की घोर अराजकता और व्यवस्था हीनता पर व्यंग्य करता है। "पर महाराज! यहाँ तो न कोई शासन है, न राजपुरुष। पर तो मैं अपने जीवन में पहली बार सुन रहा हूँ कि हम किसी राजा की प्रजा है।"[1] व्यंग्य नरेन्द्र कोहली की उपन्यास-कला की एक विशेष भंगिमा है।

5.2.23.4 'महासमर' में प्रतीकों का प्रयोग

विशिष्ट अर्थ संदर्भ को व्यंजित करने केलिए भाषा में प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। साहित्यकार को जब प्रतीत होता है कि वह अपने अभिप्रेत को सामान्य भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त नहीं कर पाएगा, तब वह कोई अन्य सशक्त माध्यम खोजता है। ऐसी स्थिति में उसके सामने सबसे प्रभावशाली माध्यम के रूप में

1. नरेन्द्र कोहली -धर्म (महासमर भाग -4) पृ. 16

उभरकर आता है प्रतीक। इसमें रचनाकार किसी एक वस्तु, चीज़ या तथ्य-विशेष को प्रतीक के रूप में सामने रखकर अपनी बात व्यक्त करता है। कथ्य को अधिकाधिक प्रभावात्मक बनाने केलिए उपन्यासकार अनेक प्रतीकों का सहारा लेता है। प्रतीकों का यह प्रयोग पूर्णतः लेखक की प्रतिभा पर निर्भर है। नरेन्द्र कोहली ने 'महासमर' में यथावश्यक प्रतीकात्मक भाषा को अपनाया है। इसके कुछ उदाहरण हैं - "पर तू इस असहाय दासराज के घर से विदा होगी इसलिए स्वयंवर नहीं हो सकता। हम तो मछली बेचनेवाले हैं बेटी। अपनी ओर से तो प्रयत्न करेंगगे ही कि मछली महँगी-से-महँगी बिके। पर बेचनी तो उसी भाव पडेगी, जिस भाव का ग्राहक मिलेगा। मछली का भाव वही होता है बेटी! जिस भाव उसे ग्राहक खरीद ले....।"[1] दासराज राजा शान्तनु को अपनी पुत्री सत्यवती को सौंपने से पहले अधिक से अधिक कुछ प्राप्त कर लेना चाहता है। धन और वैभव दासराज को अपनी पुत्री से भी प्यारा है। इस वृत्ति को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने केलिए कोहलीजी ने 'मछली' के प्रतीक का उपयोग किया है।

'प्रच्छन्न' शकुनी की चरित्र विशेषता प्रच्छन्न' उपन्यास में इसप्रकार बताए गए हैं कि "शकुनी की दृष्टि में एक दृश्य जन्म ले रहा था... एक बालक एक सर्प को ढेला मारता है। सर्प अपने घाव

1. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 45-46

की पीडा से तडपता है। बालक उसकी पीड़ा देख-देखकर प्रसन्न होता है। थोडी देर में सर्प अपनी पीड़ा से निढ़ाल होकर अपना सिर टेक देता है.. वह एक छड़ी लेकर सर्प को उसाता है, उसे कोंचता है, उसके घावों को अपनी छड़ी से कुरेदता है, छीलता है... और सर्प अपनी असह्य पीडा में भी अपना सिर उठा लेता है.....सर्प क्रोध में उसे दंशा मारता है। बालक सर्प विष से तड़प-तड़पकर मर जाता है, और सर्प, सिर में लगे अपने घाव से।"[1] यहाँ कोहलीजी ने 'सर्प' और 'बालक' को प्रतीक बनाकर शकुनी की मानसिक स्थिति को बड़ी गहराई के साथ स्पष्ट कर दिया है।

''क्षमा के बारह अंग है और तीन सौ साठ अरे है। उस काल चक्र के पूरा होने में तीस अरों की ही तो कमी है। कालचक्र पूरा होते ही सबको उनका मनभावन मिल जाएगा। कालचक्र पूर्ण होने तक तुम भी क्षमा का दान करो।"[2] यहाँ प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से कंक (युधिष्ठिर) द्रौपदी को सूचित करता है कि बारह वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास का समय पूरा होने में सिर्फ तीन दिन शेष हैं, अतः थोडा धैर्य धारण करो।

इस तरह कोहलीजी ने 'महासमर' में अनेक स्थानों पर प्रतीकात्मक भाषा-प्रयोग से अपने अभिप्रेत को अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने का सफल प्रयत्न किया है।

1. नरेन्द्र कोहली -प्रच्छन्न (महासमर भाग - 6) पृ. 15-16
2. नरेन्द्र कोहली -प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 462

5.2.3.5 'महासमर' मं बिंबों का प्रयोग

सामान्यतः 'बिंब' का अर्थ है - शब्द चित्र। साहित्यकार किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का ऐसा चित्रण करता है कि पाठक के मन में उसका सजीव और स्पष्ट चित्र उभरता है।

'महासमर' में अनेक स्थलों पर कोहलीजी ने बिंब-विधायनी भाषा को लक्षित किया है। एक एक वाक्य एक एक चित्र जैसा है, जो उपन्यास को जीवंत कर दे हैं। उदाहरण केलिए 'प्रच्छन्न' उपन्यास का यह प्रसंग देखा जाए अज्ञातवास के दौरान द्रौपदी जब सैरंध्री बनकर राणी सुदेष्णा की सेवा करती है तब सुदेष्णा उसका रूप सौन्दर्य देखकर मुग्ध हो जाती है। "राणी की दृष्टि कह रही थी कि यह कोई साधारण नारी नहीं थी। उसका रूप असाधारण था। उसके वस्त्र इस समय अवश्य मलिन थे। केश भी वेणीबद्ध नहीं थे। किंतु कैसे केश थे वे। किसी भी स्त्री को सहज ही ईर्ष्या होगी उसके इन केशों से। घुटनों तक लंबे और लहराते हुए ऐसे सुन्दर केश, कि कोई भी स्त्री उसे देखते ही रह जाए और पुरुष का मन उसमें बँध-बँध जाए। अमावास्या से धने काले केश। अभी तो इस स्त्री ने अपना सारा वेश मलिन बना रखा था। किंतु कौन नहीं देख सकता था कि नील कमल सा उसका वर्ण था।"[1] सैरंध्री के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कोहलीजी ने अँखों के सामने उसका चित्र उपस्थित कर दिया है।

1. नरेन्द्र कोहली -प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 325

इसी प्रकार 'बंधन' उपन्यास का यह उदाहरण दृष्टव्य है "वह एक पुरुष की दृष्टि थी, जो नारी के सौन्दर्य के भाव से दीप्त थी..... दृष्टि आकर सत्यवती की आँखों पर टिकी। सत्यवती की अँखें झुक गयी । वह एकाग्र होकर यमुना के जल को ताक रही थी, पर इस तथ्य के प्रति पूरी तरह सचेत थी कि युवक तपस्वी की दृष्टि ने अब संकोच छोड़ दिया है। वह ढीठ हो गयी है।... पराशर की दृष्टि सत्यवती की पलकों पर से जैसे फिसलकर गिरी और उसका आवरण क्षत हो गया। इस आवरण के भीतर सिमटे तरल पदार्थों को अब मर्यादित रखना कठिन था। वह सत्यवती के पूरे चेहरे पर फैल गया... वह सत्यवती की ग्रीवा से होता हुआ उसके कन्धों पर थोड़ी देर टिका और फिर उसके सारे शरीर पर फैल गया, पराशर की दृष्टि जैसे देखती नहीं थी, छूती थी। वह जहाँ से होकर बढ़ती थी, जैसे रोम-रोम सहला जाती थी। सत्यवती का शरीर थर-थर कांप रहा था।"[1] यहाँ कोहलीजी ने नारी -सौन्दर्य पर मुग्ध पुरुष की सम्मोहन दृष्टि को शब्दों में बाँधकर इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वह सघन भावानुभूति मूर्त हो उठती है।

5.3 'महासमर' में प्रयुक्त शैलियाँ

प्रत्येक कलाकार अपने कथ्य के अनुरूप एक नई भाषा और शैली की तलाश करता है। शैली का संबंध अभिव्यक्ति से नहीं,

1. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 49

अभिव्यक्ति के प्रकार से है। डॉ. विवेकी राय के अनुसार "शैली ही एक ऐसा तत्व है जो रचनाकार के वैशिष्ट्य का उद्‌घोष करता है। विषय वस्तु को जिन प्रणालियों में से तथा जिन साधनों में से प्रस्तुत करने का प्रयत्न होता है, उन सबका समावेश शैली तत्व में हो जाता है।"[1] अर्थात् लेखक की अभिव्यक्ति की विशेष पद्धति शैली के माध्यम से ही निर्मित होती है।

उपन्यास की भाषा को वैविध्यपूर्ण बनाने में शैली का विशेष योगदान है। प्रत्येक लेखक अपनी अलग शैली होती है। अतः दूसरे शब्द में कहा जा सकता है कि शैली में रचनाकार का व्यक्तित्व और मौलिकता निर्भर है। शैलियों के प्रयोग से कृति में रोचकता, सरसता, सरलता, सजीवता आ जाते हैं।

इतिहास या पुराण-आधारित उपन्यासों में एक ओर अतीतकालीन परिवेश को जीवन्त बनाना ज़रूरी होता है तो दूसरी तरफ युगीन यथार्थ को अभिव्यंजित करना आवश्यक बन जाता है। अतः ऐसे उपन्यासों में रचनाकार को शिल्पगत सजगता में दूसरे दायित्व का निर्वाह करना पडता है।

'महासमर' उपन्यास में कोहलीजी की भाषिक शैली के ऐसे अनेक रूप मिलते हैं जिनसे उनकी भाषा कुशलता का परिचय हमें

1. डॉ. विवेकी राय -नरेन्द्र कोहलीः अप्रतिम कथा यात्री - पृ. 50

प्राप्त होता है। 'महासमर' में कोहलीजी ने अनेक शैलियों के सुन्दर प्रयोग से भाषा को वैशिष्ट्य प्रदान किया है। 'महासमर' में नरेन्द्र कोहलीजी ने जिन शैलियों का विनियोग किया है उनका विवेचन यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है।

जब कोई रचनाकार सीधी-सरल भाषा में विभिन्न वस्तुओं, पात्रों, दृश्यों तथा पदार्थों का चित्रण तटस्थता के साथ करता है तो यह वर्णनात्मक शैली कही जाएगी। उपन्यास की विविध शैलियों में परंपरागत और सबसे प्रचलित वर्णनात्मक शैली ही है। अन्य पुरुष के रूप में कथा को विस्तार देता है। वर्णनात्मक शैली में घटनाओं, परिस्थितियों, पात्रों की मनःस्थितियों आदि का वर्णन होता है। कोहलीजी ने अपने उपन्यासों में इस शैली का भरसक प्रयोग किया है।

वर्णनात्मक शैली के कुछ उदाहरण यहां पर प्रस्तुत है - "अधिकार' नामक उपन्यास में एक प्रसंग इस प्रकार है "विदुर का वर्ण साँवला है। ललाट प्रशस्त था। आँखें छोटी थीं, किंतु भँवें पर्याप्त सघन थी। नासिका उठी हुई किंतु पर्याप्त स्थूल थी। वह किसी भी प्रकार सुन्दर नहीं था; किंतु उसके आनन पर करुणा का भाव था। वह करुणा उसके प्रति आत्मीयता जगाती थी। विदुर का व्यक्तित्व शुद्ध और सरल था। सर्वथा ऋजु! उसमें कहीं कोई

दुराव अथवा जटिलता नहीं थी। वह भीतर-बाहर से एक था। न किसी के प्रति झूठी सहानुभूति जताता था, न किसी की झूठी प्रशंसा करता था। यदि उसे किसी षड्यंत्र का आभास मिला है, और वह उसके प्रति कुंति को सावधान कर रहा है, तो कुंती को उसका विश्वास करना चाहिए और सावदान हो जाना चाहिए।"[1] कुंती की मनःस्थिति की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत विदुर का रूप चित्रण और उनकी कार्यदक्षता का वर्णन कर देना, लेखक की कला-दक्षता का परिचायक है।

व्यक्ति और समाज के बीच संबंध को कोहलीजी ने इसप्रकार व्यक्त किया है कि "गंगाद्वार से चले हुए अर्जुन को कई मास हो गए थे। अर्जुन ने तभी पाया था कि व्यक्ति नगर में रहे अथवा वन में, गृहस्थों के साथ रहे अथवा संन्यास के साथ-वह एक प्रकार का सामाजिक जीवन ही जीता है। बस समाज का रूप बदल जाता है। व्यक्ति उस समाज की सामाजिकता में उलझता जाता है। और उसी में अपना विकास चाहता है। बाहर की घटनाएँ तब भी प्रमुख रहती है, जिनमें व्यस्त रह, वह अपनी आत्मा की पुकार नहीं सुन पाता। तब भी वह छोटे-छोटे सांसारिक प्रश्नों से परेशान रहता है, छोटी-मोटी व्यवस्थाओं की व्यस्तताओं में स्वयं को खो देता है।"[2] इस प्रकार उपन्यास के कई प्रसंगों में वर्णनात्मक शैली को अपनाया गया है।

1. नरेन्द्र कोहली -अधिकार (महासमर भाग -2) पृ. 23
2. नरेन्द्र कोहली - धर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 109

व्याख्यात्मक शैली में किसी विचार या घटनाओं की विस्तृत व्याख्या दी जाती है। कहानी और उपन्यास में इस शैली का अधिक प्रयोग देखने को मिलता है। उदाहरण केलिए कोहलीजी 'बंधन' उपन्यास में भीष्म (देवव्रत) का बाल्यकाल इसप्रकार चित्रित करते हैं - "देवव्रत की आँखों के सामने अपना शैशव घूम गया। पिता को छोड़कर माता अलग हो गयी थी। इस विलगाव के कारण उन दोनों में से किसको कितनी पीड़ा हुई, यह देवव्रत नहीं जानते-पर स्वयं अपनी पीड़ा को वे कभी नहीं भूल पाए। प्रत्येक बालक के माता-पिता दोनों होते हैं - उनके माता-पिता होकर भी नहीं थे। देवव्रत ने सदा यही पाया था कि न माँ सहज थीं, न पिता। माँ चाहती थी कि देवव्रत पिता के पास रहे ताकि पुरुकुल के योग्य उनका लालन-पालन हो और पिता कुछ इतने उद्‌भ्रान्त थे कि उन्हें ध्यान ही नहीं था उनका एक पुत्र भी है। पत्नी से वंचित होने की पीड़ा इतनी प्रबल थी कि उन्होंने कभी सोचा ही नहीं कि अपने एकमात्र पुत्र को वे कितना वंचित कर रहे हैं। देवव्रत का शैशव, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, तरुणाई-वय के ये सारे खण्ड विभिन्न ऋषियों के साथ उनके आश्रमों के कटोर अनुशासन में कट गए। तपस्वी गुरुओं के कटोर अनुशासन से निबद्ध कर्तव्यमिश्रित स्नेह उन्हें बहुत मिला, किंतु माता-पिता का सर्वक्षमाशील वात्सल्य...।"[1] कोहलीजी यहाँ देवव्रत की बाल्यावस्था की ओर हमारा ध्यान

1. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 7, 8

आकर्षित करते हैं। साथ ही वर्तमान पारिवारिक विघटन जैसी ज्वलंत समस्या को भी हमारे सामने रखते हैं। कोहलीजी ने यहाँ व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग कर पाठक के लिए उनकी बातें ग्राह्य बना दिया है।

दो या अनेक पात्रों के बीच हुई बातचीत के माध्यम से कथा के प्रस्तुत करना वार्तालाप या संवादशैली है। संवादवाली शैली अपनाने से प्रसंग में रोचकता आती है। 'महासमर' में अनेक प्रसंगों में संवादशैली का प्रयोग हुआ है। 'प्रच्छन्न' उपन्यास के अंतिम भाग में अज्ञातवास के दौरान सैरंध्री (द्रौपदी) पर किए अत्याचारों का उत्तरदायित्व सिर्फ कीचक पर डालते हुए कंक (युधिष्ठिर) राजा विराट से बातें करता है - "कंक ने कहा, "राम के सौन्दर्य को देखकर यदि शूर्पणखा के मन में वासना जागी थी, तो दोष राम का था अथवा शूर्पणखा का।"

"निश्चित रूप से शूर्पणखा का।" राजा बोले

"सीता के रूप को देखकर रावण के मन में वासना जागी तो दोष किसका था-सीता के सौन्दर्य का अथवा रावण की वासना का?"

"रावण की वासना का।"

यदि सैरंध्री के सौन्दर्य को देखकर कीचक के मन में वासना जागे, तो दोष किसका है- सैरंध्री का, अथवा कीचक का?"

राजा मौन बैठे रह गए।

"यहाँ भी दोष कीचक का ही है महाराज!" कंक हँसे, 'विराटनगर में सत्य का रूप बदल तो नहीं सकता न।"

"सत्य कहते हो कंक !" राजा बोले।"[1]

इस शैली के अन्य उदाहरण दृष्टव्य हैं - विदुर का हस्तिनापुर से निष्कासन तथा उससे प्रसन्न धृतराष्ट्र और दुर्योधन के कलुषित मन को संवादों के माध्यम से अभिव्यक्ति देने में कोहलीजी सफल हुए है- "सुना है कि विदुर, हस्तिनापुर छोड़कर कहीं चला गया है।"

"हाँ पिताजी! वह अब हस्तिनापुर में नही है।"

"उसका परिवार?"

"परिवार यही है। परिवार को लेकर कहाँ जाता?"

"स्वयं कहां गया है?"

"उन्हीं कगले पाण्डवों के पास।" दुर्योधन हसा,

"मेरे गुप्तचरों ने सूचना दी है कि वह उनके साथ, वन का घास-फूस और कंद-मूल खा रहा है। एक कुटिया बना दी है

1. नरेन्द्र कोहली - प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 396, 397

उन्होंने। उसी में रह रहा है और उस धौम्य से ज्ञान चर्चा कर रहा है।"

'पांडव कहाँ है ?"

"काम्यक वन में।"[1]

उपन्यास में आए हुए अनेक संवाद पात्रों की मनःस्थिति का चित्रण तो करते ही हैं साथ ही अनेक समस्याओं का उद्‌घाटन संवादों द्वारा स्वतः हो जाता है। कोहलीजी के संवादों की विशेषताएँ उनमें निहित पात्रानुकूलता तथा सरलता है।

साहित्यकार जब अपने पात्रों की मनःस्थिति को विश्लेषित करता है तब उस शैली को मनोविश्लेषण शैली कहा जाता है। इस शैली का प्रयोग उपन्यास विधा में सविशेष दिखाई देता है। उपन्यास के विस्तृत फलक को देखते हुए इस शैली का प्रयोग स्वाभाविक भी है और अपेक्षित भी। रचनाकार पात्रों की मनःस्थिति को विश्लेषित कर अपेक्षित परिवेश की सृष्टि करता है, साथ ही साथ उससे पात्रों की विचारधारा एवं घटनाओं का संकेत भी मिल जाता है। नरेन्द्र कोहली ने 'महासमर' में अनेक पात्रों की मनःस्थिति को विश्लेषित कर अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास किया है।

---

1. नरेन्द्र कोहली -अंतराल (महासमर भाग -5) पृ. 53-54

'महासमर' का पहला भाग 'बंधन' उपन्यास में कोहलीजी ने अनेक स्थलों पर मनोविश्लेषण शैली का प्रयोग किया है। आखेट से लौटे उदास, निराश और व्यथित सम्राट् शान्तनु से मिलकर वापस आ रहे देवव्रत के मनोद्वन्द्व को कोहलीजी ने इसप्रकार चित्रित किया है - "किस द्विविधा में झोंक दिया पिता तुमने? देवव्रत भी जैसे एक देवव्रत न रहकर अनेक हो गए हैं। एक मन कुछ कहता है दूसरा कुछ और।.... पिता कामासक्त हो रहे हैं तो हो। विवाह करना चाहते हैं, करें। राज्य किसी और को देना चाहते हैं दे। देवव्रत को कोई आपत्ति नहीं है...देवव्रत को किसी का राज्य नहीं चाहिए। पर अधिकार की बात देवव्रत के मन में अधिक खटकती है। कौरव वंश का यह राज्य, देवव्रत का अधिकार है। वे इसके न्यायसिद्ध युवराज हैं। प्रजा उन्हें चाहती है। यदि देवव्रत से उनकी कोई निजी वस्तु माँगी जाती तो दान करने में उन्हें रंचमात्र भी कष्ट नहीं होता... किन्दु किसी की अनुचित-असामयिक इच्छा के लिए अपना न्यायोचित अधिकार छोड़ना धर्मसंगत है क्या?.... आज यदि देवव्रत अपना अधिकार नहीं छोड़ते तो आनेवाली प्रत्येक पीढ़ी उन्हें पितृ-द्रोही के रूप में धिक्कारेगी कि वे अपने पिता के सुख केलिए राज-सुख नहीं त्याग सके-राजसुख-देवव्रत का मन इस शब्द पर अटक गया। क्या होता राजसुख? पिता चक्रवर्ती सम्राट हैं। राज्य में उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई एक

तिनका नहीं तोड़ सकता पर क्या वे सुखी है? चक्रवर्ती सम्राट एक सामान्य युवती का अनुग्रह पाने केलिए हाथ-पैर पटक रहा है। कहाँ है राजसुख? ऐसा ही सुख पाने केलिए पिता पहले भी तड़पे होंगे, पर कोई सुख मिला? पिछले अनेक वर्षों से उस सुख से वंचित होकर तड़पते हुए तो उन्हें देवव्रत देख रहे है। किसी बुद्धि पायी है मनुष्य ने?"[1] देवव्रत के मनोद्वन्द्व को निरूपित करने केलिए कोहलीजी ने रोचक, सरस, प्रवाहमयी, भाषा का प्रयोग किया है। कहीं भी कृत्रिमता या असम्बद्धता दिखाई नहीं पड़ती है।

कुंती के द्वन्द्वमयी मनोचिंतन को भी 'बंधन' उपन्यास में कोहलीजी ने व्यक्त किया है। प्रथम रात्रि में पांडु द्वारा कुंती का तिरस्कार हुआ, जिस कारण उसके क्रोध की सीमा न रही, किंतु फिर अंत में विजय उसके विवेक की हुई "कुंती बड़ी देर तक बैठी हुई मन ही मन फुँकती रही.... पति के विरुद्ध मन ही मन आक्रोश का वेग आकाश छुने लगा, तो कुंती को लगा कि वह और ऊपर न जाकर क्षितिज की ओर झुकने लगा है.. पति से रुष्ट होकर क्या होगा? वह गंगा तो नहीं है कि शान्तनु को छोड़कर चली जाए और फिर कहीं उसकी चर्चा भी नहो। पांडु को छोड़ जाएगी तो जाएगी कहाँ?"[2] कुंती ने हस्तिनापुर के सम्राट् पांडु का हर स्थिति में साथ दिया। किसी भी प्रकार उसने उसका अनादर न होने दिया। यहां

1. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग - 1) पृ. 27
2. नरेन्द्र कोहली -बंधन (महासमर भाग -1) पृ. 321

मनोविश्लेषण शैली के माध्यम से पात्र-विशेष की विचार शृंखला को अंकित किया गया है।

इस प्रकार विभिन्न पात्रों की भिन्न-भिन्न मनःस्थितियों और मनोद्वन्द्व को चित्रित करने में कोहलीजी की भाषा और शैली बहुत सफल सिद्ध हुए है।

समास शैली में नये-तुले शब्दों में किसी गहन तथ्य, स्थिति की प्रस्तुति, दार्शनिक अर्थ की अभिव्यक्ति आदि निहित रहती है। 'महासमर' के भाग-7 'प्रच्छन्न' उपन्यास में महर्षि व्यस द्वारा जीवन के स्वरूप का वर्णन समास शैली का उदाहरण है:- "वस्तुतः जीवन ही बीहड़ यात्रा है पुत्र! कैसे-कैसे उतार-चढ़ाव आते हैं। यात्री तो वही है, जो निरंतर ऊपर चढ़ता जाए। कहीं पतित न हो। कहीं स्खलित न हो। स्वयं ऊपर चढ़ने केलिए किसी और को धक्का न दे। स्वयं आगे बढ़े और ऐसा मार्ग बनाए, जिससे अन्य लोग भी अपनी चढ़ाई चढ़ सके।"[1] उपन्यास में समस्त शैली के बहुत सारे उदाहरण दृष्टव्य है। इसीसे उपन्यास में रोचकता भी मिलती हैं।

समास शैली के विपरीत व्यास शैली में तथ्य का विस्तर से

---

1. नरेन्द्र कोहली -प्रच्छन्न (महासमर भाग -6) पृ. 332

विवेचन-विश्लेषण होता है। 'प्रच्छन्न' उपन्यास में अर्जुन बृहन्नला रूप में शिष्या उत्तरा के समक्ष निश्चित लक्ष्य के समक्ष आनेवाली कठिनाइयों तथा सात्विक आचरण की महत्ता बताते हुए कहते है: बृहन्नला ने कहा "एक बात और समझ लो। किसी भी गंतव्य तक पहुँचने के अनेक मार्ग होते है; किंतु प्रत्येक मार्ग स्वच्छ और पवित्र नहीं होता। सात्विक, स्वच्छ तथा पवित्र मार्ग कष्टसाध्य भी होता है और सुदीर्घ भी; किंतु यात्रा सदा उसी मार्ग से करनी चाहिए। कला की साधना करनी है, तो अपनी आत्मा को कलुषित मत होने दो। मन को सदा स्वच्छ करते रहो। मन सात्विकक नहीं होगा तो कला से भी सांसारिक भोग ही मिलेगा, ईश्वर कदापि नहीं मिलेगा। अतः कला की साधना अपने चरित्र की भी साधना है। इसे कभी मत भूलना। स्वर को शुद्ध करो, तो मन को भी शुद्ध करो, आत्मा को भी शुद्ध करो, चरित्र को भी शुद्ध करो। 'महासमर' में समास एवं व्यास शैली के अनेक उदाहरण दृष्टव्य है।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, प्रश्नात्मक शैली में लेखक विभिन्न प्रश्नों का आयोजन करता है। 'प्रच्छन्न' उपन्यास में कृष्ण के ईश्वरीय व्यक्तित्व के बारे में विदुर यों ही कहते है "तुम यह भी पूछ सकती थी कि यदि कृष्ण ईश्वर है अथवा ईश्वर की शक्ति लेकर उत्पन्न हुए हैं, तो उनका जन्म कारागार में क्यों हुआ था?

जिसके गर्भ से स्वयं ईश्वर जन्म लेनेवाला था, उस माता को इतना कष्ट क्यों सहना पड़ा? उसकी इतनी संतानों का वध क्यों हुआ? पर भाभी! मूल प्रश्न तो यह है कि ईश्वर क्या सुख में ही बसता है?"[1] वास्तव में कोहलीजी यहाँ पाठक के मन के सारे प्रश्नों का समाधान विदुर के माध्यम से करना चाहते है।

प्रश्नात्मक शैली के एक और उदाहरण 'कर्म' उपन्यास में हमें देख सकते है। दुर्योधन युधिष्ठिर के साथ बुरी बर्ताव करने के बारे में युधिष्ठिर के मन में अनेक शंकाएँ आते है- "युधिष्ठिर ने स्वयं को बहुत संयत रखा था, किंतु फिर भी उसकी चेतना पर एक प्रकार की खिन्नता छा गयी थी। सभा-भवन से बाहर निकलते हुए वह सोच रहा था कि यद्यपि दुर्योधन आज तक उसका विरोध ही करता आया था, किंतु उससे भी इस प्रकार का विरोध कभी नहीं किया था। यह विरोध नहीं था, झगड़ा था। क्या उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार केवल इसलिए किया गया, क्योंकि उसके भाई उसके साथ नहीं थे? वह अकेला था और दुर्योधन अपने भाइयों और मित्रों के साथ उसपर भारी पड़ सकता था? क्या विचार-विमर्श में भी संख्या और शारीरिक बल का महत्व अधिक हो जाएगा? क्या बुद्धि, विवेक, न्याय और तर्क का कोई महत्व नहीं है? क्या कुरुओं की राजसभा में भी वन्य पशुओं के समान पशु-

---

1. नरेन्द्र कोहली -प्रच्छन्न (महासमर भाग - 4) पृ. 211

बल से ही निर्णय किया जाएगा? क्या वह इसलिए पराजित हो जाएगा, क्योंकि उसका विरोध करनेवाले संख्या में अधिक है? धर्म इसलिए त्याज्य हो जाएगा, क्योंकि वह कुछ महत्वपूर्ण लोगों की इच्छा के मार्ग में विघ्न उत्पन्न करता है?"...[1] प्रश्नात्मक शैली पाठक की जिज्ञासा को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

'महासमर' पौराणिक पृष्टभूमि पर आधारित उपन्यास है। इसलिए उपन्यास में पौराणिक कथा के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। अर्थात् उपन्यास की भाषा में एक-एक शब्द का चयन लेखक के गंभीर अध्ययन के अपूर्व सामार्थ्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

कोहलीजी ने 'महासमर' में परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया है। लेकिन यह ध्यान रखा गया है कि अतीत और वर्तमान में सामंजस्य हो सके। पौराणिक इतिवृत्त होते से कारण इसमें परिष्कृत और तत्सम शब्द प्रधान हो गए हैं। 'महासमर' की एक और विशेषता उसके पात्रानुकूल भाषा है। पाठक रचना को पढ़ते समय इस बात को महसूस करें कि प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा है। कोहलीजी ने पात्र और उनके भाव के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। इसीप्रकार वातावरण के अनुरूप अलंकृत और काव्यात्मक

1. नरेन्द्र कोहली -कर्म (महासमर भाग - 4) पृ. 26

भाषा का प्रयोग किया गया है। दृश्यों के चित्रण में, स्थितियों के अंकन में, पात्रों की मनोदशा की अभिव्यंजना में भाषा में अलंकारिकता दृष्टिगोचर होती है। नरेन्द्र कोहली भाषा को लेकर अत्यंत सजग रहे हैं। प्रतीक, बिंब, उपमा से समृद्ध उसकी भाषा सरल होकर भी पर्याप्त प्रभावशाली है।

उपन्यास में शैली संबंधी विविध प्रयोग भी हुआ जिससे कथावस्तु के प्रस्तुतीकरण में अकर्षणीयता आ गई। हर एक रचनाकार की अपनी शैली होती है। कोहलीजी ने 'महासमर' में व्याख्यात्मक, वर्णनात्मक, सवादात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, प्रश्नात्मक जैसी शैलियों का प्रयोग किया है। उन्हेंने अपनी सहज, ललित, स्पष्ट शौली में पौराणिक कथा के ज़रिए समकालीन यथार्थ को प्रस्तुत किया है। कोहलीजी ने भिन्न-भिन्न प्रसंगों केलिए उसके अनुरूप शैलियाँ अपनायी है। शैली में वैविध्य, वर्णनात्मक स्थलों पर वर्णनात्मक, भावात्मक प्रसंगों पर भावात्मक शैली और व्याख्यात्मक स्थलों पर व्याख्यात्मक शैली पाई जाती है।

भाषा एवं शैली की दृष्टि से 'महासमर' एक सफल औपन्यासिक कृति है। भाषा सहज, सरल, स्वाभाविक तथा यथार्थ प्रतीत होती है। भाषा एवं शैली में निस्संदेह कोहलीजी को अत्यधित श्रम करना पड़ा है।

❖ ❖ ❖

उपसंहार

उपसंहार

'महाभारत' प्राचीन काल से ही भारतीय साहित्यकारों केलिए प्रेरणास्त्रोत रहा है। उसके कथाप्रसंगों के लेकर न जाने कितने काव्य, कितना नाटक, कितनी कथा कृतियाँ रची गई है। आज भी 'महाभारत' का महत्व कम नहीं हुआ है। इसका कारण यह है कि 'महाभारत' न केवल भारतीय जीवन का, अपितु मानव जीवन का विश्वकोश है।

'महाभारत' की इस समकालीन प्रासंगिकता को नज़र में रखते हुए नरेन्द्र कोहली ने 'महासमर' नाम से उपन्यास शृंखला की सृजन की। इसमें आठ उपन्यास हैं वे हैं 'बंधन', 'अधिकार', 'कर्म', 'धर्म', 'प्रच्छन्न', प्रत्यक्ष 'निर्बंध'। नरेन्द्र कोहली का 'महाभारत' पर आधारित उपन्यास शृंखला 'महासमर' का पहला खंड 'बंधन' सन् 1988 ई में और अंतिम खंड 'निर्बंध' सन् 2000 ई में प्रकाशित हुआ। इतनी बृहद उपन्यास शृंखला लिखकर नरेन्द्र कोहली जी ने अपने असीम धैर्य और अदम्य रचनाशीलता का परिचय तो दिया ही है, साथ ही आधुनिक पाठकों केलिए महाभारत को नवीन ढंग से प्रस्तुत कर दिया है। उपन्यास के रूप में 'महासमर' की सफलता किंचित् विवादास्पद भी हो, पर 'महाभारत' के आधुनिक

पाठ के रूप में इसका महत्व निर्विवाद है। पाठकों के बीच 'महासमर' का जैसा स्वागत हुआ, वह इसका प्रमाण है।

कोहलीजी के अनुसार मानवता के शाश्वत प्रश्नों का साक्षात्कार 'महासमर' का प्रतिपाद्य है। 'महाभारत' भारतीय संस्कृति एवं चिंतन की एक अमूल्य धरोहार है, इसमें कोई संदेह नहीं है। कोहलीजी के अनुसार 'महाभारत' में प्रतिपादित 'धर्म' का स्वरूप तो मानव जीवन का शाश्वत सत्य ही है, साथ ही मानवीय संबंधों से जुडे सत्य, जो थोडे बहुत परिवर्तन के साथ प्रत्येक युग में विद्यमान होते है, शाश्वत प्रश्न के रूप में स्वीकार किए जा सकते है। उदाहरण केलिए पति-पत्नी-पुत्र का त्रिकोणात्मक संबंध और उसकी जटिलता, जिसे शांतनु-गंगा-भीषम प्रसंग के रूप में उठाया गया है, आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना महाभारत के समय में था। इसप्रकार के अनेक प्रश्न 'महासमर' में उठाए गए है। 'महाभारत' की कथा मानवीय संबंधों के वैविध्य की दृष्टि से इतनी समृद्ध है कि उसकी संभावनाओं की सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती । नरेन्द्र कोहली ने 'महासमर' में उन संभावनाओं को सृजनात्मक रूप देने की कोशिश की है जिससे उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली है।

महाभारत पर आधारित नरेन्द्र कोहली के 'महासमर' नामक उपन्यास शृंखला में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक युग-चेतना

की किस सीमा तक अभिव्यक्ति हुई है, यही इस शोध-प्रबंध का मुख्य उद्देश रहा है। महाभारत की कथा भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहार है। नरेन्द्र कोहली ने उसे अपने उपन्यास का आधार बनाया है। 'महासमर' की कथा मनुष्य के उस अनवरत युद्ध की कथा है, जो उसे अपने बाहरी और भीतरी शत्रुओं के साथ निरंतर लडना पडता है। बाहर की अपेक्षा उसे अपने भीतर अधिक लडना पडता है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट, खोखली, स्वार्थी, नीतिविहीन और अवसरवादी राजनीति का सीधा असर भारतीय समाज पर पडा। स्वातंत्र्य-संग्राम के समय भारतीय प्रजा ने जो सपने देखे थे, वे धीर-धीरे टूटते गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के काफी वर्षों के बाद भी भारतीय समाज में व्याप्त वर्ग संघर्ष, मध्य एवं निम्नवर्गग का शोषण, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, नारी की दुर्दशा सामाजित मूल्यों का पतन एवं भ्रष्टाचार जैसी अनेकानेक समस्याओं का अंकन 'महासमर' में किया गया है। उपन्यासकार कोहलीजी ने पौराणिक घटनाओं और पात्रों का मिथक के रूप में प्रयोग कर आज की जटिल समस्याओं को अभिव्यक्त करने का कलात्मक प्रयत्न किया है। उन्होंने पौराणिक कथाओं को तार्किकता और मौलिकता का संस्पर्श देकर वर्तमान भारतीय समाज को उसकी

समग्र सुंदरता एवं कुरूपता के साथ जीवन्त कर दिखाने की भरसक कोशिश की है। हर युग में कोई न कोई युग-दृष्टा पुरुष जन्म लेता है जो युगीन समस्याओं को देखता-परखता है, प्रजा का ध्यान इस ओर आकर्षित करता है और इन्हें सुलझाने का प्रयत्न करता है।

सत्ता के मद में शासकों ने अपने अधिकारों का कहीं न कहीं थोडा-बहुत दुरुपयोग अवश्य किया है। सत्तालोलुपता, भ्रष्टाचार सत्ता एवं संपत्ति का दुरुपयोग, राजनीतिक षड्यंत्र जैसी अनेकानेक विसंगतियाँ आज भी देखी जा सकती है। महाभारतकालीन राजनीति में समकालीन राजनीति का कुछ और कुरुप दिखायी देती है। कोहलीजी ने प्राचीन भारत की राजनीति की विद्रूपताओं और विसंगतियों की अभिव्यक्ति से वर्तमान भारत की राजनीति की विकृतियों और विसंगतियों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।

साहित्य जनमानस की अन्तर्बाह्य प्रतिछवियों का प्रकाशन करनेवाला ज्ञान-राशि का संचित कोष है। इसलिए वह किसी देश या काल की संस्कृति के ज्ञान का सर्वाधिक विश्वस्त प्रामाणिक आधार होता है। विभिन्न संस्कृतियों में जन्मे, पढे-लिखे व्यक्तियों के रहन-सहन में जहाँ अंतर मिलेगा, वहीं उनके खान-पान में कम

विभिन्नता न होगी। कोहलीजी वे उपन्यासों में सांस्कृतिक विभिन्नता का यह रूप देखा जा सकता है। प्रत्येक संस्कृति में आचार-विचार और रीति-रिवाज़ आदि अपने होते है जो दूसरी संस्कृति से पृथक अस्तित्व रखते हुए भी सामान्य भाव-भूमि पर मानव कल्याण केलिए सतत् प्रयत्नशील होकर विश्व सस्कृति का निर्माण करता है। कोहलीजी ने 'महासमर' में संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को उजागर कर एक युग-विशेष को जीवंत कर दिखाया है। भारतीय संस्कृति में विभिन्न त्योहारों और उत्सवों का अपना विशिष्ट महत्व है। कोहलीजी ने 'महासमर' में पर्व-त्योहार तथा आमोद-प्रमोद के विभिन्न उपकरणों पर प्रकाश डाला है। कोहलीजी ने ग्रामीण संस्कृति पर प्रकाश डालते हुए 'महासमर' में यह बात स्पष्ट की है कि भारत की अधिकांश जनता ग्रामों में रहती है।

नरेन्द्र कोहली आधुनिक हिन्दी के एक प्रसिद्ध प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं। उन्होंने अपने युग की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि समस्याओं को पौराणिक घटनाओं एवं चरित्रों के माध्यम से उद्घाटित करते और सुलझाने का सार्थक प्रयत्न किया है। कोहलीजी की जीवन्त भाषा शैली ने अभिव्यक्ति को सफलता एवं सार्थकता प्रदान की है तो उनकी निजी शैली ने उसे आकर्षक बनाया है। विगत युगों के परिवेश को समग्रता के साथ स्वाभावित बनाने में

उनकी भाषा सफल सिद्ध हुई है। उनकी भाषा में पौराणिक परिवेश के अनुरूप संस्कृति की तत्सम और तद्भव शब्दावली का उन्मुक्त प्रयोग दिखाई देता है तो कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्दों की झलक भी मिलती है। उच्च वर्ग एवं मध्यवर्ग के पात्रों के संवादों में शिष्ट भाषा तथा निम्नजाति एवं ग्रामीण पात्रों के संवादों में बोलचाल की या प्रादेशिक भाषा का प्रयोग स्वाभाविक ही लगता है। प्रचलित मुहावरों और कहावतों का प्रयोग अभिव्यक्ति को सहज बनाता है। इसके अतिरिक्त कोहलीजी की भाषा में कवित्व, अलंकारिता, प्रतिकात्मकता, व्यंग्यात्मकता और बिंबात्मकता जैसी विशेषताएँ भी पायी जाती है। कोहलीजी ने अपने पौराणिक उपन्यासों में विभिन्न शैलियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है। पात्रों के आपसी वार्तालाप एवं विभिन्न दृश्यों को जीवन्त कर दिखाने में उनकी नाटकीय शैली प्रभावशाली दिखायी देती है। इसप्रकार नरेन्द्र कोहली हिन्दी साहित्य जगत् के प्रसिद्ध एवं अमर उपन्यासकार के रूप में हमारे सामने आते हैं।

नरेन्द्र कोहली बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उनकी साहित्यिक सामर्थ्य का उज्वल नमूना है 'महासमर'। 'महासमर' को भारतीय पाठकों के बीच इतना स्वागत और प्रेरणा मिली है कि उसकी एक एक घटना सभी के मन में बरकरार रहती है। कोहलीजी

की साहित्य कृतियाँ इतनी बहुमूल्य है कि एक एक कृति को लेकर शोध प्रबंध तैयार कर सकते हैं। व्यंग्य साहित्य, नाटक, कहानी, बाल साहित्य आदि साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी प्रतिभा हमें देखने को मिलती है। साहित्य के क्षेत्र में उनकी अमूल्य देन को नज़र में रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि उनकी साहित्य कृतियों के सही मायने में मूल्यांकन करने केलिए भविष्य में की कई आयामों में शोध कार्य होने की संभावना है।

परिशिष्ट

शोधार्थिनी का लेखक के साथ साक्षात्कार

❖ लेखन के प्रति आपका रुचि पहले-पहल कैसे हुआ ?

इस प्रश्न का उत्तर दे पाना बहुत मुश्किल है। बचपन से ही साहित्य के प्रति रुझान था। हमारे परिवार में मेरे दादा पुस्तकों के बहुत शौकीन थे। पितीश्री को पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की दूकान थी। लिखने का भी शौक था उनको। कहीं एकाध रचना छपी भी थी उनकी। मेरी बहन भी कविताएँ लिखती थी। बडे भाई को भी साहित्यिक क्षेत्र में दिलचस्पी थी। पर ये सभी लोग कुल मिलाकर अविकसित लेखक ही रहे मेरे कहने का मतलब है बचपन से ही मैं ने साहित्यिक वातावरण से परिचित थी।

❖ अपने उपन्यास, कहानी, नाटक और व्यंग्य ऐसे साहित्य के सभी विधाओं में तूलिका चलाई है। फिर भी आपकी प्रिय विधा कौन सी है ?

मुझे लगता है कि कहानी के लिए घटना एक महत्वपूर्ण पहलू है। व्यंग्य से आक्रोश की अभिव्यक्ति आसान है। पर उपन्यास इन दोनों को ही समेट लेता है। विधा का चुनाव भी क्या करना। जो चीज़ जिस तरह से मन में उभरती है उसी रूप में लिख जाती है। फिर भी सबसे प्रिय विधा उपन्यास ही है।

❖ आपके उपन्यासों में पौराणिक मूल्यों की व्याख्या कर रहे हैं उसकी प्रेरणा क्या रही?

वास्तव में पौराणिक मूल्यों की व्याख्या नहीं है यह। पौराणिक इतिवृत्त माध्यम मात्र है। अपनी बात इस माध्यम से कही गयी है। प्रेरणा तो अपने युग की घटनाएँ और समस्याएँ ही थी। उदाहरण में बांगलादेश की हत्याओं के दौरान भी मेरे जेहन में राम-कथा ही आयी। यानी जो मेरे मन में था, वह बिंब नहीं लगा। यानी एक ओर रावण है, ब्रह्म है, दुर्गा और शिव है, दूसरी ओर पिछडे हुए लोग है, और राम है।

❖ आपकी साहित्यिक रचनाओं के साथ परिचित होने के बाद मुझे वह महसूस हुआ कि व्यंग्य लेखन के प्रति आपको विशेष रुचि है?

व्यंग्य का काम है - विसंगति -चित्रण करके अपने माध्यम से प्रहार करना। व्यंग्य की तरफ आने केलिए सोचूँ तो राजीतिक व्यंग्य जो है, वह निश्चित ही राजनीतिक परिस्थितियों के कारण आएगा और जो सामाजिक व्यंग्य है वह आस-पास के जीवन से, सामाजिक विसंगतियों से होगा। विसंगतियों को देखकर लगता था, सिर फट जाएगा। व्यवस्था के विरुद्ध गंदी गालियाँ मन में निकाली थीं, जिन्हें हुबहू साहित्य नहीं स्वीकारता। मैं ने कई तरह

से इस कथा को लिखने की कोशिश की और कई पृष्ठ लिखकर फाड़े परंतु संतुष्ट नहीं हुआ।

❖ सबसे पहले तो आप यह बताइए कि राम-कथा पर उपन्यास लिखने का विचार आपके मन में कैसे आया?

रचना-प्रक्रिया तो बहुत लंबी होती है। उसे स्पष्ट करने केलिए तो काफी विस्तार से इसका विश्लेषण करना होगा। फिर भी, ऐसा है कि राम-कथा-विशेष रूप से वाल्मीकि की राम-कथा पढने के बाद मेरे मन में बहुत सारी बातें अपने समकालीन जीवन को लेकर उठी और मुझे लगा कि रामकथा की जो थीम है वह हमारे लिए बहुत समकालीन है। एक ओर धन वाले सत्तावाले, शारीरिक बलवाले योग है जो सत्ता रहे है बुद्धिजीवियों को, श्रमिकों को, जनजातियों को और पिछडे लोगों को। और उन सबको प्रश्रय दे रहा है। उस समय का सबसे बडा, सबसे धनी और सबसे सुसंगठित साम्राज्य, यानी रावण का साम्राज्य। और मेरे मन में बार-बार यह बात उठती थी कि राम को वन भेजा गया - पिता के आदेश के कारण वे गए था किसी और कारण से वे जाना चाहते थे - उस मौके को देखकर गए। ऐसी बातें मेरे मन में थी। लेकिन जैसा होता है, कोई एक विशेष घटना उसका कारण बन जाती है।

❖ भारत विभाजन के उथल-पुथल के वातावरण का आपके मन पर क्या प्रभाव पडा?

मैं ने इतना छोटा था कि उस स्थिति को प्रत्यक्ष नहीं देखा, हम लोग घर के अन्दर ही बन्द रहे। बाहर नारे लग हे थे। यह सच है कि मेरे उपन्यासों में कहीं कहीं उन परिस्थितियों और चरित्रों का वर्णन है, पर यह प्रभाव मैं ने बडों की चर्चा से ही ग्रहण किया है।

❖ आपके उपन्यासों में चित्रित रामकथा और महाभारत की कथाओं का मूलाधार क्या है ?

मेरी रामकथा का मूलाधार वाल्मीकी रामायण है और महाभारत का आधार तो खैर व्यास की महाभारत है। अन्य ग्रन्थों का प्रभाव मैं ने बहुत कम ग्रहण किया है।

❖ विवेकानंद के जीवन पर आधारित आपके उपन्यास 'तोडो, कारा तोडो' के बारे में कुछ बताइए।

विवेकानंदजी के कुछ गुणों ने मुझे बहुत गहरे तक प्रभावित किया। प्रारंभ में लगा सामग्री बहुत अधिक नहीं होगी। एक सन्यासी के जीवन में ऐसा हो भी क्या सकता है वह साधना करेगा और भाषण देगा। मैं उनके विषय में पढ़ता गया तो मुझे लगा कि इस व्यक्ति में गुणों, विचारों और कर्म की दृष्टि से बहुत कुछ है। मुझे

जितनी जानकारियाँ मिलती गयीं, उनके प्रति मेरा मोह बनता गया।

❖ इतना अधिक लेखन कार्य करने का राज क्या है?

मैं अधिक नहीं लिखता, पर नियमित लिखता हूँ। मेरे अंदर लिखने को इतना कुछ उबल रहा है कि यदि मैं दो-चार दिन नहीं लिख पाता तो व्यग्र हो उठता हूँ।

❖ लिखने के अतिरिक्त आपकी रुचियाँ क्या है ?

लिखने के साथ-साथ पढना भी मुझे अच्छा लगता है।

❖ अभी आप क्या लिख रहे है?

'तोडो कारा तोडो' का अगला भाग लिख रहा है। अब कुछ ही वर्ष इन्हीं में लग जाएंगे।

धन्यवाद

शोध छात्रा के प्रकाशित शोध लेख

1. नवजागरणकालीन उपन्यास 'देवरानी-जेठानी की कहानी' में स्त्री जागरण - अनुशीलन, जनवरी 2017
2. महाभारत पर आधारित उपन्यास 'महासमर' - अभिज्ञान (संपादक प्रोफ. डॉ. एन.जी देवकी) 2016
3. नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'महासमर' में अभिव्यक्त मानवाधिकार - एस.एस. वी कॉलेज - अइरापुरम 2015
4. 'महासमर' में अभिव्यक्त लोकपक्ष - अनुशीलन, 2014
5. परंपरा का मूल्यांकन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - अनुशीलन - 2013

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रपत्र प्रस्तुति

1. नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'महासमर' में अभिव्यक्त मानवाधिकार - एस.एस. वी कॉलेज आइरापुरम - अगस्त 2015

संदर्भ ग्रंथसूची

संदर्भ ग्रन्थसूची

आधार ग्रंथ

1. बंधन — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1984
2. अधिकार — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1986
3. कर्म — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1988
4. धर्म — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1992
5. अंतराल — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1994
6. प्रच्छन्न — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1996

7. प्रत्यक्ष — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1998

8. निर्बंध — नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2000

सहायक ग्रंथ

9. अशोक के फूल — आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2008

10. आधुनिक जीवन और पर्यावरण — दामोदर शर्मा हरिश्चन्द्र व्यास, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, सं. 2012

11 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास — डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2011

12. नारी चेतना के आयाम — अलका प्रकाश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2007

13. ब्रेक के बाद — सुधीश पचौरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006

14. संस्कृति की उत्तर कथा — शंभूनाथ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006

15. संस्कृति के चार अध्याय — रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2007

16. समकालीनता और साहित्य — राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2010

17. स्त्री विमर्श का लोक पक्ष — अनामिका, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2012

18. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास — डॉ. सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2003

19. नरेन्द्र कोहली ने कहा — कार्तिकेय कोहली
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली
सं. 1995

20. महाभारतकालीन समाज — वेददत्त अलंकार
लोकभारती प्रकाशन
नई दिल्ली
सं. 1988

21. पुराण और इतिहास — कौशिक उपाध्याय
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली
सं. 1999

23. पुराण और मिथक — मोहन भरद्वाज
राजकमल प्रकाशन
नई दिल्ली
सं. 2003

24. समकालीन हिन्दी उपन्यास — एन मोहनन
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली
सं. 2013

पत्र-पत्रिकाऐं

1. आलोचना - अक्तूबर - दिसंबर 2005
2. आलोचना - फरवरी - अप्रैल -2014
3. आलोचना - जनवरी - मार्च - 1999
4. वागर्थ - फरवरी 2010

5. वागर्थ - मार्च - 2013
6. वागर्थ - दिसंबर - 2015
7. हंस - अक्तूबर - 2003
8. वर्तमान साहित्य - नवंबर - 2000
9. वर्तमान साहित्य - दिसंबर - 2012
10. वाक् - जुलाई - सितंबर - 2012

मलयालम ग्रंथ

1. रन्डामूष़म - एम.टी वासुदेवन नायर
मातृभूमि बुक्स
एरणाकुलम
सं. 2006

2. इनि ञान उरन्ङट्टे - पी. बालकृष्णन
करेंट बुक्स
त्रिशूर
सं. 1997

मलयालम पत्रिकाएँ

1. मातृभूमि - 22 दिसंबर 2013
2. मातृभूमि - 16 नवंबर 2015
3. देशाभिमानी - 8 फरवरी - 2016

हेलन मेरी ए.जे
अषीक्कल
ऊरक्काडु
मलयिडम तुरुत्त पि.ओ
एरनाकुलम - 683 561
केरल

हेलन मेरी ए.जे का जन्म केरल राज्य के एरणाकुलम जिले के कोच्चिन में 22 फरवरी सन् 1990 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा एरणाकुलम जिले के सेन्ट. जोसफ हाइ स्कूल किषक्कम्बलम में हुई। बाद में उच्च शिक्षा केलिए सेन्ट. पीट्टर्स कॉलेज कोलनचेरी में भर्ती हुई और 2010 में हिन्दी में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की. 2013 में इसी विश्व विद्यालय से एम.फिल की उपाधि प्राप्त की। सन् 2013 सितंबर से कोच्चिन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में प्रोफसर डॉ. एन. जी. देवकी के निर्देशन में अनुसंधान का कार्य शुरु किया। 2016 नवंबर में यू.जी.सी. की नेट परीक्षा पास की। शोध कार्य के अध्ययन के दौरान एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध प्रपत्र प्रस्तुतीकरण के अवसर भी प्राप्त हुए। कोच्चिन विश्वविद्यालय की वार्षिक शोध पत्रिका अनुशीलन और प्रोफसर एन.जी. देवकी द्वारा संपादित 'अभिज्ञान' नामक पुस्तक में प्रपत्रों का प्रकाशन हुआ।